Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परिवर्तितं परिवर्द्धितं नवीनसंस्करणम्

सत्यं शिवं सुन्दरम्

"श्रीरतनगढ़ निवासी द्वादशमहानिबन्धकर्तृ स्वर्गीय पण्डित श्रीचतुर्थीलाल गौड़ स्मृतिग्रन्थमालायाः अष्टमं पुष्पम्"।

(८)

ॐ नमः शिवाय

माध्यन्दिन शाखीया

पारस्कर सूत्रानुसारेण

गाङ्गाधरी-

सुगम विवाह-पद्धतिः।

(विस्तृतटिप्पणी–भाषाविधि सहिता)

'श्रीराजस्थानराज्यान्तर्गत श्रीरतनगढ़निवासिना, गौड़वंशावतंसेन, वशिष्ठगोत्रोद्भवेन, शिवालोपाह्वेन, पण्डित श्रीकस्तूरीचन्द्र पौत्रेण, श्रीचतुर्थीलालात्मजेन **गंगाधर शर्मणा तामड़ायतेन** विपुल टिप्पण्यादिना भाषाटीकया च संयोज्य **परिवर्द्धिता संशोधिता च।'**

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

मो० : 9837019062
जुगल किशोर भीमसैन (बुकसेलर)
धार्मिक पुस्तकें, कर्म काण्ड पुस्तकें
धार्मिक फोटो, सीनरी आदि उपलब्ध हैं।
पल्टन बाजार, निकट कोतवाली, देहरादून।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संस्करण : जून २०२२, संवत् २०७९

मूल्य : १६० रुपये मात्र ।

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@bharatmail.co.in

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadas
Prop.: Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004
at their Shri Venkateshwar Press,
22, Chintamani Industrial Estate, Ramtekdi, Pune-411013.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ग्रन्थकर्ता

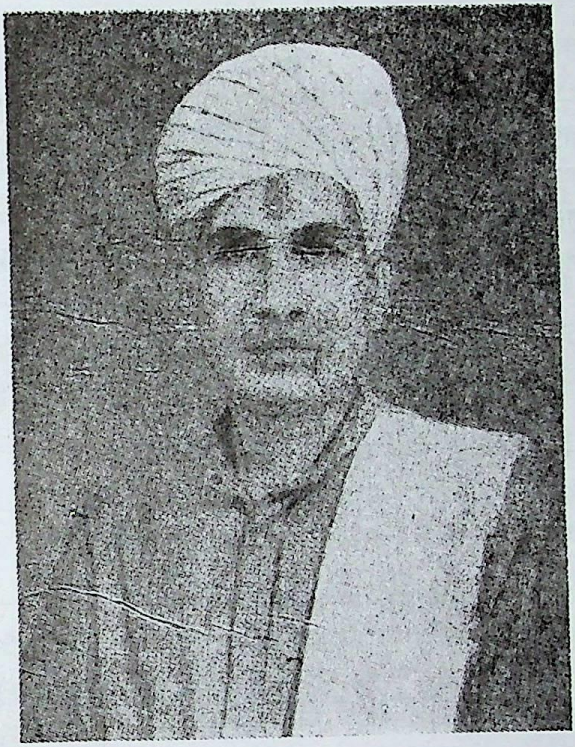

पण्डित गङ्गाधर शर्मा गौड़ कर्मकाण्ड विशारद

"भूयाद्वैदिकधर्मपालनपरः सत्कर्मकाण्डाम्बुधिः
शुद्धाचारविभूषणः श्रुतिधनः सौम्याकृतिर्बुद्धिमान् ।
जीर्णग्रन्थसमूहशोधनकलादक्षो वशिष्ठान्वया–
लंकारः शुभरत्नदुर्गवसतिर्गौडाख्यगंगाधरः" ॥ १ ॥

"साहित्यसेवानिरतोऽल्पभाषी सत्कर्मकाण्डाम्बुधिसेतुरेषः ।
स्मिताननो दुर्गुणजालमुक्तो धर्मप्रियोऽस्ति द्विजजातिहीरः" ॥ २ ॥

जन्मतिथि :–श्रावण शुक्ला १५ गुरुवार सं. १९७१ वि.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समर्पणम्

"श्रीरत्नदुर्गस्थ–सुप्रसिद्धविदुषां, कर्मठाग्रगण्यानां, याज्ञिकभूर्द्धन्यानां, कर्मकाण्ड-विशारदानां, कर्मकाण्डाचार्य–कर्मकाण्डकोविद–कर्मकाण्ड भास्करश्रीतभूषणेत्युपाधि विभ षितानां, द्वादशमहानिबन्धकर्तॄणां, प्रातः स्मरणीयानां, परमपूज्यानां पितृचरणानां, श्रीमतां **स्वर्गीय पण्डित श्री चतुर्थीलाल शर्म्मगौड़ानां परमपवित्र** चरणकमलेषु पुण्यस्मृतौ सादरं समर्प्यते।"

"त्वदीयं वस्तु हे तात !
तुभ्यमेव समर्पये।"

"पिता स्वर्गः पिता धर्मः पिता हि परमं तपः।
पितरि [illegible]नापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवताः" ॥

भवदीयात्मजः–
गङ्गाधर शर्म्मा गौड़ तामड़ायतः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नम्र निवेदन

आज के इस तथा कथित प्रगतिशील युगमें भी द्विजों में **"उपनयनसंस्कार"** तथा – **"विवाहसंस्कार"** प्रायः विधिपूर्वक एवं शास्त्रविहित पद्धति से होते हैं। उक्त दो संस्कारों में भी **विवाहसंस्कार** प्रधान है। मगर आजतक **विवाहपद्धतिका** कोई शुद्ध एवं शास्त्रशुद्ध विस्तृत टिप्पणी एवं सरल भाषा विधिसहित प्रामाणिक संस्करण प्रकाशित नहीं हुआ था। उक्त अभाव की पूर्ति के लिए हमने एक **"स्मृतिग्रन्थमाला"** की रचना की है जो **"रतनगढ़निवासी कर्मठाचार्य स्वर्गीय पण्डित श्रीचतुर्थीलालगौड़ स्मृतिग्रन्थमाला"** के नाम से है, उसके कई पुष्प तो प्रकाशित हो चुके हैं जो **"श्रीवेंकटेश्वर प्रेस-बंबई"** से प्रकाशित हुए हैं।

उनमें – **"चातुर्थीलाली विवाह पद्धतिः सटिप्पणिका" प्रथम पुष्प है।** उसके द्वारा व्याकरण जानने वाला ही विवाह कार्य सुगमता से करा सकता है, लेकिन कम पढ़े हुये या हिन्दीमात्र जानने वाले पुरोहित **(कर्मकाण्डी)** कार्य नहीं करा सकते। इसलिये उसी कमी को देखकर – **"गाङ्गाधरीसुगम विवाहपद्धति भाषाविधि सहिता"** का निर्माण किया है। इस पुस्तक को हाथ में लेकर सर्वसाधारण संस्कृत का अनभिज्ञ पुरोहित **(कर्मकाण्डी)** भी अच्छी तरह से विवाह कर्मको सुसम्पन्न करा सकता है।

केवल इसी एक पुस्तक को पास में रखने से विवाह सम्बन्धि अन्य पुस्तक की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। यह गागर में सागर सदृश है।

इस परिवर्तित नवीन संस्करण में स्थल-स्थल पर अति उपयोगी विस्तृत टिप्पणी भी दी गई है। पूजाक्रम भी सुन्दर प्रकार से संक्षेप में ही दिया गया है और भी विवाह संबंधी-लौकिक रीति भी जहाँ-तहाँ लिखी गयी है जिसका ज्ञान पुस्तक पढ़ने से ही हो सकता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"**चातुर्थीलाली उपनयन-पद्धतिः, उपाकर्म-पद्धति;** तो प्रकाशित हो चुकी हैं – **वास्तु-शान्ति-पद्धतिः – शतचण्डीविधानपद्धतिः सटिप्पणिका एवं गाङ्गाधरी बृहन्मूलादिशान्ति पद्धतिः विस्तृतटिप्पणी भाषा विधिसहिता,** आदि पुष्प भी जल्दी ही प्रकाशित होंगे।

"**गांगाधरी मंगलागौरीव्रतकथा** विस्तृत टिपणी–भाषाविधिसहिता" का प्रकाशन तो **लक्ष्मीनाथ** प्रेस फतेहपुरमें हो गया है।

यदि यह नवीन संस्करण सहृदयपाठकों को उपादेय और रुचिकर मालूम होगा तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा।

इस नवीन संस्करणमें मानवस्वभाववश अथवा प्रमादवश कोई त्रुटि रह गई हो तो विद्वान् लोग क्षमा करेंगे और उसकी सूचना देंगे ताकि दूसरे संस्करण में उसका संशोधन कर दिया जावे। भूमिका लेखक श्री **नन्दकुमारजीशास्त्री एम० ए०** का भी कृतज्ञ हूं जो कि इतना परिश्रम करके भूमिका लिखी। इस ग्रन्थ के प्रथम-द्वितीय एवं तृतीय संस्करण के प्रूफ संशोधन, परिष्करण व परिवर्द्धन में **पं० श्री जीवानन्द जी 'आनंद'** विद्यावाचस्पति सिद्धान्तालंकार का जो योगदान रहा है इसके लिए मैं सादर आभार व्यक्त करता हूं।

"गच्छतः स्खलनं वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः"॥

चतुर्थीलाल गौड़ भवन
वैशाख शुक्ला ३
सं० २०१८

विद्वज्जन कृपाकांक्षी–
गङ्गाधर शर्मा गौड़, तामडायतः,
रतनगढ़ (राजस्थान)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भूमिका

सुदूर अतीतकालमें भव्य भारतवर्ष समस्त विश्वका पथप्रदर्शक था उसके आचार-विचारों का अनुकरण करने में भूतल के समस्तदेश अपना अहोभाग्य मानते थे। इसकी संस्कार प्रधान संस्कृति की दिव्य ज्योति से अपना अज्ञानान्धकार दूरकर इसकी प्रशंसा के गीत गाते अघाते नहीं थे।

"अहो भुवः सप्त समुद्रवत्या, द्वीपेषुवर्षेष्वधिपुण्यमेतत्।" **(भाग० ५–६–१३)** **अर्थात्** सात समुद्रोंवाली इस पृथ्वी के समस्त द्वीपों और वर्षों में **भारतवर्ष** अत्यन्त पवित्र स्थान है।

"सितासिते सरिते यत्र सङ्गस्तत्राप्लुतासो दिवमुत्पतन्ति"। **(ऋग्० खिल)**

अर्थात् वैदिक और वैदिकेतर दोनों धारायें जिसमें समन्वित होती हैं उस भारतीय संस्कृतिकी धारामें स्नान करनेवाले दिव्य प्रकाशको प्राप्त होते हैं।

इतना ही नहीं **"एतद्देशप्रसूतस्य०"** का ही भावानुवाद करते हुये **राष्ट्रीय कवि श्री गुप्तजी लिखते हैं कि :—**

"संसार को पहिले हमीने ज्ञान भिक्षादान की।
आचार की, व्यवहार की, व्यापारकी, विज्ञान की।"

हमारे इस वास्तविक उद्घोषका आधार आचारनिष्ठा और संस्कार प्राधान्य जीवन था। वैदिक गृह्य कर्मकाण्ड में प्रमुख स्थान जन्म से **(अथवा गर्भाधानसे)** मृत्युपर्यन्त किये जाने वाले अनेकानेक संस्कारों का है।

"संस्करणम् संस्कारः" अथवा – "सम्यक् करणं संस्कारः" यद्वा–"संस्क्रियतेऽनेन देहो मनः आत्मा वेति०" संस्कार की शाब्दिक व्युत्पत्ति है। सम् उपसर्गक "कृ" प्रकृति के घञ् प्रत्यय होने पर संस्कार शब्द की निष्पत्ति होती है।

पूर्वरूपमें विद्यमान पदार्थों का दोष निवारणकर उनमें गुणों का प्रतिष्ठान ही संस्कार का मूल लक्ष्य है। अपरिष्कृत को परिष्कृत कर उसमें नवीनता व विशेषता लाने के लिये संस्कार परम आवश्यक है।

प्राणिजीवनशास्त्र और जनन-विज्ञान आदि विद्वानों के अनुसन्धानों के कारण अब गर्भाधानादि संस्कारों के महत्व को सिद्धान्त रूपसे स्वीकार किया जाने लगा है। साधारण से पौधे के पालन-पोषण में जितना ध्यान दिया जाता है, स्पष्टतः मनुष्यके जीवन की देखभाल में उससे कहीं अधिक ध्यान देनेकी आवश्यकता है। यही तो अधिकतर संस्कारों का अभिप्राय है। "वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम्। कार्यः शरीर संस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च॥" **२।२६। मनु का स्पष्ट आदेश है।** संपूर्ण संस्कारों में **विवाह संस्कार** सर्वप्रधान है। विवाह प्रथा विश्वके समग्र देशों में पाई जाती है, किन्तु इस विषय–पर हमारे पूर्वजनोंने जितना–गहन मनन करके विवाह पद्धति प्रचलित की वह अनुपम है। विवाह केवल विषय भोग का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधन नहीं अपितु सर्वतोमुखी विकासका साधन है। संयमित जीवन-यापन करते हुये पितृ-ऋण से विमुक्ति का उपादान है। विधिपूर्वक या अविधिपूर्वक, समझकर या विनासमझे, आज भी हमारे घरों में वैदिक धारा के आधार पर विवाह संस्कार कराया जाता है। सहस्रों वर्षों की परंपरा आज भी चल रही है, भारत के किसी एक या दो प्रान्तों में नहीं, किन्तु समस्त भारत में यह साधारण बात नहीं है।

विवाह-पद्धति की यह देन जो भारत जैसे विशाल देश को एक ग्रन्थन में बाँधे हुये हैं, कितनी बड़ी है कितनी अद्भुत है। विवाह, गृहस्थ जीवनके पूर्ण उत्तरदायित्व को समझनेवाले दम्पती के लिये, जीवन संघर्ष में राष्ट्र की सेवा में प्रवृत्त और प्रविष्ट होने का एक महान् प्रतीक है। आत्मा और आत्मा का संमिलन है। संसार की जीवन यात्रा में एक साथ मिलकर चलने वाले समान शीलगुणवय वाले दो प्रेमपथिकों का समझौता पत्र है। सद्गृहस्थी बनने का आज्ञापत्र है।

वेद कहता है – "जायेदस्तम्" (३।५२।४) स्त्रीका ही नाम घर है।

शतपथब्राह्मण में लिखा है – "अर्धोह वा एषु आत्मनो यज्जाया। यावज्जायां न विन्दते' **असर्वो** हि तावद् भवति" (५।२।१।१०) **अर्थात्** स्त्री पुरुषका आधा भाग होता है। जब तक पुरुष स्त्री को नहीं पाता है तब तक वह अपूर्ण ही रहता है।

भारतीय विवाह संस्कार कई प्रकार से अपनी विशेषता रखता है। **पाणिग्रहण, वह्नि-प्रदक्षिणा, सप्तपदी, लाजहोम** इस संस्कार के प्रधान अङ्ग हैं। जीवन के इस गम्भीरतम अवसर पर वधू का पाणिग्रहण करते हुए आज भी वर कहता है –

"गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथाऽसः।
भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वा दुर्गार्हपत्याय देवाः॥
(ऋग० १०।८५।३६)

अर्थात् सौभाग्य की समृद्धिके लिये मैं तुम्हारे हाथ को पकड़ता हूं, जिससे हम दोनों पूर्णायुष्य को प्राप्त कर सकें। **भग, अर्यमा** और दानशील **सवितृदेवता** प्रसाद रूपमें तुम्हें गृहस्थ धर्म के पालन के लिये मुझे दिया है। **आज भी वर-वधू एक-दूसरे से प्रतिज्ञा कराते हैं :—**

"मम व्रते ते हृदयं दधामि, मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व' प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्"॥ (पार० गृ० सू० १।८) **अर्थात्** तुम्हारा हृदय मेरे व्रत के अनुकूल हो। तुम्हारा चित्त मेरे चित्त के अनुकूल हो। मेरे कथन को प्रेमसे एकमत होकर सुनो। भगवान् प्रजापति तुमको मेरे अनुरक्त करें।

क्या ही सुन्दर भावना है – "यदेतद् हृदयं तव तदस्तु हृदयं मम यदिदं हृदयं मम तदस्तु हृदयं तव॥ (**मन्त्र ब्राह्मण् १।३।९**) **अर्थात्** यह जो तुम्हारा हृदय है वह मेरा हृदय हो जाये। यह जो मेरा हृदय है वह तुम्हारा हृदय हो जाये। कितनी उदात्त परम्परा से मिलन की आत्मसमर्पण की विचारधारा है।

वैवाहिक जीवन की सफलता के लिये जिन जिन बातों की आवश्यकता है। उन सबका बड़ा हृदयाकर्षक वर्णन **सप्तपदीके** मन्त्रों में आ जाता है। वर वधू से वैवाहिक जीवन के लक्ष्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इन मंत्रों द्वारा क्रमशः बतला रहा है; (१) अन्नादि आवश्यकसामग्री, (२) बल, (३) आर्थिक सम्पत्ति, (४) सुख और मनः प्रसाद, (५) सन्तान पालन, (६) दीर्घायुष्य (७) परस्पर प्रेम।

एक सुखमय सफल गृहस्थ जीवन का इससे अधिक सुंदर चित्रण नहीं हो सकता। इसी प्रकार हवन के समय भी परम प्रभु से त्रिविध शक्ति के विकास के साथ जीवन संग्राम में सफलता की याचना की जाती है। हमारी विवाहपद्धति का यह तो एक स्वरूप दिग्दर्शन मात्र है। इस संस्कार की उत्कृष्ट आदर्श दृष्टि का यह केवल एक उदाहरण मात्र है। आज मुद्रण की सामान्य सुविधा होने पर भी जहाँ अन्य विषयों के संस्करण पर संस्करण निकल रहे हैं, वहाँ पर संस्कारों के प्रतिपादक कर्मकाण्ड संबंधी ग्रंथों का अभाव ही दृष्टि गोचर हो रहा है। विशाल एवं विविध कर्मकाण्डके जंजाल में वे आवश्यक एवं उपादेय सामग्री लेकर उनको शास्त्र विहित विधि के अनुरूप प्रणयन करने के कार्य का सत्संकल्प **"रतनगढ़निवासी द्वादश-महानिबन्धप्रणेता कर्मठाचार्य–कर्मकाण्डकोविद पण्डित श्री चतुर्थीलालजी गौड़"** ने लिया था। अपने जीवन पर्यन्त वे इस सत् साधनमें रत रहे और अपनी सार ग्राहिणी प्रतिभा के द्वारा वे जो महान् कार्य कर गये हैं, वह सदैव चिरस्मरणीय रहेगा। उन्हीं के उस अपूर्ण कार्य को उन्हीं के सुपुत्र **"आत्मा वै जायते पुत्रः"** इस वाक्य के मूर्तरूप **"श्री गङ्गाधरजी गौड़"** अविचल निष्ठा और अनवरत अध्यवसाय से कर रहे हैं।

पण्डितजी के अपने सुयोग्य पिता की नीर-क्षीर-विवेचिनी सारग्राहिणी प्रतिभा उत्तराधिकार के रूप में मिली है। इसी लिये ये व्यस्त जीवन में भी अल्प संस्कृतज्ञ कर्मकाण्डियों के करकमलों में **"रतनगढ़निवासी स्वर्गीय पण्डित श्री चतुर्थीलाल गौड़ स्मृतिग्रन्थमाला"** के मनोहारी नवल रसमय पुष्प समर्पित करते जा रहे हैं। उसी स्मृति ग्रन्थमाला के पुष्पों में से **"गाङ्गाधरी विवाह पद्धतिः"** अनुपमेय है। विद्वान् संकलनकर्त्ताने इस पद्धति में उतनी ही और वे ही बातें प्रस्तुत की हैं जो आवश्यक हैं।

टिप्पणी के द्वारा किसी की शंका व तर्कका शास्त्रविहित प्रमाण देकर अन्यत्र परिश्रम के लिये स्थान ही नहीं छोड़ा है। गागरमें सागर, विन्दुमें सिन्धु समादेने का आपका प्रयास स्तुत्य है।

मुझे विश्वास है कि विवाह संस्कार संपादन के लिये यह पुस्तक पथनिर्देशक का काम करेगी और कर्मकाण्डजीवी पुरोहितादि वर्ग के लिये तो वह आवश्यक ग्रन्थ होगी ही अन्य जिज्ञासु तथा विद्वान् पाठक भी इससे लाभान्वित होंगे और पण्डितजीकी सेवा का समुचित आदर करेंगे।

विद्वदाश्रय :–

साहित्यरत्न **नन्दकुमार शास्त्री** एम० ए०, प्रभाकर,
भूतपूर्व प्रधान हिन्दी संस्कृताध्यापक श्री रघुनाथ
बहूद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय –
रतनगढ़ (राजस्थान)
प्राचार्य ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम लक्ष्मणगढ़ (सीकर)

रतनगढ़
९–४–६१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वितीय संस्करण पर—

दो शब्द

सुगम विवाह पद्धति के द्वितीय संस्करण के अभिनव प्रकाशन पर दो-शब्द प्रकट करते हुए मुझे अतीव आह्लाद हो रहा है, इस पुस्तक का प्रथम संस्करण आशा के अनुकूल विद्वत् समाज में समादृत होने के कारण स्वल्प काल में ही समाप्त हो गया है, प्रथम-संस्करण के जिन स्थलों के विषय में विद्वान् मित्रों से मुझे जो उचित परामर्ष मिले थे उन स्थलों पर आवश्यक संशोधन एवं परिवर्द्धन कर इस द्वितीय संस्करण को विद्वद् समुदाय के लिए उपादेय बनाने का सब प्रयास किया गया है, यत्र-तत्र पाद टिप्पणी में भी अभिवृद्धि कर शास्त्रीय प्रामाणिकता को और स्पष्ट किया गया है।

विवाह संस्कार हिन्दू षोडस संस्कारों में सर्वाधिक महत्ता रखता है, हमारे शास्त्रकारों ने इस संस्कार को सामाजिक कर्तव्य ही नहीं अपितु धार्मिक कृत्य भी माना है, विश्व के सभी मनुष्य विवाह विधान के माध्यम से पति-पत्नी के रूप में आवद्ध होते हैं भले ही विवाह संपन्न की प्रक्रियाएँ भिन्न-भिन्न हों। हिन्दू समाज में अनादि काल से विवाह-संस्कार एक प्रमुख नियामक तत्त्व रहा है और आज भी है। इस संस्कार की सामाजिक व धार्मिक उर्मिका होने के कारण व्यष्टि और समष्टि के आचरणों में मर्यादा की परिधि रहती आई है। विवाह संस्कार का यह स्वरूप हिन्दू समाज में आरम्भिक काल से चला आ रहा है। क्योंकि व्यवस्थित एवं विज्ञान सम्मत हुए बिना हिन्दू संस्कृति व सभ्यता अब तक जीवित नहीं रहती अपितु यह भी अन्य कई समाजों की तरह कभी भी काल कल्लवित हो जाती। हमारे शास्त्रकारों ने पति-पत्नी के संबंध को अत्यन्त पावन और अविच्छिन्न माना है, इसके अतिरिक्त विवाह-संस्कार को यज्ञसम माना गया है जैसा कि तैत्तिरीय ब्राह्मण में आता है **"अयज्ञियो वा एष यो पत्नीक"** महर्षि पाणिनि की भी यही मान्यता है, उन्होंने विवाह को यज्ञ के संयोग की बात कही है **"प्रत्येनोयज्ञ-संयोगे"** मनु महाराज भी विवाह को यज्ञ के सम बतलाते हुए कहते हैं कि—

यज्ञेतु वितते सम्यगृत्विजे कर्म कुर्वते।
अलंकृत्य सुतादानं दैवं धर्मः प्रचक्षते॥

अतः हिन्दू समाज में विवाह संस्कार के लिए दी गई महत्ता शास्त्र सम्मत है और यह निर्विवाद सत्य है कि 'हिन्दू विवाह विधान' की जो प्रक्रिया है वह मनोवैज्ञानिक होने के कारण श्रेष्ठतम है।

विद्वद् बन्धुओं से मैं यह आशा रखता हूँ कि वे सुगम विवाह पद्धति के इस द्वितीय संस्करण को अपना कर मेरे प्रयास को सार्थक करेंगे। शुभं भवतु।

चतुर्थीलाल गौड़ भवन
रतनगढ़
अनंत चतुर्दशी सं. २०३० वि.

भवन्निष्ठ :—
गङ्गाधर शर्म्मा गौड़, कर्मकाण्ड विशारद

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तृतीय संस्करण पर सम्पादकीय-कथन

भगवान आशुतोष की महती अनुकम्पा से "सुगमविवाह पद्धति" का यह तृतीय संस्करण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अतीव प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

हमारे ऋषियों ने मनुष्य जीवन को षोडश संस्कारों से अनुबन्धित किया है। इन षोडश संस्कारों में विवाह संस्कार अपने आप में अत्यन्त महत्व रखता है। विवाह संस्कार की शास्त्रीय विधि विधान से सम्पन्नता होने पर ही उसकी सफलता मानी गई है। आश्रम मर्यादा के अनुसार भी गृहस्थाश्रम को ही सर्वोपरि माना गया है, गृहस्थाश्रम का शुभारम्भ विवाह संस्कार की सम्पन्नता के साथ होता है, सुगम विवाह पद्धति को वेद गृह्यसूत्र ब्राह्मणग्रन्थ, स्मृतिग्रन्थ आदि हिन्दू धर्म के प्रमाण भूत ग्रन्थों के आधार पर बनाया गया है, इसके विधि विधान को इतना सरल और सुबोध बनाया गया है कि एक साधारण विद्वान् भी बिना किसी कठिनाई के विवाह संस्कार को सम्पन्न करा सकता है। यही कारण है कि स्वल्पकाल में ही सुगम विवाह पद्धति का यह तृतीय संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है, बहुत से विद्वानों के प्रसंशा भरे पत्र सुगम विवाह पद्धति के विषय में मेरे पास आये हैं इससे मैं अपने प्रयास को सार्थक समझता हूँ। यह निर्विवाद सत्य है कि सुगम विवाह पद्धति अत्यन्त लोकप्रिय सिद्ध हुई है। इस संस्करण में अन्य आवश्यक परिवर्तन व परिवर्द्धन गृह्यसूत्रों के आधार पर किये गये हैं तथा गत संस्करण में प्रेस की रही हुई भूलों को भी सुधार दिया गया है।

सुगम विवाह पद्धति के प्रणयन में—कर्मकाण्ड भास्कर श्रौत-भूषण, द्वादश महानिबन्ध प्रणेता स्वनाम धन्य पुण्यश्लोक पितृचरण पूज्यश्री पं० चतुर्थीलालजी गौड़ की ज्ञात व अज्ञात प्रेरणाएँ मेरी दिशा निर्देशक रही हैं अतएव इस सुअवसर पर मैं उस महान् ब्रह्मलीन आत्मा को अपनी प्रणामाञ्जलि अर्पित करना अपना पावन कर्तव्य समझता हूँ।

चतुर्थीलाल गौड़ भवन
रतनगढ़
गुरु पूर्णिमा २०३५ वि.

भवन्निष्ठ :—
गङ्गाधर शर्म्मा गौड़
कर्मकाण्ड विशारद

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विवाहपद्धत्यनुक्रमणिका

विषयाः	पृष्ठम्
मङ्गलाचरणम् ...	१
शान्तिपाठ मन्त्राः ...	३
प्रायश्चित्त संकल्पः ...	५
प्रधान संकल्पः ...	६
कलशाचनम् ...	७
दीपपूजनम् ...	८
गणयागः ...	८
गणपति पूजनम् ...	९
स्वस्ति पुण्याह वाचनम् ...	१०
मातृकापूजनम् ...	१२
सूर्यादिग्रह पूजनम् ...	१३
कलशस्थापन प्रयोगः ...	१४
कलशाभिमन्त्रणम् ...	१७
कलश प्रार्थना ...	१७
रक्षाविधानम् ...	१७
विवाह विधानम् ...	१९
मधुपर्क पूजनम् ...	२२
अग्निस्थापनम् ...	२४
वस्त्रपरिधानम् ...	२५
कन्यादानम् ...	२८
कन्यादान संकल्पः ...	३१
परस्पर निरीक्षणम् ...	३२
ब्रह्मादि वरण संकल्पः ...	३३
कुशकण्डिका ...	३४
सर्वप्रायश्चित्त होमः ...	३९
राष्ट्रभृद्धोमः ...	४०
जयहोमः ...	४२
अभ्यातान होम ...	४२
पञ्चाहुतयः ...	४५
शाखोच्चारणम् ...	४६
लाजहोमः ...	४६
सेवरादानम् ...	४९
सप्तपदाक्रमणम् ...	५१
अभिषेकः ...	५३
सूर्य ध्रुवयोरीक्षणम् ...	५४
हृदयालम्भः ...	५४
कन्यावचनानि ...	५५
सिन्दूरदानम् ...	५७
स्विष्टकृद्धोमः ...	५८
पूर्णपात्रदानम् ...	५८
बर्हिर्होमः ...	५८
त्र्यायुषकरणम् ...	५९
भूयस्या दक्षिणायाः संकल्पः ...	५९
देवताग्नि विसर्जनम् ...	६०
वरवध्वोस्त्रिरात्र नियमाः ...	६१
चतुर्थीकर्म ...	६१
सांकल्पिक नान्दीश्राद्धम् ...	६६
मङ्गलाष्टकम् ...	७३
भाषाशाखोच्चारश्चतुष्कम् ...	७४
वंशगोत्रोच्चारणम् ...	७९
आमंत्रण श्लोकाः ...	८०
आशीर्वादात्मक पद्यानि ...	८२
संक्षेपतो गोत्र प्रवर निर्णयः ...	८४
आदि गौड ब्राह्मणों के गोत्र व शासन	९२
विवाह संबंधी आवश्यक बातें	९८
विवाह सामग्री ...	१०१
सूर्य-गुरु-चन्द्र पूजादान सामग्री	१०२
संकल्पश्च ...	१०२
ग्रन्थकारस्य सप्तपुरुषात्मकः कल्पतरुः ...	१०५
स्व० पं. श्री चतुर्थीलालजी गौड़ कृत ग्रन्थरत्नानि ...	१०६
पं. श्री गंगाधरजी गौड कृत ग्रन्थ रत्नानि	१०७

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ नमः शिवाय।

त्रैवर्णिकानां -

माध्यन्दिन शाखीया

सुगम विवाह-पद्धतिः

"अगजाननपद्मार्कं गजाननमहर्निशम्।
अनेकदं तं भक्तानामेकदन्तमुपास्महे ।।"

विवाह दिन से पूर्व तृतीय, षष्ठ[1], नवम दिन को त्याग कर विवाह नक्षत्र[2] में या शुभ दिन में स्व स्व गृह में कन्या वर के तैल हरिद्रारोपन अर्थात् हलदी हाथ आदि करावे।

विवाह के दिन वा पहले दिन अपने-अपने घर में कन्यापिता और वरपिता स्त्रीसहित कन्या पुत्र के साथ मङ्गलस्नान करे। शुद्ध नवीन वस्त्र तिलक आभूषणादिसे विभूषित होके गणेश मातृका-पूजन–नान्दीश्राद्ध[3] करे।

श्रेष्ठ दिनमें सोलह या बारह या दश या अष्ट हस्त परि-

---

१ "न पूर्वमिदमाचरेत्रिनवषण्मिते वासरे।" इति निषेधात्।

संस्कारभास्करे च—वराहः–"कार्यं विवाहकार्याङ्गं विवाहोदित भर्जनैः। विबलं च विधुं हित्वा त्रिषष्ट नवमं दिनम्।। हेरम्ब पूजनं तैलहरिद्राचांकुरार्पणम्। पेषणं कंडनाद्यं च वेदिका मण्डपादिकम्।।"

२ मुहूर्तप्रकाशे – "रोहिण्युत्तररेवत्यो मूलं स्वाति मृगोमघा। अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मङ्गलप्रदाः"।।

३ सं० गणपतौ—"एकविंशत्यहर्यज्ञे विवाहे दशवासराः। त्रिषट् चौलोपनयने नान्दीश्राद्धं विधीयते"।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माण का **मण्डप**[1] चतुर्द्वार सहित बनाकर उसमें **एक**[2] **हाथकी चौकुंटी (चतुरस्र)** वेदी पूर्वको नीची करती बनावे। उसको **हलदी, गुलाल, गोधूम, चून** आदि से सुशोभित करे। हवनवेदी के चारों तरफ काठकी चार खूंटी गाड़े, उन्हींके बाहर सूत लपेटे, एक २ दीवा **(कच्चा बारुन्दड़ा)** पास में धरे। **कन्या, सिंह,**[3] **तुला,** ये संक्रान्ति होवें तो **"ईशान"** में प्रथम खूंटी रोपे। **वृश्चिक, धन, मकर** संक्रान्ति में **"वायव्य"** में प्रथम खूंटी रोपे। **मीन, मेष, कुम्भ** संक्रान्ति में **"नैर्ऋत्य"** में प्रथम खूंटी रोपे। **वृष, मिथुन, कर्क** संक्रांति में **"अग्निकोण"** में प्रथम खूंटी रोपे।

एक काठके पाटेके ऊपर **गणेश, षोडशमातृका, नवग्रह** आदि स्थापन करे। **ईशानकोणमें** कलश स्थापन करे। रक्षार्थ घृत का दीपक रखे और अपने दक्षिण भागमें पूजा सामग्री रख लेवे। विवाह के समय कन्यापिता स्नान[4] करके **शुद्ध** नवीन वस्त्र पहन कर **उत्तराभिमुख**[5] होकर आसन पर बैठे। वर तो **पूर्वाभिमुख**[6] बैठे।

---

१ **पञ्चरात्रे**—'कनीयान् दशहस्तः स्यान्मध्यमो द्वादशोन्मितः। तथा षोडशभिर्हस्तैर्मण्डपः स्यादिहोत्तमः" ॥

२ **संस्कार दीपके**—"उपलिप्ते महीपृष्ठे चतुर्विशाङ्गुलायता। वेदी वैवाहिकी कार्या चतुरङ्गुलमुच्छ्रिता" ॥

वेदी स्वरूपं मनुराह—"सर्वत्र वेदी चतुरङ्गुलोच्छ्रिता विनिर्मिता सैकतमृतिकादिभिः। द्विधा तु सा केवल वैदिकात्मिका परायुता स्तम्भ चतुष्टयेन या" ॥

३ "सूर्येङ्गनासिंहघटेषु (६ ५ ७) शैवे स्तम्भोलिकोदण्डमृगेषु (८ ९ १०) वायौ। मीनाजकुम्भे (१२ १ ११) निर्ऋतौ विवाहे स्थाप्योऽग्निकोणे वृषयुग्मकर्के (२ ३ ४)" ॥

वास्तुरत्नावली—"वृषमादि त्रये वेद्यां सिंहादि गणयेद् गृहे। देवालये च मीनादि तडागे मकरादिकम्" ॥

४ **वृद्धयाज्ञवल्क्य :**—"ग्रहणोद्वाहसंक्रान्तियात्रार्तिप्रसवेषु च। स्नानं नैमित्तिकं ज्ञेयं रात्रावपि तदिष्यते।"

नागदेव :—"अस्नातस्य क्रियाः सर्वा भवन्ति निष्फलायतः। प्रातः समाचरेत्स्नानं तच्च नित्यमुपस्थितम्" ॥

५ **पराशर :**—"उदङ्मुखोऽर्चयेद्दाता वेदिस्थं प्राङ्मुखं वरम्।"

संस्कार भास्करे च—"सर्वत्र प्राङ्मुखो दाता प्रतिग्राही उदङ्मुखः। एष एव विधिर्यत्र कन्यादाने विपर्ययः" ॥

६ **व्यासस्मृतौ**—"प्रत्यङ्मुखं स्थापयेत्तु देवं पूज्यं वरं विना।
वरस्तु प्राङ्मुखः पूज्यः पूजकः स्यादुदङ्मुखः ॥"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुंकुम का तिलक कर अपने दक्षिण हस्त की अनामिका[1] में सुवर्ण की अंगूठी पहन कर आचमन प्राणायाम कर **"आनोभद्रा"** आदि शान्तिपाठ करे।

शान्तिपाठमन्त्राः –

हरिः–"ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु व्विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद् वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥ १ ॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवाना ७ँ रातिरभि नो निवर्तताम्। देवाना ७ँ सख्यमुप सेदिमा व्वयन्देवा नऽ आयुः प्र तिरन्तु जीवसे ॥ २ ॥ तान्पूर्व्वया निविदा हूमहे व्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्। अर्य्यमणं व्वरुण ठँ० सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥ ३ ॥ तन्नो व्वातो मयोभु व्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतन्धिष्ण्या युवम् ॥ ४ ॥ तमीशानञ्जगतस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ५ ॥ स्वस्ति नऽ इन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्द्दधातु ॥ ६ ॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभँ य्यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो व्विश्वे नो देवाऽ अवसाऽऽ गमन्निह ॥ ७ ॥ भद्रङ्कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ७ँ सस्तनूभिर्व्व्यशेमहि देवहितँ य्यदायुः ॥ ८ ॥ शतमिन्नु शरदोऽ अन्ति देवा यत्रानश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषताऽऽयुर्गन्तोः ॥ ९ ॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। व्विश्वे देवाऽअदितिः पञ्च

---

१ अत्रिस्मृतौ — "अनामिकामूलदेशे पवित्रं धारयेद् द्विजः" ॥

हेमाद्रौ — "अन्यानि च पवित्राणि कुशदूर्वात्मकानि च। स्वर्णात्मक पवित्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्" ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम् ।। १० ।। तम्पत्नी भिरनु गच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः । नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः ।। ११ ।। आयुष्यँ व्वर्च्चस्य ठं० रायस्पोषमौद्भिदम् । इद ठं० हिरण्यं वर्च्चस्व ज्जैत्राया विशता-दुमाम् ।। १२ ।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ठं० शांतिः पृथिवी शांतिरापः शांतिरोषधयः शांतिः । व्वनस्पतयः शांतिर्विश्वेदेवाः शांतिर्ब्रह्म शांतिः सर्व्वं ठं० शांतिः शांतिरेव शांतिः सा मा शांतिरेधि ।। १३ ।। यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु । शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः" ।। १४ ।। **ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु । सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु । प्रारब्धे कर्मणि निर्विघ्नतास्तु ।**

"ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः । ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः । ॐ माता पितृचरणकमलेभ्यो नमः । ॐ कुलदेवताभ्यो नमः । ॐ इष्ट देवताभ्यो नमः । ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः । ॐ स्थान देवताभ्यो नमः । ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः ॐ सूर्य्यादिग्रहेभ्यो नमः । ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्म-णेभ्यो नमः । ॐ सर्वेभ्यस्तीर्थेभ्यो नमः । ॐ सर्वाभ्यश्शक्तिभ्यो नमः । **ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु** । ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च-कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।।१।। धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।। २ ।। विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।।३।। शुक्लाम्बरधरं देवं शशि-वर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ।। ४ ।। अभि-प्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः । सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधि-पतये नमः ।।५।। सर्वमङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ।। ६ ।। सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् । येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः ।।७।। लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः । येषामिन्दीवर श्यामो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हृदयस्थो जनार्दनः ।। ८ ।। विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् । सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये ।। ९ ।। सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः । देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः । ।। १० ।। वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्य समप्रभ । अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा" ।। ११ ।।

प्रायश्चित्त सङ्कल्पः[1]

कन्यापिता स्व दक्षिण हाथमें यथाशक्ति हिरण्यादि द्रव्य-चन्दन-पुष्प-अक्षत-दूर्वा-जल लेकर संकल्प करे ।

"**हरिः ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः** ॐ तत्सदद्यैतस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य, अद्यश्रीब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे, तदादौ श्री-श्वेतवाराहकल्पे, सप्तमे वैवस्वतमन्वतरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे, जम्बू द्वीपे, भरत खण्डे, तत्रापि परमपवित्रे भारतवर्षे, आर्यावर्तैकदेशांतर्गते पुण्यक्षेत्रे (**कुमारिका नामक्षेत्रे**), अमुक देशे (**मरु संज्ञके देशे**)अमुक नगरे (**पुष्कर क्षेत्रान्तर्वर्ति राजस्थान प्रदेशान्तर्गत रतनगढ नाम्नि नगरे**) श्रीगङ्गा-यमुनयोः पश्चिमे भागे, नर्मदाया उत्तरे भागे, चान्द्रसंज्ञकानां प्रभवादि षष्टिसम्वत्सराणां मध्येऽमुकनाम्नि सम्वत्सरे, श्रीमन्नृप विक्रमार्कसमयादमुकसंख्यापरिमिते, विक्रमाब्दे, अमुकायने, अमुकर्तौ, अमुकमासे[2], अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवासरे, अमुकगोत्रः, अमुक शर्माऽहं (**वर्मा गुप्तोऽहंवा**) मम अस्या अमुकनाम्न्याः कन्याया गर्भाधानादि चूडान्त संस्काराणामकरणजन्यप्रत्यवायपरिहारद्वारा श्रीपर-

---

१ **संस्कारभास्करे**— "संकल्पेन विनाकर्म यत्किञ्चित्कुरुते नरः । फलं चाप्यल्पकं तस्य धर्मस्यार्द्ध क्षयो भवेत् ।। संकीर्त्य मासपक्षादीन् निमित्तानि तथैव च । इदं कर्म करिष्येऽहमिति संकल्पमाचरेत्" ।।

२ **मयूखे** —"मासपक्षतिथीनां च निमित्तानां च सर्वशः । उल्लेखनमकुर्वाणो न तस्य फलभाग्भवेत् ।।" **निमित्तानां संक्रमार्धोदयादीनामिति ।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेश्वरप्रीत्यर्थं प्रतिसंस्कारं पादकृच्छ्रं[1] चूडाया अर्द्धकृच्छ्रं प्रायश्चित्तं तत्प्रत्याम्नाय गोनिष्क्रयीभूतं यथाशक्ति इदं हिरण्यमग्निदैवतं (**रजतं चन्द्रदैवतं**) अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे"।

संकल्प करके साक्षतोदक सहित दक्षिणा ब्राह्मण को देवे और ब्राह्मण यह बोले–

"ॐ स्वस्ति"[2]

प्रधानसङ्कल्प

आचमन कर फिर संकल्प करे—

"मम अस्या अमुक नाम्न्याः कन्यायाः भर्त्रासह धर्म्यप्रजोत्पादन-गृह्यपरिग्रहधर्माचरणेष्वधिकारसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं **ब्राह्म**[3] विवाहविधिना विवाहाख्यसंस्कारं करिष्ये"।

फिर हाथमें जल लेकर संकल्प करे– "तदङ्गतया विहितं निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थमादौ गणपतिपूजनं मातृकापूजनं सूर्यादिग्रहपूजनं कलशस्थापनं तत्पूजनं दिग्रक्षणं रक्षाबन्धनं स्तम्भचतुष्टयरोपणं च करिष्ये"। **यहाँ वर भी अनाश्रम स्थिति प्रयुक्तदोषपरिहार के लिये प्रायश्चित्त करें।**

वर अपने दक्षिण हाथमें हिरण्यादि द्रव्य-जलाक्षत-पुष्प-दूर्वा-लेकर संकल्प करे–देशकालौ संकीर्त्य– "मम समावर्तन दिनमारभ्य अद्यदिनं यावत् [4]अनाश्रमस्थिति-जन्यदोषपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वर-

---

१ **अत्र शौनकः**— "एतेष्वैकैकलोपे तु पादकृच्छ्रं समाचरेत्। चूडाया अर्द्धकृच्छ्रं स्यादापदीत्येवमीरितम्। अनापदि तु सर्वत्र द्विगुणं द्विगुणं चरेत्"।

२ **आदित्य पुराणे** — "ओंकारमुच्चरन् प्राज्ञो द्रविणं शक्तुमोदनम्। गृह्णीया-द्दक्षिणे हस्ते तदन्ते स्वस्ति कीर्त्तयेत्॥"

३ **शब्द कल्पद्रुमे** — "ब्राह्मो दैवस्तथा चार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः। गान्धर्वोराक्षस-श्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः"॥

"प्रसाद्य चार्चयित्वा च श्रुतिशीलवते स्वयम्। दद्यात् कन्यां यथान्यायं ब्राह्मो धर्मः प्रकीर्तितः"।

४ **दक्षस्मृतौ** — "अनाश्रमी न तिष्ठेत्तु दिनमेकमपि द्विजः। आश्रमेण विना तिष्ठन् प्रायश्चित्ति भवेद्धि सः"॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रीत्यर्थं [1]प्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायभूतैकगानिष्क्रयीभूतमिदं हिरण्यमग्निदैवतं (रजतं चन्द्रदैवतं वा) अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे"। **संकल्प करके दक्षिणा ब्राह्मण के हाथ में देवे और ब्राह्मण यह बोले**– "ॐ स्वस्ति"।

पहले कर्मार्थ [2]गंगाजल पूरित कलश की पूजा करे। यजमान हाथ में चावल लेकर वरुण का आवाहन करे–"ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुश ठं० समानऽआयुः प्रमोषीः"। अस्मिन्कलशे भगवन् वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ १ ॥

"ॐ अपाम्पति वरुणाय नमः"। इस नाम मन्त्र से पाद्यादि षोडशोपचार पूजन कर प्रार्थना करे।

"ॐ पाशपाणे ! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक ! यावत्कर्मावशानं स्यात्तावत्त्वं सन्निधौ भव" ॥ १ ॥ **अनया पूजया अपाम्पति वरुणः साङ्गः सपरिवारः प्रीयताम्।**

यजमान दूर्वाकी प्रोक्षणीसे कलशोदकसे पूजासामग्री और अपनी आत्मा का प्रोक्षण[3] करे–

"ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याऽभ्यन्तरः शुचिः" ॥ १ ॥ **"ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ३"।**

---

१ **संस्कारदीपके**— "प्राजापत्येष्वशक्तस्तु धेनुं दद्यात्पयस्विनीम्। धेनोरभावे निष्कं वा तद्धंपादमेव वा ॥ सुवर्णं रजतं वाऽपि दद्याच्छक्त्यानुसारतः।" **अशीति गुञ्जात्मकः कर्षश्चत्वारः कर्षा निष्कः।**

वि० पारिजाते – "निष्कं सुवर्णश्चत्वारः कार्षिकस्ताम्रिकः पणः" ॥

अन्यच्च — "दशार्द्धगुञ्जं प्रवदन्ति माषं माषाह्वयै षोडशभिश्च कर्षम्। कर्षश्चतुर्भिश्च पलं तुलाज्ञाः कर्षं सुवर्णस्य सुवर्णसंज्ञम्" ॥

२ **आचार भूषणे** — "सर्वत्र पावनी गंगा त्रिषु स्थानेषु दुष्यति। म्लेच्छस्पर्शे सुराभाण्डे कूपादिजलमिश्रणे" ॥

कर्मप्रदीपे — "सुवासितजलैः पूर्णं वामे कुम्भं सुपूजयेत्। कलशस्येति मन्त्रेण तीर्थान्यावाहयेत्ततः" ॥

३ **श्राद्धविवेके** —"नाऽप्रोक्षितं स्पृशेत्किञ्चिद्दैवे पित्र्ये च कर्मणि"।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दीपपूजनम्

"ॐ दीपाय नमः"। इस मंत्रसे यजमान दीपक की पूजाकर प्रार्थना करे–"भो दीप ! ब्रह्मरूपस्त्वमन्धकार निवारकः। इमां मया कृतां पूजां गृहणंस्तेजः प्रवर्धय" ॥ १ ॥

अनया पूजया ज्योतीरूपः प्रत्यक्षदीपः प्रीयताम्।

गणयागः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि गणयागं सुखावहम्। कामके वासवेयज्ञे। विवाहे व्रतसंयमे ॥ १ ॥ आदौ गणेश्वरं पूज्य[1] सर्वकामफलप्रदम्। मासमासाधिपं देवं गाणपत्यं लभेन्नरः ॥ २ ॥ येनासौ पूजितो यज्ञे मासाचार्यः प्रपूजितः। कोऽसौ मासपतिर्देवो ह्यत्र धूपेन धूपितः ॥ ३ ॥ ज्येष्ठमासं कृतं पूज्य यज्ञकाले सनातनम्। मण्डलं प्रथमं पूज्यं कोष्ठं द्वादशमुत्तमम् ॥ ४ ॥ सिन्दूरेणार्चितो देव ईशाने तु विनायकः। ग्रहयुक्तं ततः स्थाप्य मासे मासेऽधिकं फलम् ॥ ५ ॥ गणाधिपं मार्गशीर्षे तथा पौषे विनायकम्। गजवक्त्रं तु माघे च भालचन्द्रं च फाल्गुने ॥ ६ ॥ चैत्रमासे तु वेदाङ्गं वैशाखे शिवसूनुकम्। ज्येष्ठे शिवसुतं पूज्य आषाढे हरनन्दनम् ॥ ७ ॥ श्रावणे तापसं देवं भाद्रे च मोदकप्रियम्। आश्विने च महावीर्यं महावीर्यं च कार्तिके ॥८॥ विघ्नहर्तारमधिके मासि पूज्य गणेश्वरम्। गन्धपुष्पैस्तथा धूपैः कर्पूरैयक्षकर्दमैः ॥ ९ ॥ मृगमदैः कुङ्कुमैश्च सिन्दूरेण विशेषतः। रक्तोत्पलदलैः पूज्य बिल्वपत्रेण केशरैः ॥ १० ॥ मालतीकेतकीपुष्पैर्हेमपुष्पैर्विचक्षणैः। अर्घ्यं धूपं च दीपं च रक्तवस्त्रेण छादनम् ॥ ११ ॥ पूजायां कुरुते देवे दद्यान्मोदक भोजनम्। नमो देव गणेशाय नमस्ते विघ्ननाशन ॥ १२ ॥ नमस्ते मूषिकारूढ शुभाकाराय वै नमः। नमः कात्यानी पुत्र लम्बकर्णाय वै नमः ॥ १३ ॥ गजदन्त विरूपात्मन् विद्याबुद्धि विचक्षण। देहि मे पुत्र सौभाग्यं देहि मे सुखसम्पदः ॥ १४ ॥

---

१ आर्षत्वात्समासाभावेऽपि ल्यप् प्रत्ययो बोध्यः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाञ्छितार्थप्रदं देवं वरदं विघ्ननायकम् । शत्रुदुष्टाश्च ये केचिद् दुर्जनाश्चैव येऽखिलाः ।। १५ ।। तेषां दण्डहितार्थाय प्रार्थये त्वां गणेश्वरम् । आदौ पूजा गणेशस्य शान्तिश्चैव विशेषतः ।। १६ ।। नाशयेत्सर्वविघ्नानि कल्याणञ्च भवेत्सदा । कृष्णेन भाषितं पूर्वं देवताः परिकीर्तिता ।। १७ ।। मण्डलं यत्र यज्ञे च भोक्ता तत्र विनायकः । गणयाग विहीनस्य निष्फलं तस्य जायते ।।१८।। हरते सर्वं विघ्नानि त्वत्प्रसादो विनायकः । आयुः कर्त्ता शान्ति कर्त्ता वरदो भव पूजितः ।। १९ ।।"

इति गणयागः ।

गणपतिपूजनम्[1]

यजमान और वर हाथ में अक्षत पुष्प लेकर आवाहन करे–

"ॐ श्वेताङ्गं श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगन्धैः क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरतरुविमले रत्नसिंहासनस्थम् । दोर्भिःपाशांकुशेष्टाभयधृतिविशदं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रं ध्यायेच्छान्त्यर्थमीशं गणपतिममलं श्रीसमेतं प्रसन्नम् ।। १ ।। ॐ गणानान्त्वा गणपति ठं० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ठं० हवामहे । निधिनान्त्वा निधिपति ठं० हवामहे व्वसो मम । आहमजानिगर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्" ।। २ ।। ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहित महागणाधिपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ।

"ॐ गणपतये नमः" । इस नाम मन्त्रसे पाद्यादि षोडशोपचार पूजनकर प्रार्थना करे ।

प्रार्थना

"ॐ गजाननम्भूतगणादि सेवितं कपित्थजम्बुफलचारुभक्षणम् । उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्" ।। १ ।।

अनया पूजया श्रीगणपतिः साङ्गः सपरिवारः प्रीयताम् ।

---

१ **सं० भास्करे** — "आदौ विनायक. पूज्यश्चान्ते तु कुलदेवता" ।

भविष्यपुराणे च —"देवतादौ यदा मोहाद्गणेशो न च पूज्यते । तदा पूजाफलं हन्ति विघ्नराजो गणाधिपः" ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वस्तिपुण्याह वाचनम्

"ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्ट नेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्द्दधातु ॥ १ ॥ ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ २ ॥ ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि व्विष्णवे त्वा ॥ ३ ॥ ॐ अग्निर्देवता व्वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता। वसवो देवता रुद्रा देवता दित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता ॥ ४ ॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ० शान्तिः शान्ति रेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥ ५ ॥ ॐ व्विश्वानि देव सवितर्द्दुरितानि परासुव। यद्भद्रन्तन्नऽआसुव ॥ ६ ॥ ॐ एतन्ते देव सवितर्य्यज्ञम्प्राहुर्ब्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमवतेनयज्ञपतिन्तेन मामव ॥ ७ ॥

इति स्वस्तिवाचनं पठित्वा पुण्याहवाचनकलशस्थवरुणं गन्धादिभिः सम्पूज्य ब्राह्मणानां हस्ते सुप्रोक्षणादिकं कुर्यात्।

तद्यथा—"ॐ शिवा आपः सन्तु" **इति जलम्।** (सन्तु शिवाः आपः) **इति प्रति वचनम्।**

"सौमनस्यमस्तु" **इति पुष्पाणि।** "अस्तु सौमनस्यम्" **इति प्रति वचनम्। (एवं सर्वत्र प्रतिवचनंदद्युः) "अक्षतं चारिष्टं चास्तु"** अस्त्वक्षतमरिष्टं च। **"गन्धाः पान्तु"**। सौमङ्गल्यं[1] चास्तु। **"अक्षताः पान्तु"**। आयुष्यमस्तु। **"पुष्पाणि पान्तु"**। सौश्रियमस्तु। **"सफलताम्बूलानि पान्तु"**। ऐश्वर्यमस्तु। **"दक्षिणाः पान्तु"** बहुधनमस्तु। **"पुनरन्नापः पान्तु"**। स्वर्चितमस्तु।

"ॐ पुण्याहकालं वाचयिष्ये" **इति यजमानः।** वाच्यतामिति **विप्राः।**

---

१ सौमङ्गल्यमिति। भावेष्यत्र्। सुमङ्गल्यमिति पाठस्तु सुमङ्गलाय हितमिति हितेऽर्थे यत्प्रत्ययेन साधनीयः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ततः "ब्राह्मं पुण्यमहर्य्यच्च सृष्टयुत्पादनकारकम् । वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः" ।। १ ।। भो ब्राह्मणाः मम कन्याया क्रियमाणस्य विवाहाख्यसंस्कारकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु । **"ॐ पुण्याहं ३" इति त्रिर्विप्रा ब्रूयुः ।**

"ॐ पुनन्तुमादेवजनाः पुनन्तु मनसाधियः । पुनन्तुव्विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहिमा" ।। १ ।।

"पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुराकृतम् । ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः" ।। २ ।। भो ब्राह्मणाः मम कन्यायाः क्रियमाणस्य विवाहाख्यसंस्कारकर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु । **"ॐ कल्याणम् ३" इति त्रिर्विप्रा ब्रूयुः ।**

"ॐ यथेमां व्वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः । ब्रह्मराजन्याभ्याँ शूद्रायचार्यायचस्वायचारणाय च । प्रियोदेवानां दक्षिणायैदातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्धयतामुपमादोनमतु" ।। २ ।।

"सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्यादिभिः कृता । सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः" ।। ३ ।। भो ब्राह्मणाः मम कन्यायाः क्रियमाणस्य विवाहाख्यसंस्कारकर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु । **"ॐ ऋद्धयताम् ३" इति त्रिर्विप्रा ब्रूयुः ।** "ॐ सत्रस्यऽऋद्धिरस्यगन्मज्योतिरमृताऽअभूम । दिवं पृथिव्याऽअध्यारुहामाविदामदेवान्त्स्वर्ज्योतिः" ।। ३ ।।

"स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा । विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः" ।। ४ ।। भो ब्राह्मणाः मम कन्यायाः क्रियमाणस्य विवाहाख्यसस्कारकर्मणः स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु । **"ॐ आयुष्मते स्वस्ति ३" इति त्रिर्विप्रा ब्रूयुः ।** "ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्द्दधातु" ।। ४ ।।

"समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका । हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः" ।। ५ ।। भो ब्राह्मणाः मम कन्यायाः क्रियमाणस्य विवाहाख्यसंस्कारकर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु । **"ॐ अस्तु**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीः ३" इति त्रिर्विप्रा ब्रयुः । "ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रेपार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्व्व लोकम्मऽइषाण" ।। ५ ।।

ततो यजमानः– "अस्मिन्पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु" । **इति ब्रूयात् । "अस्तु परिपूर्णः" इति द्विजाः ।**

ततो यजमानो देशकालौ संकीर्त्य–

"कृतैतत्पुण्याहवाचनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्संपूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य मनसोद्दिष्टां दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये" । **इति संकल्प करके ब्राह्मणोंको देवे ।।** अनेन पुण्याहवाचनेन श्रीप्रजापतिः प्रीयताम् ।

इति पुण्याहवाचनम् ।

मातृकापूजनम्[1]

यजमान और वर अपने बांये हाथमें चावल लेकर दाहिने हाथसे नीचे लिखे प्रत्येक नामसे छोड़ता जाये–"ॐ गणेशायनमः" गणेशमावाहयामि १ **"ॐ गौर्य्यैनमः"** गौरीमावाहयामि २ **"ॐ पद्मायै नमः"** पद्मामावाहयामि ३ **"ॐ शच्यै नमः"** शचीमावाहयामि ४ **"ॐ मेधायै नमः"** मेधामावाहयामि ५ **"ॐ सावित्र्यै नमः"** सावित्रीमावाहयामि ६ **"ॐ विजयायै नमः"** विजयामावाहयामि ७ **"ॐ जयायै नमः"** जयामावाहयामि ८ **"ॐ देवसेनायै नमः"** देवसेनामावाहयामि ९ **"ॐ स्वधायै नमः"** स्वधामावाहयामि १० **"ॐ स्वाहायै नमः"** स्वाहामावाहयामि ११ **"ॐ मातृभ्यो नमः"** मातृरावाहयामि १२ **"ॐ लोकमातृभ्यो नमः"** लोकमातृरावाहयामि १३ **"ॐ हृष्ट्यै नमः"** हृष्टिमावाहयामि १४ **"ॐ पुष्ट्यै नमः"** पुष्टिमावाहयामि १५ **"ॐ तुष्ट्यै**

---

१ **कत्यायनः**— "कर्मादिषु च सर्वेषु मातरः सगणाधिपाः । पूजनीयाः प्रयत्नेन पूजिताः पूजयन्ति ताः।।"

संग्रहे—"विना मातृकया यागं ग्रहार्चां यो समारभेत् । कुप्यन्ति मातरः सर्वा ह्यशुभं विन्दते फलम् ।।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमः" तुष्टिमावाहयामि १६ "**ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः**" आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि १७ "ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्ट यज्ञ ठं० समिमं दधातु। विश्वे देवासऽइह मा दयन्तामो इम्प्रतिष्ठ "।१८।। इत्यावाह्य–"**ॐ गौर्य्यादिषोडशमातृभ्यो नमः**"।

पाद्यादि षोडशोपचार पूजन कर प्रार्थना करे– "ॐ जयन्ती मङ्गलाकाली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुंते" ।। १ ।। **अनया पूजया गौर्य्यादिषोडशमातरः प्रीयन्ताम् ।**

सूर्य्यादिग्रहपूजनम्[1]

यजमान और वर अपने बांये हाथमें चावल लेकर दाहिने हाथसे प्रत्येक मन्त्रसे नवग्रहों पर अक्षत छोड़े–"ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्" ।। १ ।। **ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ सूर्याय नमः ।** "ॐ इमं देवाऽअसपत्न ठं० सुवद्धम्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते ज्जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विशऽएषवो मीराजा सोमोऽस्माकम्ब्राह्मणाना ७ँ राजा" ।। २ ।। **ॐ भूर्भुवः स्वश्चन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ । चन्द्राय नमः ।** "ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् । अपा ७ँ रेता ७ँ सिजिन्वति" ।। ३ ।। **ॐ भूर्भुवः स्वर्भौम इहागच्छ इह तिष्ठ । भौमाय नमः** ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्ते स ठं० सृजेथामयञ्च । अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत" ।।४।। **ॐ भूर्भुवः स्वः बुध इहागच्छ इह तिष्ठ । बुधाय नमः ।** "ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्य्योऽअर्हा द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्" ।। ५ ।। **ॐ भूर्भुवः स्वः बृहस्पते इहा गच्छ इह तिष्ठ । बृहस्पतये नमः ।** "ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमि-

---

१ **उत्पलपरिमले** —"कार्यारम्भेषु सर्वेषु प्रतिष्ठास्वध्वरेषु च । नववेश्मप्रवेशे च गर्भाधानादि कर्मसु । आरोग्यस्नानसमये संक्रान्तौ रोगसंभवे ।। अभिचारे च यः कुर्याद् ग्रहपूजां विधानतः । सोऽभीष्टफलमाप्नोति निर्विघ्नेन न संशयः" ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

न्द्रियं व्विपान ठं० शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोऽमृतम्मधु" ।। ६ ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्र इहागच्छ इह तिष्ठ । शुक्राय नमः । "ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शँयोरभिस्रवन्तु नः" ।। ७ ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः शनैश्चर इहागच्छ इह तिष्ठ । शनैश्चराय नमः । "ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता" ।। ८ ।। **ॐ भूर्भुवः स्वः राहो इहागच्छ इह तिष्ठ । राहवे नमः ।** "ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे । समुषद्भिरजा यथाः" ।। ९ ।। **ॐ भूर्भुवः स्वः केतो इहागच्छ इह तिष्ठ । केतवे नमः ।** "ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ ठं० समिमं दधातु । विश्वेदेवा सऽइहं मा दयन्ता मो म्प्रतिष्ठ" ।।१०।।
इत्यावाह्य–

"ॐ सूर्य्यादि ग्रहेभ्यो नमः" । पाद्यादि षोडशोपचार पूजन कर प्रार्थना करे ।

"ॐ ब्रह्मामुरास्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च । गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु" ।। १ ।।
अनया पूजया सूर्य्यादिग्रहाः प्रीयंताम् ।

कलशस्थापन प्रयोगः

कलश स्थापन के स्थानमें पूजनके पहिले ईशान कोणमें चावलादि से अष्टदल बनाकर उस पर अव्रण कलश स्थापित करना चाहिये । यजमान और वर पृथ्वीको सीधे हाथसे स्पर्श करे– "ॐ मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञम्मिमिक्षताम् । पिप्पृतान्नो भरीमभिः" ।। १ ।।

कुछ धान्य कलश के नीचे छोड़े

"ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणायत्वो दानायत्वा व्यानायत्वा दीर्घामनु प्रसितिमायुषेधां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः । प्रति गृब्भणात्वच्छिद्रेणपाणिना चक्षुषे त्वा महीनाम्पयोसि" ।। २ ।।

धान्यपर कलश रखे

"ॐ आजिघ्र कलशं मह्यात्वा विशन्त्विन्दवः पुनरूर्ज्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्रयिः" ।। ३ ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जल कलशमें छोड़े

"ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्य ऽऋत सदन्न्यसि । व्वरुणस्यऽऋतसदनमसि व्वरुणस्यऽ–ऋतसदन-मासीद" ।। ४ ।।

गन्ध कलशमें छोड़े

"ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करिषिणीम् । ईश्वरीं सर्व-भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्" ।। ५ ।।

सर्वौषधी कलशमें छोड़े

"ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्य स्त्रियुगम्पुरा । मनैनु बभ्रूणा-मह ठं० शतं धामानि सप्त च" ।। ६ ।।

दूर्वा कलशमें छोड़े

"ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि । एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च" ।। ७ ।।

पञ्चपल्लव[1] (आम, वट, पीपल, गूलर और पलाश) कलशमें छोड़े

"ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो व्वसतिष्कृता । गोभाजऽइत्कि-लासथ यत्सनवथ पूरुषम्" ।। ८ ।। **सप्तमृत्तिका[2] (अश्व, गज, नदी, बांबी, राजद्वार, गोशाला और चौरास्तेकी) कलशमें छोड़े–**

"ॐ स्योना पृथिवीनो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छानः शर्म्म सप्रथाः" ।। ९ ।।

पूगीफल (सुपारी) कलशमें छोड़े—

"ॐ याः फलनीर्याऽ अफलाऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः । बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व ठं० हसः" ।। १० ।।

---

१. पिम्पलस्य तथाऽऽम्रस्य प्लक्षस्योदुम्बरस्य च । वटस्य पल्लवा ज्ञेया पञ्च-पल्लव नामतः" ।।

ब्राह्मे — "अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः । पञ्चभङ्गा इति प्रोक्ता सर्वकर्मसु शोभना" ।।

२ "अश्वस्थानाद् गजस्थानात् राजद्वाराच्चतुष्पथात् । तडागाद् गोष्ठवल्मीकाद् हृताः सप्तमृदः स्मृताः" ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पञ्चरत्नानि[1]– (सोना, हीरा, नीलमणि, माणक, मोती)

कलशमें छोड़े—

"ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे" ॥ ११ ॥

स्वर्ण अथवा द्रव्य कलशमें छोड़—

"ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् । सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम" ॥ १२ ॥

वस्त्र या मोली कलशपर लपेटे—

"ॐ युवासुवासाः परिवीतऽआगात्सऽउश्रेयान् भवति जायमानः । तं धीरा सः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः" ।१३ ॥

दूर्वाकी पवित्री बनाकर कलशमें छोड़े—

"ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्" ॥ १४ ॥

पूर्णपात्र (चावलों से भरा पात्र) कलश पर रखे—

"ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणा वहाऽइषमूर्ज्जं ठं० शतक्रतो" ॥ १५ ॥

श्रीफल (लालवस्त्र लपेटकर नारियल) कलशपर रखे–

"ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्याव्वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण" ॥ १६ ॥

कलशमें वरुणका आवाहन करे–

यजमान और वर हाथमें चावल लेकर "ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो व्वरुणे हबोध्यु-

---

१ **का० पुराणे** — "कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम् । एतानि पञ्चरत्नानि रत्नशास्त्रविदो विदुः । अभावे सर्वरत्नानांहेम सर्वत्र योजयेत् ।"

विष्णुधर्मोत्तरे— "वज्रमाणिक्यवैडूर्यपुष्परागेन्द्रनीलकम् । पञ्चरत्नमिति ख्यातं नारदेन महर्षिणा" ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रुश ठं० समानऽआयुः प्प्रमोषीः" ।। १ ।। ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ ।

"ॐ वरुणाय नमः" पाद्यादि षोडशोपचार पूजन कर तीर्थोंका आवाहन करे ।

"ॐ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः । आयान्तु यजमानस्य **(मम शान्त्यर्थ)** दुरितक्षयकारकाः" ।। १ ।। **दक्षिण हाथकी अनामिका[1] से कलशाभिमन्त्रण करे ।**

कलशाभिमन्त्रणम्

"ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः । मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ।। १ ।। कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा । ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।। २ ।। अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः । अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा । आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः" ।। ३ ।।

प्रार्थना

"ॐ देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ । उत्पन्नोऽसि यदा कुम्भ! विधृतो विष्णुना स्वयम् ।। १ ।। त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः । त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ।। २ ।। शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः । आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ।। ३ ।। त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः । त्वत्प्रसादादिमं यज्ञ कर्तुमीहे जलोद्भव ! ।। सान्निध्यं कुरु मे देव ! प्रसन्नो भव सर्वदा" ।। ४ ।। **अनया पूजया अपाम्पतिवरुणः साङ्गः सपरिवारः प्रीयताम् ।**

रक्षाविधानम्

यजमान और वर अपने बायें हाथमें पीली सरसों, चावल, द्रव्य

---

१ **देवयाज्ञिकः**—"स्पृशन्त्वनामिकाग्रेण क्वचिदालोकयन्नपि । अनुमन्त्रणं सर्वत्र सदैवमनुमन्त्रयेत्" ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और तीन तारकी मोली लेकर दाहिने हाथ से ढँककर नीचे लिखे मन्त्र बोले--

"ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् । विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ।। १ ।। स्थानाधिपं नमस्कृत्य दिननाथं निशाकरम् । धरणीगर्भसंभूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् ।। २ ।। दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्य्यपुत्रं महाग्रहम् । राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ।। ३ ।। शक्राद्या देवताः सर्वा नमस्कृत्य मुनींस्तथा । गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम् ।। ४ ।। वशिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं महामुनिम् । व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्रविशारदम् ।।५।। विद्याधिका ये मुनय आचार्याश्च तपोधनाः । सर्वे ते मम यज्ञस्य रक्षां कुर्वन्तु विघ्नतः" ।। ६ ।।

बांये हाथमें से पीली सरसों तथा चावल लेकर नीचे लिखे मन्त्र बोलता हुआ दाहिने हाथसे सब दिशाओंमें छोड़े ।

"ॐ प्राच्यां रक्षतु गोविन्द आग्नेय्यां गरुडध्वजः । याम्यां रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैर्ऋते ।। ७ ।। वारुण्यां केशवो रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः । उत्तरे श्रीधरो रक्षेदैशान्यां तु गदाधरः । ८ ।। ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः । एवं दिक्षु च मां रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः ।। ९ ।। शंखो रक्षेच्च यज्ञाग्रे पृष्ठे खड्गस्तथैव च । वामपार्श्वे गदा रक्षेद्दक्षिणे तु सुदर्शनः ।। १० ।। उपेन्द्रः पातु ब्रह्माणमाचार्यं पातु वामनः । अच्युतः पातु ऋग्वेदं यजुर्वेदमधोक्षजः ।। ११ ।। कृष्णो रक्षतु सामानि ह्यथर्वं माधवस्तथा । उपविष्टाश्च ये विप्रास्तेऽनिरुद्धेन रक्षिताः ।। १२ ।। यजमानं सपत्नीकं कमलाक्षश्च रक्षतु । रक्षाहीनं तु यत्स्थानं तत्सर्वं रक्षताद्धरिः ।। १३ ।। यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा । स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ।। १४ ।। अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् । सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म (विवाहकर्म) समारभे" ।। १५ ।। **पश्चात् मोली गणेशजीके सामने रख देवे । फिर उस मोलीमें से गणपत्यादि समस्त देवताओंको चढ़ा-**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर ब्राह्मणोंके रक्षा बन्धन[1] करे। तत्रमन्त्रः—"ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणाश्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते" ॥ १ ॥

यजमान और वर ब्राह्मणोंके तिलक करे—

तत्रमन्त्रः— "ॐ युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परितस्थुषः रोचन्ते रोचनादिवि। युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसारथे शोणा धृष्णू नृवाहसा" ॥ १ ॥

यजमान और वरके राखी बांधे—

तत्रमन्त्राः— "ॐ यदाबध्नं दाक्षायणा हिरण्य ठं० शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्मऽआबध्नामि शत शारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्" ॥ १ ॥ "येन राजा बलिर्बद्धो दानवेन्द्रो महाबलः। तेनत्वामनुबध्नामि रक्षे माचल माचल। ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च रक्षां कुर्वन्तु ते सदा" ॥ २ ॥

यजमान और वरके तिलक करे—

तत्रमन्त्रः—"ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥१॥

यजमान और वर अपने-अपने हाथमें जल अक्षत लेकर संकल्प करे— "कृतैतद्रक्षाबन्धनकर्मणः साद्गुण्यार्थं ब्राह्मणेभ्यो मनसोद्दिष्टां दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये[2]"। **इति रक्षाविधानम्।**

विवाह विधानम्

कन्यापिता ऊर्ध्वजानु पूर्वाभिमुख बैठे हुए वरको सम्बोधन कर यह कहे— (ॐ साधु भवानास्तामिति प्रजापतिर्ऋषिर्ब्रह्मा देवता यजुश्छन्दो वरार्चने विनियोगः)

"ॐ साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तम्"।

---

१ सं० दीपके — "पादाङ्गुष्ठं समारभ्य केशान्तं च नरर्षभ। रक्षासूत्रं प्रकर्तव्य सर्वत्र शुभकर्मणि" ॥

२ दैवादिकत्वात् श्यनि — **उत्सृज्ये** इति स्यात् न तु **"उत्सृजे"** इति संकल्पान्ते विद्वद्भिर्विचारणीयम् ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वर कहे– "ॐ अर्चय" ।

पुरोहित– "ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः" ।

यजमान एक विष्टर[1] लेकर कहे "ॐ विष्टर प्रतिगृह्यताम्" ।

वर कहे– "ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामि" ।

वर दाता के पास से दोनों हाथोंसे चुपचाप विष्टर लेकर उत्तराग्रकर आसनके नीचे रख ऊपर बैठता हुआ यह मन्त्र बोले ।

(ॐ वर्ष्मोस्मीत्यथर्वण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो विष्टरो देवता उपवेशने विनियोगः) "ॐ व्वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः । इमं तमभि तिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति" ।।

पुरोहित कहे– "ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यम्" ।

यजमान कहे– "ॐ पाद्यं प्रतिगृह्यताम्" ।

वर कहे– "ॐ पाद्यं प्रतिगृह्णामि" ।

वर यजमानाञ्जलिसे पाद्यपात्र ग्रहणकर भूमिपर रख अञ्जलिसे पात्रके जलसे ब्राह्मण स्वयं[2] दक्षिणपाद[3] धोवे फिर वाम पाद धोवे । क्षत्रिय, वैश्य तो पहले वामपाद फिर दक्षिणपाद धोवे । वर मन्त्र पढ़े (ॐ विराजो दोहोऽसीति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्द आपो देवता पादप्रक्षालने विनियोगः) "ॐ व्विराजो दोहोऽसि व्विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै व्विराजो दोहः" ।।

यजमान दूसरा विष्टर लेकर–"ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः" । **इत्यन्येनोक्ते ।**

यजमान–"ॐ विष्टरः प्रतिगृह्यताम्" ।

---

१ **वेणी की तरह गूंथकर पच्चीस कुशाओं का विष्टर बनावे–** "पञ्चविंशति दर्भाणां वेण्यग्रेग्रन्थि भूषितम् । विष्टरं सर्वयज्ञेषु लक्षणं परिकीर्तितम्" ।।

२ अत्र वरः पाद्यं गृहीत्वा पादौ स्वयमेव प्रक्षालयेत् ।। यजमानेन पाद्यद्वानानन्तरं वर पादौ न स्पर्शनीयौ ।

रेणुः "विराज इति मंत्रेण तद् गृहीत्वोदकं वरः । पादौ प्रक्षालयेत्तूष्णीं स तेन स्वयमात्मनः" ।। अर्च्यः स्वयं प्रक्षालयति मंत्रलिङ्गाच्च इति हरिहर गदाधरः प्रभृतय ।

३ **पद्मपुराणे** — "ब्राह्मणो दक्षिणं पूर्वं पादं प्रक्षालयेत्तथा । क्षत्रादि प्रथमं सव्यमिति धर्मानुशासनम्" ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वर कहे–"ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामि"।

वर दाताके पाससे विष्टर उत्तराग्र पैरोंके नीचे रखे और यह मन्त्र बोले–

"ॐ व्वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः । इमं तमभि तिष्ठामि यो मा कश्चाऽभिदासति"।।

यजमान एक पात्रमें दूर्वा, अक्षत, फल, पुष्प, चन्दन और जल लेकर–"ॐ अर्घोऽर्घोऽर्घः" **इत्यन्येनोक्ते।**

यजमान कहे–"ॐ अर्घः प्रतिगृह्यताम्।"

वर कहे–"ॐ अर्घं प्रतिगृह्णामि"।

वर यजमानके हाथसे अर्घपात्रको ग्रहणकर मस्तक[1] के लगाय यह मन्त्र पढ़े– (ॐ आपःस्थ युष्माभिरिति मन्त्रस्य सिन्धुद्वीप ऋषिरनुष्टुप्छन्द आपो देवता अर्घग्रहणे विनियोगः) "ॐ आपःस्थ युष्माभिः सर्वान्कामानवाप्नवानि।"

पात्रस्थ जलको ईशान दिशामें छोड़ता हुआ यह मन्त्र पढ़े– (ॐ समुद्रं व इत्यादि मन्त्रस्याथर्वण ऋषिर्बृहती छन्दो वरुणो देवता अर्घजलप्रवाहे विनियोगः) "ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत। अरिष्टाऽस्माकं व्वीरा मा पराऽसेचि मत्पयः"।

यजमान आचमनीय पात्र लेकर—

"ॐ आचमनीयमाचमनीयमाचमनीयम्"। इत्यन्येनोक्ते।

यजमान कहे–"ॐ आचमनीयं प्रतिगृह्यताम्"।

वर कहे–"ॐ आचमनीयं प्रतिगृह्णामि"।

वर यजमानहस्तसे आचमनीय पात्र लेकर अपने बायें हाथमें रख दक्षिण हस्तसे एक बार आचमन करे और दो बार विना मन्त्र के।

(ॐ आमाऽगन्निति परमेष्ठी ऋषिर्बृहतीच्छन्द आपो देवता आचमने विनियोगः)

तत्रमन्त्रः–"ॐ आमाऽगन्यशसा स ठं० सृज व्वर्च्चसा। तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम्"।

---

१ "अर्घं शिरसाऽभिवन्द्य प्रागुदग्वा निनयनमिति **वासुदेवः**।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यजमान काँसीकी कटोरीमें शुद्ध[1] दधि मधु घृत मिलावे और दूसरी काँसीकी कटोरी से ढँक लेवे।

पुरोहित कहे—"ॐ मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः"।

यजमान कहे—"ॐ मधुपर्कः प्रतिगृह्यताम्"।

वर कहे—"ॐ मधुपर्कं प्रतिगृह्णामि"।

यजमान के हाथमें स्थित मधुपर्क को खोलकर वर देखे और यह मन्त्र पढ़े—

(ॐ मित्रस्येति प्रजापतिर्ऋषिः पंक्तिश्छन्दो मित्रो देवता मधुपर्कदर्शने विनियोग :)

"ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे"।

वर दोनों हाथोंसे ग्रहण करता हुआ यह मन्त्र पढ़े—

(ॐ देवस्यत्वेति ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता मधुपर्कग्रहणे विनियोगः)

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्प्रतिगृह्णामि"।

फिर बायें हाथमें धर ऊपरकी कटोरी हटाकर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली से तीन[2] बार चलाकर अनामिका और अंगूठे से कुछ-कुछ भूमि पर फेंकता हुआ यह मन्त्र पढ़े—

(ॐ नमः श्यावेति प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता मधुपर्कालोडने विनियोगः)

"ॐ नमः श्यावास्यायान्नशने यत्तऽआविद्धं तत्ते निष्कृन्तामि"।

---

१ **दक्षस्मृतौ**—"संशोधितं दधिमधु कांस्यपात्रे स्थितं घृतम्।
कांस्येनान्येन संछन्नं मधुपर्कमितीर्यते"॥

आपस्तम्बः—"सर्पिरेकगुणं प्रोक्तं शोधितं द्विगुणं मधु। मधुपर्कविधौ प्रोक्तं सर्पिषा च समं दधि"॥

दक्षस्मृतौ च—"पलमेकं घृतं चैव द्विपलं दधि चोच्यते। पलमेकं मधु कुर्यान् मधुपर्कविधिः स्मृतः"॥

२ **योगीयाज्ञवल्क्यः**—"संविधान करस्थं तं मन्त्रेणालोड्य निक्षिपन्। त्रिस्त्रिवारं माष्यवलान्मन्त्राभ्यासकृतिस्तथा"॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस मन्त्र से तीन बार प्रक्षेप कर फिर नीचे के मन्त्र से मधुपर्क भक्षण करता हुआ तीनों बार "यन्मधुनो" मन्त्र का पाठ करे–

ॐ यन्मधुन इति कौत्सऋर्षिर्मधुपर्को देवता जगती छन्दो मधुपर्कप्राशने विनियोगः)

"ॐ यन्मधुनो मधव्यं परम ठं० रूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि" ।।

फिर उच्छिष्ट शेष मधुपर्क पात्रमें कुछ द्रव्य रखवाकर नाई या और किसी से उठवाकर बाहर धरवा दे। फिर वर तीन बार आचमन कर तर्जनी मध्यमा अनामिकासे मुखका स्पर्श करे।

"ॐ वाङ्मऽआस्येअस्तु"।

तर्जनी अंगुष्ठसे नासिका स्पर्श करे–

"ॐ नसोर्मे प्राणःअस्तु"।

अनामिका अंगुष्ठसे नेत्रोंका स्पर्श करे—

"ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुः अस्तु"।

मध्यमा अंगुष्ठसे कानों का स्पर्श करे—

"ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु"।

हाथके अग्रभाग से दोनों बाहुओंका स्पर्श करे—

"ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु"।

दोनों हाथों से जंघाओं का स्पर्श करे—

"ॐ ऊर्वोर्मे ओजः अस्तु"।

दोनों हाथोंसे सम्पूर्ण अङ्गोंका स्पर्श करे—

"ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु"।

यजमान वर के साथ दूर्वादल पकड़कर तीन बार यह कह–

"ॐ गौर्गौर्गौः"।

वर यह मन्त्र पढ़े–(ॐ मातारुद्राणामिति वाम देव ऋषिर्यजुश्छन्दो गौर्देवता अभिमन्त्रणे विनियोगः)

"ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूना ९ं स्वसाऽऽदित्यानाम मृतस्य नाभिः। प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मागामनागामदितिं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

व्वधिष्ट । मम (स्वस्य) चाऽमुष्य (अमुक शर्मणो यजमानस्य) च पाप्मा हतः ।" "ॐ उत्सृजत तृणान्यत्तु" । उच्चस्वरसे यह कहकर दूर्वादल (तृण) को ईशान[1] कोणमें छोड़ दे और गोदान का सङ्कल्प करे ।

अत्राऽऽचारात् गोदानम् ।

ततो देशकालौ संकीर्त्य– "मधुपर्कोपयोगिनो गोरुत्सर्गकर्मणः साद्गुण्यार्थं गोनिष्क्रयीभूतमिदं (गोतृप्त्यर्थं [2]तृणनिष्क्रय द्रव्यं वा) द्रव्यममुकगोत्राय अमुकशर्मणे [3]ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज्ये" ।

"ॐ स्वस्ति" । ब्राह्मण कहे ।

अथाग्निस्थापनम्

ततो वरो वरानुमत्याऽन्यो ब्राह्मणो वा तुषकेशशर्करादिरहितायां हस्तमात्रपरिमितायां वेदिकायां चतुरस्रां भूमिं कुशैः[4] परिसमुह्य, तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकाभ्यामुपलिप्य स्रुवेण (स्फ्येनवा) प्रागग्रप्रादेशमात्रमुत्तरोत्तर क्रमेण त्रिरुल्लिख्य, उल्लेखनक्रमेणा-

---

१ "विधाय वाऽपि गां कौशीं विधिं तत्र समाप्य च । गामुद्धृत्य च तां कौशीमीशान्यां तान् कुशान् क्षिपेत्" ।

गृह्यसूत्रकारेणात्र गवालम्भनमुत्सर्जनं चोक्तम् । तत्र गवालम्भनस्य कलौ निषेधश्चोक्तः—

"अश्वालम्भं गवालम्भं संन्यासं पलपैतृकम् ।
देवराच्च सुतोत्पत्तिः कलौ पञ्च विवर्जयेत्" ।।
इति प्रतिषेधादुत्सर्जनं वरम् ।

सुमन्तुः– "ऋषिप्रणीतं न कलौ गोहत्याय समम् । वाचापि गोहिनोम्युक्त्वा प्रायश्चित्तं समाचरेत । तेनैवावहितो मन्त्रे पूर्वपक्षः कलौयुगे । गां च साक्षात्समानीय यथा विधिं समुत्सृजेत् । गोसमुत्सर्जनाशक्तौ विप्रमानीय तत्र वै । ततश्च गौर्गौरित्यादितस्योपरि विधिं चरेत् । मातेत्यादि पठित्वा च भक्ष्यं दत्वा समुत्सृजेत् ।"

२ उत्सर्जनपक्षे गवे तृणदानमिति विश्वनाथभाष्ये ।

३ "यज्ञकर्मणि या धेनुर्व्रतधेनुस्तथैव च । मधुपर्के च या धेनुर्या धेनुः कर्मसिद्धये एतत्प्रतिग्रहे विप्रे प्रायश्चित्तं न विद्यते ।"

४ "त्रिभिर्दर्भैः पांसूनपसार्य्येति हरिहरः ।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[1]नामिकाङ्गुष्ठेन मृदमुद्धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य, कांस्यपात्रयुग्मेन सम्पुटीकृत्य अग्निकोणादग्निमानीय, स्थण्डिलस्याग्नेय्यां दिशि निधाय, नैर्ऋत्यां दिशि किञ्चिदामात्[2] क्रव्याद्रूपमङ्गारद्वयं परित्यज्य शेषमग्निं वेदीमध्ये वाग्यत :— "ॐ अग्निं दूतं पुरो दध हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँऽआसादयादिह" ।। १ ।।

इस मन्त्र से योजकनाम[3] की अग्नि को वेदी पर स्थापन करे और समिधा (लकड़ी) अग्निरक्षार्थ रखे। जिन कांसीकी कटोरियोंमें अग्नि लावे उनमें जल अक्षत[4] छोड़ दे।

फिर कौतुकागार से वर अथवा मामा या और कोई कन्याको मण्डपमें लाकर वरके दक्षिण[5] की तरफ चौकी पर बैठावे। कन्याके सेवरा[6] बांधे, कन्या के हाथ से "गणपत्यादि देवताओं" की पूजा कराकर हाथमें राखी बांधे तिलक करे।

यजमान हाथमें जल लेकर संकल्प करे—

"कन्यादानकर्मणः पूर्वाङ्गत्वेन वराय वस्त्रचतुष्टयं सम्प्रददे"।

कन्या पिता वर को चार वस्त्र देवे। वर उन वस्त्रों में से दो वस्त्र कन्या के लिये देवे और दो वस्त्र स्वयं धारण करे। पहले वधु के लिये

---

१ "अङ्गुष्ठः पुष्टिदः प्रोक्तोऽनामिका धनदायिनी। द्वाभ्यां समुद्धृता रेखाः शुभदा वरकन्ययोः। पासूनादाय रेखात आलेखनं यथाक्रमम्। अनामिकाङ्गुष्ठेन च प्रक्षेपस्तु बहिर्भवेत्" ।।

२ "सम्पुटेनाग्निमानीय स्थाप्याग्नेर्दिशि कुण्डतः।
"आमक्रव्यभुजौ तस्मात् त्यक्त्वा कुण्डे विनिक्षिपेत् ।।"

आदावग्नि कुण्डस्य स्थडिलस्य वा मध्य एवाऽग्निकोणे निधाय तत्रैव आमात् क्रव्याद्रूपमङ्गारद्वयं परित्यज्य शेषमग्निं मध्ये स्थापयेत्।

३ "विवाहे योजकः स्मृतः।"

४ "अग्निमानीय पात्रे तु प्रक्षिपेदक्षतोदकम्। यद्येवं नैव कुर्वीत यजमान भयावहम्" ।।

५ "वरस्य दक्षिणे भागे प्राङ्मुखीमुपवेशयेत्"।

६ मेधातिथिः—"पृथङ्मातृजयोः कार्ये विवाहस्त्वेकवासरे। एकस्मिन्मण्डपे कार्यः पृथग्वेदिकयोस्तथा।

पुष्पपट्टिकयोः कार्यं दर्शनं न शिरस्थयोः। भगिनीभ्यामुभाभ्यां च यावत्सप्तपदी भवेत्" ।। **इति वचनात्पुष्पपट्टिका (सेवरा) बन्धनमपि शास्त्र लिखितम्।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अधोवस्त्र देता हुआ वर[1] मन्त्र पढ़े—

(ॐ जरां गच्छेति मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वासो देवता अधोवस्त्रपरिधाने विनियोगः)

"ॐ जरां गच्छ परिधत्स्व वासो भवाऽऽकृष्टीनामभिशस्ति पावा। शतं च जीव शरदः सुवर्च्चा रयिं च पुत्राननु संव्ययस्वाऽऽयुष्मतीदं परिधत्स्व व्वासः"।

फिर उत्तरीय (ओडणा) वस्त्र कन्याके लिये देता हुआ वर मन्त्र पढ़े–

(ॐ या अकृन्तन्निति मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिर्जगतीछन्दो विधात्र्यो देवता उत्तरीय धारणे विनियोगः)

"ॐ या अकृन्तन्नवयन् याऽअतन्वत । याश्चदेवीस्तन्तूनभितो ततन्थ। तास्त्वा देवीर्जरसे संव्ययस्वाऽऽयुष्मतीदं परिधत्स्व व्वासः"

वर स्वयं वस्त्र (धोती) पहिने—

(ॐ परिधास्यै इति मन्त्रस्याथर्वण ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दस्तन्तवो देवता वासः परिधाने विनियोगः)

तत्रमन्त्र–"ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घयुत्वाय जरदष्टि रश्मि। शतं च जीवामि शरदः पुरूची रायस्पोषमभि संव्ययिष्ये "।

"यशसा" इस मन्त्रसे उत्तरीय (दुपट्टा) धारण करे—

(ॐ यशसेति मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिर्जगतीछन्दो विधात्र्यो देवता उत्तरीयधारणे विनियोगः)

"ॐ यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती। यशोभगश्च मा विदद्यशो मा प्रतिपद्यताम्"।

---

१ रेणु :— "कन्यावस्त्रपरीधाने तथैव चोत्तरीयके। तथा समीक्षकाले तु पितुर्निष्क्रमणे गृहात्। अश्मनो रोहणे चैव हस्तग्राहे तथैव च। तथा सप्तपदे चैव वधूमुर्ध्न्यं भिषेचने। हृदयालम्भने चैव तथैव चाभिमन्त्रणे। दृढपुरुषोत्थापने च एतान्मन्त्रान् वरः पठेत्"॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वस्त्रपरिधानानन्तर वर कन्या दोनों दो बार आचमन[1] करें। यजमान दोनों को आज्ञा देवे कि परस्पर देखें—

"परस्परं [2]समञ्ज्यातम्"।

वर कन्या को देखता हुआ मन्त्र पढ़े—

(ॐ समञ्जन्त्विति मन्त्रस्याथर्वण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो विश्वेदेवा देवता मैत्रीकरणे विनियोगः)

"ॐ समञ्जन्तु विश्वेदेवाः समापो हृदयानि नौ। सम्मातरिश्वा सन्धाता समुदेष्ट्री दधातु नौ"।

कन्या पिता द्रव्यपुष्पाक्षतादि[3] कन्याके वस्त्रमें बांध वरके वस्त्रमें बांध देवे और यजमान स्वयं भी अपनी पत्नीके साथ ग्रन्थीबन्धन (गंठजोड़ा) करे। आचार[4] से कन्याका हस्तलेपन (पीला हाथ) करे द्रव्य हाथमें रक्खे। पुरोहित शाखोच्चारण[5] करे।

---

१ वस्त्र परिधानानन्तरं द्विराचमनं विधानपारिजातके योगियाज्ञवल्क्य आह—"स्नात्वा पीत्वा क्षुते सुप्ते भुक्त्वा रथ्योपसर्पणे। आचान्तः पुनराचामेद्वासोविपरिधाय च"।

"स्त्रियास्तु नाचमनं किन्तु दक्षिणकर्णस्पर्शः" इति सं० र०। शिष्टास्तु—"क्षुते निष्ठीविते वान्ते परिधानेऽश्रुमोचने। कर्मस्थ एव नाचामेद्दक्षिणं श्रवणं स्पृशेत्॥" इति सर्वत्र श्रवणमेव स्पृशन्ति।

२ अत्र—"समञ्जेथाम्" इति प्रयोगो न समीचिनः, अञ्जते, परस्मै पदित्वात्॥

३ अत्र कन्यावरयोर्ग्रन्थिबन्धनमाचारप्राप्तं कन्यादानात्पूर्वमेव भवति। तथा च योगियाज्ञवल्क्य :—

"कन्यका सुदशे पार्श्वे द्रव्यपुष्पाक्षतादिकम्। निक्षिप्य तच्च सम्बध्य वरवस्त्रेण योजयेत्। वस्त्रैः संयोज्य तौ पूर्वं कन्यादानं समाचरेत्। दानेन युक्तयोः पश्चाद्विदध्यात्पाणिपीडनम्।"

४ दक्ष स्मृतौ—"वेदधर्मान् देशधर्मान् कुलधर्मांश्च शाश्वतान्। धर्मशास्त्राद्विरुद्धांश्च न त्यजेज्ज्ञानदुर्बलः"। "कुलस्य देशस्य च चित्तवृत्तिर्न खंडनीया विदुषा कदाचित्। यो लोकशास्त्रानुमतः सधर्मो लोकोवलीयांस्तु द्वयोर्विरोधे। शास्त्रार्थाद्बलवान् शिष्टाऽऽचारोत्र बहुसम्मतः। शिष्टाचारस्य कालेन विलुप्ताः श्रुतयो यतः"॥

५ अत्र च सापिण्ड्यनिर्णयार्थमेव गोत्रमुच्चारयन्ति मङ्गलाष्टक शाखोच्चारणादिकं तु लाजहोमात्पूर्वमेव कुर्वन्ति मरुदेशीयाः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कन्यादानम्

कन्यादाता[1] स्वदक्षिणभागमें[2] अपनी पत्नीको बैठाकर वरक पास उदङ्मुख बैठ आचमन प्राणायाम कर हाथमें दूर्वा, चावल, सुपारी, पुष्प, चन्दन, द्रव्य और जल लेकर शुभ लग्नमें कन्यादान का संकल्प करे– "ॐ दाताऽहं वरुणो राजा द्रव्यमादित्य दैवतम् । वरोऽसौ विष्णुरूपेण प्रतिगृह्णात्वयं विधिः" ।। १ ।।

"हरिः ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः– ॐ तत्सदद्यैतस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे, तदादौ श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे, जम्बूद्वीपे भरतखण्डे तत्रापि परमपवित्रे भारत वर्षे, आर्यावर्त्तान्तर्गतेऽमुकदेशे **(मरुसंज्ञके देशे)** अमुकक्षेत्रे **(कुमारिका नाम क्षेत्रे)** अमुक नगरे **(राजस्थान मण्डलान्तर्गत रतनगढनाम्नि नगरे)** श्री गङ्गायमुनयोरमुकभागे **(पश्चिमे भागे)** नर्मदाया अमुकभागे **(उत्तरे भागे)** चान्द्रसंज्ञकानां प्रभवादिषष्टिसम्वत्सराणां मध्येऽमुकनाम्नि सम्वत्सरे, श्रीमन्नृपविक्रमार्कसमयादमुकसंख्यापरिमिते विक्रमाब्दे, अमुकायने, अमुकर्तौ, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवासरे, अमुकगोत्रः अमुकशर्म्माऽहं[3] **(वर्मा गुप्तोऽहं वा) सपुत्रस्त्री बान्धवोऽहं**–मम अस्या अमुकनाम्न्याः कन्याया अनेन वरेण धर्मप्रजया उभयोर्वंशयोर्वंशवृद्ध्यर्थं, तथा च मम समस्तपितॄणां निरतिशयानन्द ब्रह्मलोकावाप्त्यादि कन्यादानकल्पोक्तफलाऽऽवाप्तये अनेन वरेण

---

१ **याज्ञवल्क्यः**— "पिता पितामहो भ्राता सकुल्यो जननी तथा । कन्याप्रदः पूर्वनाशेप्रकृतिस्थः परः परः । अप्रयच्छन्समाप्नोति भ्रूणहत्यामृतावृतौ" ।।

प्रकृतिस्थोऽविक्षिप्तचित्तः । सकुल्यः प्रत्यासत्तिक्रमेणादौ पितृकुलस्थस्तदभावे मातामहकुलस्थः सर्वाभावे जननी ।

२ **स्मृतिसंग्रहे**—"व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थी सह भोजने । व्रते दाने मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे । **स्मृत्यन्तरे च**—"गर्भाधाने विवाहे च ऋद्धौ पुंसवने तथा । सीमन्ते धर्मकार्ये च पत्नी कुर्याच्च दक्षिणे" ।।

३ **हेमाद्रौ** —"शर्म्मान्तं ब्राह्मणस्योक्तं वर्म्मान्तं क्षत्रियस्य तु । गुप्तान्तं चैव वैश्यस्य दासान्तः शूद्र एव हि" ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अस्यां कन्यायामुत्पादयिष्यमाणसंतत्या द्वादशावरान् द्वादशपरान्[1] पुरुषान् आत्मानं च पवित्रीकर्तुं श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतये [2]ब्राह्मविवाह विधिना [3]कन्यादानमहं करिष्ये" ।

यजमान कन्या का स्पर्श कर प्रार्थना करे—

ॐ "कन्यां कनकसम्पन्नां कनकाभरणैर्युताम् । दास्यामि विष्णवे तुभ्यं ब्रह्मलोक जिगीषया ।। १ ।। विश्वम्भरः सर्वभूताः साक्षिण्यः सर्वदेवताः । इमां कन्यां प्रदास्यामि पितॄणां तारणाय च" । २ ।।

यजमान वर के हाथ में सुप्रोक्षणादि करे—

"ॐ शिवा आपः सन्तु" इति जलम्। (सन्तु शिवा आप इति प्रतिवचनम् ।)

"ॐ सौमनस्यमस्तु" इति पुष्पम्। अस्तु सौमनस्यम् । **"ॐ अक्षतं चारिष्टं[4] चास्तु" । इत्यक्षतान्।** अस्त्वक्षतमरिष्टं च । **"ॐ गन्धाः पान्तु" इति चन्दनम्।** सौमङ्गल्यं चास्तु । **"ॐ अक्षताः पान्तु"** आयुष्यमस्तु । **"ॐ पुष्पाणि पान्तु" सौश्रियमस्तु ।**

"ॐ यत्पापं यद्रोगो[5]ऽशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु" ।

यजमान कुछ जल पृथ्वी पर छोड़े ।

---

१ "द्वादशपूर्वान् द्वादशापरानात्मानं च कन्याप्रदः पुनाति" । **(आ० गृ० १–६)**

२ **मनुः**—"आच्छाद्य चार्चयित्वा च श्रुतिशीलवते स्वयम् । आहूय दानं कन्याया ब्राह्मो धर्मः प्रकीर्तितः" ।।

३ **सूतसंहितायाम्**— "अश्वमेधः क्रतुर्यथा सर्वयज्ञेषु चोत्तमः । एवं सर्वेषु दानेषु कन्यादानं प्रशस्यते" ।।

सं० ग०—"यावन्ति सन्ति रोमाणि कन्यायाश्च तनौ पुनः । तावद्वर्षसहस्राणि ब्रह्मलोके महीयते" ।।

अत्र कन्याविक्रयिणो निन्दामाह यमः—

"कन्या विक्रयिणो मूर्खारहः किल्विषकारिणः । पतन्ति नरके घोरे दहन्त्या सप्तमं कुलम् ।।"

भविष्य पुराणे च— "कुम्भीपाके महाघोरे यावच्चन्द्रार्कतारकम् । पच्यते स्वकुलैः सार्द्धं कन्याविक्रय कारकः" ।।

४ **गो० गृ०** — "अरिष्टं सूतिका गृहम् ।"

५ **अत्र रोगमित्यप पाठः** । रोगशब्दस्य घञन्तत्वेन पुंलिङ्गत्वात् रोग इति पाठस्यैव साधीयस्त्वात् ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कन्यादाता [1]शंखमें दूर्वा, अक्षत, फल, पुष्प, चन्दन, द्रव्य और जल लेकर देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं **(वर्मा गुप्तोऽहं वा) सपुत्रस्त्रीबान्धवोऽहं**

"मम समस्तपितृणां निरतिशयानन्द ब्रह्मलोकावाप्त्यादि कन्यादान कल्पोक्तफलाऽवाप्तये अनेन वरेण अस्यां कन्यायामुत्पादयिष्यमाणसन्तत्या द्वादशावरान् द्वादशपरान् पुरुषानात्मानं च पवित्रीकर्तुं श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतये, अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणः [2]प्रपौत्राय, अमुकगोत्रस्यामुक शर्मणः **पौत्राय**, अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणः **पुत्राय**, अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणः **प्रपौत्रीम्**, अमुकगोत्रस्यामुकर्मणः **पौत्रीम्**, अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणः **पुत्रीम्** **(इस गोत्रोच्चारणको तीन बार पढ़े)**

अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे वराय श्रीधररूपिणे कन्यार्थिने अमुकगोत्रोत्पन्नाममुकनाम्नीमिमां[3] कन्यां श्रीरूपिणीं वरार्थिनीं यथाशक्त्यलंकृतां सोपस्करां प्रजापतिदैवतां देवाऽग्निगुरुब्राह्मणसन्निधौ अग्न्यादि साक्षिकतया प्रजोत्पादनार्थं **(सह धर्माचरणाय)** पत्नीत्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे" ।

यजमान खड़ा[4] होकर शंखस्थ जल दक्षिणा और कन्याका दाहिना

---

१ **बृहत्पाराशरः**—"कन्यादान समारम्भे दाता शंखे समाददेत् । दूर्वाक्षतफलं पुष्पं चन्दनं जलमेव च ।।"

अङ्गिराश्च—"विना दर्भैश्च यत्स्नानं यच्च दानं विनोदकम् । असंख्यातञ्च यज्जाप्यं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ।।"

२ **सं० गणपतौ**—"नान्दीमुखे विवाहे च प्रपितामहपूर्वकम् । वाक्यमुच्चारयेत् प्राज्ञो ह्यन्यत्र पितृपूर्वकम् । एतदेव त्रिरुच्चार्य कन्यां दद्याद्यथाविधि" ।।

ऋष्यशृङ्गोऽपि — "वरगोत्रं समुच्चार्य प्रपितामहपूर्वकम् । नामसंकीर्तयेद्विद्वान् कन्यायाश्चैवमेव हि ।।"

३ **वि० ध०**— "द्रव्यस्य नाम गृह्णीयाद् ददामीति ततो वदेत् । तोयं दद्यात्तथा दाता दाने विधिरयं स्मृतः" ।।

४ **विधानपारिजाते बृहस्पतिः**— "कन्यादानं च गोदानमुत्तराघारमेव च । प्रातः सन्ध्याजपं चैव तिष्ठन्नेव हि कारयेत् ।।"

सं० ग०—"चतुष्पादं गृहं कन्यां छत्रं दासीं रथं तरुम् । तिष्ठन्नेतान् द्विजो दद्याद् भूम्यादीनुपविष्य च" ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हाथ वर के दाहिने हाथमें देवे। फिर वर –"ॐ [1]स्वस्ति"। उच्चारण कर कन्याके हस्तको वर मन्त्रोच्चारण करता हुआ ग्रहण करे–

"ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रति गृह्णातु"। "ॐ कोऽदात्कस्माऽअदात्कामोऽदात्कामायादात्। कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते"।

दाता प्रार्थना करे—

गौरीं कन्यामिमां विप्र ! **(पूज्य !)** यथाशक्ति विभूषिताम् ! गोत्राय शर्मणे तुभ्यं दत्तां विप्र ! समाश्रय ।। **(पत्नीत्वेन मया दत्तां गृहाण च समाश्रय)** ।। १ ।। कन्ये ममाग्रतो भूयाः कन्ये मे देवि पार्श्वयोः। कन्ये मे पृष्ठतो भूयास्त्वद्दानान्मोक्षमाप्नुयाम् ।। २ ।। कन्या लक्ष्मीः समाख्याता वरो नारायणः स्मृतः। तस्मात्कन्या प्रदानेन कृष्णो मे प्रीयतामिति ।। ३ ।। मम श्रेष्ठकुले जाता पालिता वत्सरैः शुभैः। तुभ्यं विप्र ! **(पूज्य)** मया दत्ता पुत्रपौत्रविवर्धिनी ।। ४ ।।

यजमान कन्यादानप्रतिष्ठार्थं [2]सुवर्णादिदक्षिणा हाथमें लेकर सङ्कल्प करे—

"अद्य कृतैतत्कन्यादानकर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थमिदं सुवर्णागुलीयकमग्निदैवतं **(दास्यमानां धेनुं वा तन्मूल्योपकल्पितं द्रव्यं)** अमुक गोत्राय अमुकशर्मणे वराय दक्षिणात्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे"।

दक्षिणा वर के हाथ में देवे।

वर कहे –"ॐ स्वस्ति"।

यहाँ वर भी कन्यादान प्रतिग्रहजनित दोष निवारणार्थ गोदान करे—

---

१ **हेमाद्रौ दानखंडे** —"प्रतिग्रहीता सावित्रं सर्वत्रैवानुकीर्त्तयेत्। ततस्तु कीर्तयेत्सार्द्धं द्रव्येण द्रव्यदेवताम्। ततः समापयेत्पश्चात्कामस्तुत्या प्रतिग्रहम्। तदन्ते कीर्तयेत्स्वस्ति प्रतिग्रहविधिस्त्वयम्" ।।

२ **स्मृतितत्वे व्यास** :—"श्रद्धान्वितः शुचिर्दान्तो दानं दद्यात्सदक्षिणम्। अदक्षिणन्तु यद् दानं तत्सर्वं निष्फलं भवेत्। दक्षिणाभिरुपेतं हि कर्म्म सिद्धयति मानवे। सुवर्णमेव सर्वासु दक्षिणासु विधीयते" ।।

सुवर्णं काञ्चनमात्रं देयं नपुंसकनिर्देशात्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"मम गृहीतकन्यादानप्रतिग्रहजन्यदोषपरिहारद्वारा[1] शुभफल-प्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थञ्च इदं गोनिष्क्रयीभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्र-दैवतममुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे" ।

ब्राह्मण के हाथ में देवे ।

ब्राह्मण कहे—"ॐ स्वस्ति"

वर वधू का हाथ पकड़े हुए यह मन्त्र बोले—

"ॐ यदैषि मनसा दूरं दिशोऽनु पवमानो वा । हिरण्यपर्णो वैकर्णः स त्वा मन्मनसां करोतु अमुकिदेवि ।"

वधूका[2] नाम बोलता हुआ अग्नि के पास आवे ।

यहाँ वेदी के दक्षिण दिशा में एक दृढ़ पुरुष (ब्राह्मण) जल का कलश (लोटा) कन्धे पर धरकर चुपचाप अभिषेक पर्य्यन्त खड़ा होवे । लोटे में दक्षिणा गेर देवे ।

यजमान कहे—"ॐ परस्परं समीक्षेथाम् ।"

वर इन मन्त्रों से वधू को देखे और मन्त्र पढ़े—

"ॐ अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्च्चाः। वीर-सूर्देवकामा स्योना शन्नो भव द्वीपदे शं चतुष्पदे" ।। १ ।।

"सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविदऽउत्तरः । तृतीयोऽग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः" ।। २ ।।

"सोमोऽदद्गन्धर्वाय गन्धर्वोऽदद्ग्नये । रयिञ्च पुत्रांश्चादाद-ग्निर्मह्यमथोऽइमाम्" ।। ३ ।।

---

१ अत्र केचन कन्यादानग्रहणजन्यप्रत्यवायं नाभिमन्यन्ते, अतएव कन्याप्रतिग्रह-लब्धप्रमोदवृद्धये गोदानं करिष्ये इति संकल्पयन्ति तन्न समीचीनम् । शास्त्रेषु कन्यादान प्रतिग्रहस्यापि प्रत्यवायश्रवणात् । ननु सर्वत्र प्रतिग्रहो ब्राह्मणस्यैवोक्तो न तु क्षत्रियादेरिति चेन्न सर्ववर्णानां कन्याप्रतिग्रहे दोषाभावस्योक्तत्वात् ।

तथा च सूर्य्यार्णवे—"कन्याप्रतिग्रहः सर्ववर्णानां नातिदोषकृत् । भवेद्यदि च तं कृत्वा भूरि भूरिप्रदो भवेत् । कन्याप्रतिग्रहं कृत्वा ब्राह्मणस्तु यथाविधि । कर्म्मणोऽन्ते ततः कुर्यात् भूरिदानं दृढव्रतः ।। कन्या प्रतिग्रहस्तस्मात् शाम्यते भूरिदानतः । सर्वैरपि तथा कृत्वा कन्यादानप्रतिग्रहम् ।। भाव्यन्नानान्नवसनभूमिदानपरैर्नरैः" ।।

२ "लक्ष्मीनाम्नीं त्वसौ स्थाने वधूनामादिशेद्वरः ।" इतिरेणुः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"सा नः पूषा शिवतमामेरय सा नऽऊरूऽउशती विहर। यस्यामुशन्तः प्रहरामशेपं यस्यामु कामा बहवो निविष्टचै" ।। ४ ।।

वर और वधू परस्पर निरीक्षण करें।

(तदनन्तर वर वधूको आगे कर अग्निकी प्रदक्षिणा) कर स्वदक्षिण[1] वधू को बैठा और स्वयं भी बैठ ब्रह्माका वरण करे।

ब्रह्मवरणम्

वर स्वदक्षिण हाथमें पुष्प, चन्दन, ताम्बूल, द्रव्य, वस्त्र और जल लेकर सङ्कल्प करे—

"अद्य कर्तव्यविवाह होमकर्मणि कृताकृतावेक्षणादि ब्रह्मकर्मकर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलद्रव्यवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे"।

ब्रह्मा कहे—"ॐ वृतोऽस्मि"।

ब्रह्मा के राखी बांधे और तिलक करे।

वर कहे—"यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदधरः प्रभुः। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम" ।। १ ।। **इति प्रार्थयेत्।**

वर कहे—"यथा विहितं कर्म्म कुरु"।

ब्राह्मण कहे—"यथाज्ञानं करवाणि"।

ततोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्वा तदुपरिप्रागग्रान्[2] कुशानास्तीर्य ब्रह्माणमग्निप्रदक्षिणक्रमेणानीय "अत्र त्वं मे ब्रह्मा भव" इत्यभिधाय कल्पितासने उपवेशयेत्।

तदभावे पञ्चाशत्कुशनिर्मितं वा स्थापयेत्।

(अग्नि से दक्षिण[3] शुद्ध आसन दे **(पत्ता धर)** उसके ऊपर पूर्वाग्र

---

१ **लध्वाश्वलायन स्मृतौ**— "दम्पती तु व्रजेयातां होमार्थं चैव वेदिकाम्। वरस्य दक्षिणे भागे तां वधूमुपवेशयेत्।।"

"प्रदक्षिणमग्निं पर्याणीयैके" (पार० गृ० १-५-१) इति वचनादत्र प्रदक्षिणं विधेयम्। अद्य वे तु इदं प्रदक्षिणं न प्रचलति तत्र कारणं न विद्म।

२ **ब्रह्मण आसनं त्रिभिः कुशैर्भवति, तथा चोक्तमग्निगुह्ये**— "ब्रह्माचार्यप्रणीता नामासनं च त्रिभिः कुशैः? न द्वाभ्यां नैकदर्भेण ऋषयो बहवो विदुः"।।

३ "दक्षिणतोऽग्नेरुदङ्मुखस्तूष्णीमास्ते ब्रह्माऽऽहोमात्प्रागग्रेषु कुशेषु"। (खा० गृ० १-१-२३)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुशाओं को रक्खे । फिर कुछ कुशाओं का ब्रह्मा बना कर अग्नि के प्रदक्षिणक्रम से लाकर स्थापित करे ।)

अथाऽऽचार्यवरणम्[1]

यजमान दक्षिण हाथमें पुष्प, चन्दन, ताम्बूल, द्रव्य, वस्त्र और जल लेकर—

"अद्य कर्तव्य विवाहहोमकर्मणि आचार्यकर्मकर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलद्रव्यवासोभिराचार्यत्वेन त्वामहं वृणे ।"

आचार्य कहे—"ॐ वृतोऽस्मि" ।

इसी प्रकार यजमान और वर ऋत्विक् होता का भी वरण करे ।

(यहाँ मरुदेशीय प्रथाके अनुसार पुरोहित मेंहदीका गोला बनाकर और दो पैसा रख कन्याके दक्षिण हाथ में धर वरके दक्षिण हाथको ऊपर रख नाल (मोली) से बांध वस्त्रसे ढक देवे ।)

कुशकण्डिका

ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमभागे प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् ।

(प्रणीतापात्रको आगे कर जलसे भर कुशाओंसे ढक ब्रह्माका मुख अवलोकन कर अग्निसे उत्तर कुशाओंके ऊपर रख देवे ।)

परिस्तरणम्[2]

ततः पूर्वादिदिक्षु अग्नेः परितस्त्रिभिस्त्रिभिश्चतुर्भिश्चतुर्भिर्वा

---

१ "यजमानः शुचिः स्नातः श्रद्धायुक्तो जितेद्रियः । पादशौचार्घवस्त्राद्यैराचार्यादीन् समर्चयेत् ।" **इति वशिष्ठवचनेन आचार्यादीनामपि वरणं कुर्यात् ।**

२ **प्र० – चिन्तामणौ**– "वह्नितस्तु परित्यज्य द्वादशाङ्गुलतो बहिः । परिस्तरणदर्भास्तु षोडश द्वादशापि वा ।।

"ईशानकोणमारभ्य पुनरीशानकोणगा । कुशैस्त्रिभिस्त्रिभिः कुर्यात्सव्येनाग्नेः परिस्तृतिः" **इति ।**

सूत्रेषु सर्वत्र दर्भैरिति बहुवचनश्रवणात् कपिञ्जलाधिकरणन्यायेन त्रित्वसंख्यैव ग्राह्या, न चतुष्ट्वादि । प्रथमातिक्रमे मानाभावात् अनवस्थाप्रसङ्गाच्च । अतस्त्रित्वसंख्यैव स्वीक्रियते याज्ञिकैः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुशैरुदगग्रैराग्नेयादीशानान्तम् । प्रागग्रैर्नैर्ऋत्यादाग्नेयान्तम् । उदगग्रैर्नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम् । प्रागग्रैर्वायव्यादीशानान्तम् । इति परिस्तरणं कृत्वा इतरथाऽऽवृत्ति[1] कुर्यात् ।

(पूर्वादि दिशाओंमें अग्निके चारों तरफ १२ या १६ कुशायें लेकर उदगग्र अग्निकोणसे ईशान तक ३-या ४ कुशायें रक्खे । फिर प्रागग्र नैर्ऋत्यकोणसे अग्नि कोणतक ३-या ४ कुशा रखें । उदगग्र नैर्ऋत्यकोण से वायव्यतक ३-या ४ कुशारक्खे । फिर प्रागग्र वायव्यसे ईशानतक ३-या ४ कुशा रक्खे । इस तरह परिस्तरण करके उसी क्रमसे उलटा हाथ लावे)

ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयम् । पवित्रार्थं साग्रमनन्तगर्भकुशपत्रद्वयम् । प्रोक्षणीपात्रम् । आज्यस्थाली । सम्मार्जनार्थं कुशत्रयम् । उपयमनार्थं कुशत्रयम् । समिधस्तिस्त्रः । स्रुवः । गव्यमाज्यम्[2] । पूर्णपात्रम्[3] (षट् पञ्चाशदधिकयजमानमुष्टिशतद्वयपरिमिततण्डुलाद्यन्नपूर्णम्) दक्षिणा[4] (कर्मोपयोगिनी हिरण्यादि दक्षिणा) वरो वा (गौर्ब्राह्मणस्य वरः) एतानि वस्तूनि पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशिक्रमेणाऽऽसादनीयानि ।

(अग्निसे उत्तर पश्चिम दिशामें पवित्रच्छेदनार्थ ३ कुशा। पवित्रके

---

१ **परिस्तरण – पर्यग्निकरण – पर्युक्षणादि कृते यत्र परिस्तरणादि समाप्तिस्तत्स्थानादप्रादक्षिण्येन परिस्तरणादि प्रारंभ स्थानं प्रति हस्तस्यानयनं कुर्यादित्यर्थः । दैवेषु कर्मसु यत्र प्रदक्षिणाऽऽवृत्तिर्विहिता तत्र तां कृत्वा तदवसाने एकमप्रदक्षिणं कुर्वन्ति सैव प्रत्यावृत्तिरितरथाऽऽवृत्तिरित्युच्यते ।**

पित्र्येकर्मणि तु अप्रदक्षिणावर्तनमेव विहितं तत्र तत् कृत्वा एकां प्रदक्षिणावृत्ति कुर्वन्ति सैव विपरीताऽऽवृत्तिरितरथाऽऽवृत्तिरित्युच्यते ।"

२ **कु० भाष्ये** — "उत्तमं गोघृतं ज्ञेयं मध्यमं महिषी घृतम् । अधमं छागली जातं तस्माद्गव्यं प्रशस्यते ।।"

३ **यज्ञपार्श्वे** — "अष्टमुष्टि भवेत्किञ्चित्किञ्चिदष्टौ च पुष्कलम् । पुष्कलानि च चत्वारि पूर्णपात्रं तदुच्यते ।"

पुरश्चर्यार्णवे च — "द्वात्रिंशत्पलमानेन निर्मितं ताम्रपात्रकम् । तण्डुलैस्तत्समापूर्य सहिरण्यं सदक्षिणम् । दद्याद्विप्राय तत्तुष्ट्यै पूर्णपात्रमितीरितम् ।।"

४ **पुरश्चर्यार्णवे** — "यथाशक्ति हिरण्यादि द्रव्यं वाथ गवादिकम् ।।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिये मध्यपत्र रहित २ कुशा। प्रोक्षणीपात्र। घृतके लिये पात्र। स्रुवा पोंछनेके लिये ३ कुशा। हाथमें रखने के लिये ३ कुशा। ३ प्रादेशमात्र समिधायें। स्रुवा। गोघृत। चावलों से भरा हुआ पूर्णपात्र १ ये चीजें पवित्रच्छेदन कुशाओंके पूर्व पूर्व स्थापन करे)

अथ तस्यामेव दिशि असाधारणवस्तून्युपकल्पनीयानि-तत्र शमीपत्रमिश्रा लाजाः, दृषदुपलम्, कुमारीभ्राता, शूर्पः, दृढपुरुषः। अन्यदपि तदुपयुक्तमालेपनादि द्रव्यम्।

(जांटीक पत्ते मिली हुई खील, पर्वत फल (**पत्थरकी लोडी**) कन्या का भाई, छाज, दृढ़पुरुष और कोई कामकी वस्तु मेहन्दी आदि सब स्थापन करे)

ततः पवित्रच्छेदकुशैः पवित्रे छित्त्वा, सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम्।[1]

ततः प्रोक्षणी पात्रस्य सव्यहस्ते करणम्। अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुद्दिङ्गनम्। प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणम्। प्रोक्षणीजलेन यथासादितवस्तुसेचनमग्निप्रणीतयोर्मध्ये सपवित्रं[2] **प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात्।**

(पवित्र छेदनकी तीन कुशाओंसे दो पत्र कुशाके पवित्रों के लिये काटे। कटी हुई कुशाओंका पवित्रा बना लेवे। सपवित्र हस्तसे प्रणीता के जलको तीन बार प्रोक्षणीमें डाल कर अनामिका और अंगूठेसे पवित्रे को उत्तराग्र पकड़ तीन बार प्रोक्षणीका उत्पवन करे। फिर प्रोक्षणीपात्रको बायें हाथमें ले अनामिका और अंगुष्ठसे उत्तराग्र पवित्र ग्रहण कर तीन बार ऊपरको उछाले। फिर प्रणीताके जलसे प्रोक्षणीका

---

१ **शौनकः**—उत्पुनीयात्पवित्राभ्यामापस्तूष्णीं त्रिरेवतु। "अङ्गुष्ठोपकनिष्ठिकाभ्यामुत्तानाभ्यां पाणिभ्यामुत्पुनाति॥" (**आश्व० गृ० १-३-३**)

"उत्तानेन तु हस्तेन प्रोक्षणं समुदाहृतम्।"

२ **अग्निगुह्ये**— "निदध्यात्प्रोक्षणीपात्रं सपवित्रमसञ्चरे। यदन्तरं प्रणीताग्न्योरसञ्चरस्तु स स्मृतः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रोक्षण करे। प्रोक्षणीके जलसे सब वस्तुओंको छीटें देकर अग्नि और प्रणीताके बीचमें प्रोक्षणीपात्रको रख देवे)

ततः आज्यस्थाल्यामाज्यं[1] निरूप्य [2]अङ्गारानुत्तरतोऽपोह्य तेषु आज्यस्थालीं संस्थाप्य अर्धश्रिते आज्ये तृणं प्रज्वलय्य आज्यस्य समन्तात्प्रदक्षिणं[3] भ्रामयित्वा बह्नौ प्रक्षिप्य इतरथावृत्तिं कुर्यात्।

(घृतपात्र **(कटोरे)** में घृत डाल कर अङ्गारोंको उत्तरकी तरफ इकट्ठा कर उन पर घृतपात्र रखे। आधा घी तपने पर एक तृण जलाकर घृतके चारोंतरफ प्रदक्षिण क्रमसे फेर अग्निमें छोड़ देवे और हाथको उसी क्रमसे वापिस वहीं लावे)

ततो दक्षिणहस्तेन [4]स्रुवमादाय अधोमुखं स्रुवं त्रिः तापयित्वा वामहस्ते स्रुवमूर्ध्वमुखं कृत्वा दक्षिणहस्तेन सम्मार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं सम्मृज्य [5]तान्कुशानग्नौ प्रक्षिप्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः पूर्ववत्प्रतप्य स्वदक्षिणतो निदध्यात्।

(दक्षिण हाथमें स्रुव लेकर अधोमुख स्रुवको तीन बार तपावे फिर स्रुवको ऊर्ध्वमुख करके दक्षिण हस्तसे सम्मार्जन कुशाओंके अग्रभागसे स्रुवेके अग्रभागको मध्यसे मध्यको, मूलसे मूलको सम्मार्जन कर कुशाओंको अग्निमें गेर देवे। फिर प्रणीताके जलसे अभ्युक्षणकर फिर तपाकर अपने दक्षिण ओर रक्खे)

तत आज्यमुत्तार्य उत्तरतः स्थापयित्वा हस्तद्वयस्याऽनामिकाङ्गु-

---

१ "अपरेण पवित्रान्तर्हितायामाज्यस्थाल्यामाज्यं निरूप्य"। (**आ० गृ० १–१०–२३**)

२ **कारिकायाम्** — "अपोह्योत्तरतोऽङ्गारान् तेष्वधिश्रित्य तद् घृतम्"।

३ "अग्नेरुल्मुकमादाय प्रारभ्येशान कोणतः ? पुनरानीय कोणान्तमाज्यादिं परितः शनैः। प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा वह्निमध्ये त्यजेत्तु तत्॥"

४ "ततो दक्षिणहस्तेन स्रुवमादाय तं ततः। तापयित्वा यथान्यायं प्राञ्चमग्नावधोमुखम्। सव्ये धृत्वा तमुत्तान पुष्करं दक्षिणेन तु। कुशानादाय सम्मार्गास्तदग्रैरुपरि क्रमात्। मूलादारभ्य वक्त्रान्तं सम्मृज्य मुखतः पुनः। तन्मूलैर्मूलपर्यन्तं सम्मृज्याधोऽपि तांस्त्यजेत्"॥

५ **सं० ग०**— "पुनः प्रतप्य तौ मन्त्री दर्भानग्नौ विनिक्षिपेत्। आत्मनो दक्षिणे भागे स्थापयेत्तौ कुशान्तरे।" (तौ स्रुक्स्रुवौ)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा आज्यं त्रिरुत्पूय[1] अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं कृत्वा पूर्ववत्पवित्राभ्यां प्रोक्षणीजलमुत्पूय प्रोक्षणीषु पवित्रे निदध्यात् ।

(घृतको अग्निसे उतार कर उत्तरकी तरफ रक्खे और दोनों हाथों के अनामिकांगुष्ठसे पवित्र लेकर घीको ऊपर तीन बार उछाले । फिर देख घीके अन्दर कृमि कीटादि होय तो निकाल देवे । फिर प्रोक्षणीजल से ऊपरको छींटे देवे)

तत उपयमनकुशानादाय वामहस्ते कृत्वा उत्तिष्ठन्[2] प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा घृताक्ताः प्रागग्रास्तिस्रः समिधस्तूष्णीमग्नौ (वामकरान्वारब्धेन[3] दक्षिणहस्तेन) क्षिपेत् ।

(उपयमन कुशाओंको बायें हाथमें लेकर खड़ा हो प्रजापतिका मनमें ध्यान कर घृताक्त तीन समिधाओंको चुपचाप अग्निमें गेरे)

तत उपविश्य सपवित्र प्रोक्षण्युदकेन ईशानाद्युत्तरपर्यन्तं प्रदक्षिणक्रमेणाऽग्निं[4] पर्युक्ष्य इतरथावृत्तिं च कृत्वा पवित्रे प्रणितापात्रे निदध्यात् ।

ततो योजकानामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदोभव । इत्यग्निं सम्पूज्य दक्षिणं[5] जान्वाच्य कुशेन ब्रह्मणाऽन्वारब्धोमौनी[6] (मूलमध्यभाग-

---

१ "उदगग्रे अङ्गुष्ठाभ्यामनामिकाभ्यां च सङ्गृह्य त्रिराज्यमुत्पुनाति ।।" (छा. गृ० १-१-१४)

२ "तिष्ठन् समिधः सर्वत्र मध्ये ।" (का० श्रौ० १८-३-१०)

"लाजहोमं समिद्धोमं मूर्ध्निहोमं तथैव च ।
पूर्णाहुतिं वसोर्द्धारां तिष्ठतैव हि कारयेत्" ।।

३ "अत्रैकपाणिना समिद्धोमस्य निषेधेन सव्यपाण्यन्वारब्ध दक्षिणपाणिना होमविधिर्गम्यते" ।। इति प्रयोगपारिजाते ।

४ सं० ग०—"ऊर्ध्वपादावधोवक्त्रः प्राङ्मुखो हव्यवाहनः । ईदृशे वह्निरूपे तु आहुतिः कस्य दीयते । सपवित्राम्बुहस्तेन वह्नेः कुर्यात्प्रदक्षिणम् । हव्यवाट् सलिलं दृष्ट्वा विभीतः सम्मुखो भवेत् ।।"

५ "न मुक्तकेशो जुहुयान्नानिपातितजानुकः । अनिपातितजानुस्तु राक्षसैर्ह्रियते हविः" ।।

६ "स्नास्यतो वरुणः कान्तिं जुह्वतोऽग्निः श्रियं हरेत् । भुञ्जतो मृत्युरायुस्यं तस्मान्मौनं त्रिषु स्मृतम्" ।। मौनलोपे-"व्याहृत्य वैष्णवं मन्त्रं जपेत्" (का० श्रौ० २-२-६) इति वचनाद् वैष्णवमन्त्रपाठः प्रायश्चित्तम्)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[1]योर्मध्येन) स्रुवं गृहीत्वा [2]समिद्धतमेऽग्नौस्रुवेणा[3]ज्याहुतीर्जुहुयात् । तत्राघारादारभ्य द्वादशाहुतिषु तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेष-घृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः ।

(फिर बैठकर सपवित्र प्रोक्षणीके जलसे प्रदक्षिणक्रमसे अग्निका पर्युक्षण कर इतरथावृत्ति करे । पवित्रेको प्रणितापात्रमें रख दे । फिर योजक नामक अग्निकी पूजा कर दक्षिण जंघाको मोड़ कुशाका ब्रह्मासे अन्वारब्ध कर मौन हो स्रुवसे प्रज्वलित अग्निमें आहुति घृतकी देवे । स्रुवावस्थित शेष घृत प्रोक्षणी पात्रमें गेरे)

अथाज्यहोमः

"ॐ प्रजापतये स्वाहा" इदं प्रजातपये न मम । इति मन्त्रं मनसोच्चारयेत् ।

"ॐ इन्द्राय स्वाहा" इदमिन्द्राय न मम । इत्याघारौ ।

"ॐ अग्नये स्वाहा" इदमग्नये न मम ।

"ॐ सोमाय स्वाहा" इदं सोमाय न मम । इत्याज्यभागौ ।

"ॐ भूः स्वाहा" इदमग्नये न मम ।

"ॐ भुवः स्वाहा" इदं वायवे न मम ।

"ॐ स्वः स्वाहा" इदं सूर्याय न मम ।

सर्व प्रायश्चित्त होमः

"ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः ।

---

१ विधानमालायाम् "अग्रेः धृतो विनाशाय धृतो मध्ये प्रजाक्षयः । मूले घृतस्तु होतुस्तु मृतिं दद्यात्स्रुवो ध्रुवम् । अग्रान्मध्याच्च मूले तु मूलान्मध्याच्च मध्यमः । स्रुवः प्रधार्यो विद्वद्भिः सर्वकामार्थ सिद्धये" । स्रुवदण्डस्य पञ्चभागान् कृत्वा द्वितीयभागे स्रुवधारणमित्यर्थः ।

२ कात्यायनः— "योऽर्चिषि जुहोत्यग्नौ व्यङ्गारिणि च मानवः । मन्दाग्नि-रामयावी च दरिद्रश्चापि जायते ।। तस्मात्समिद्धे होतव्यं नासमिद्धे कदाचन । आरोग्यमिच्छता-युश्च श्रियमात्यन्तिकीं तथा ।"

३ "आहुतिस्तु स्रुवादीनां स्रुवेणाधोमुखेन च ।
हुनेत्तिलाद्याहुतीश्च दैवनोत्तान पाणिना" ।।

हविप्रक्षेपः कुण्डे स्थण्डिले वाऽन्तः कार्यः—"नहि वाह्यहुतं देवाः प्रतिगृह्णन्ति कर्हिचित् ।" इति वचनात् ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषा ँसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा" ।

इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।। १ ।।

"ॐ स त्वं नोऽअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्टोऽअस्याऽउषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो व्वरुण ँ० रराणो व्वीहि मृडीक ँ० सुहवो नऽएधि स्वाहा" ।

इदमग्निवरुणाभ्यां न मम ।। २ ।।

"ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि । अया-नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज ँ स्वाहा" ।

इदमग्नये अयसे न मम ।। ३ ।।

"ॐ ये ते शतं व्वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा व्वितता महान्तः । तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा" ।। **इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ।। ४ ।।**

"ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमध्यम ँ श्रथाय । अथा व्वयमादित्य व्व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा" ।। **इदं वरुणायादित्यायादितये न मम ।। ५ ।।**

इति सर्वप्रायश्चित्त होमः ।

ब्रह्मासे अन्वारब्ध हटाकर हवन करे ।

राष्ट्रभृद्धोमः[1]

"ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्निर्गन्धर्वः स न ऽ इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा व्वाट्" । **इदमृतासाहे ऋतधाम्नेऽग्नये गन्धर्वाय न मम ।।१।।**

"ॐ ऋताषाड्ऋत धामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदो नाम ताभ्यः स्वाहा" । **इदमोषधिभ्योऽप्सरोभ्यो मुद्भ्यो न मम ।। २ ।।**

"ॐ स ँ हितो व्विश्वसामा सूर्य्यो गन्धर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सर-

---

१ तथा च कात्यायनः–"विवाहे होमयेन्नित्यं राष्ट्रभृद् द्वादशाहुतीः । जयाहुतीर्दशत्रींश्च होमयेत्तत्र चेच्छया । अष्टादशापि जुहुयादभ्यातानाहुतीस्तथा ।।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सऽआयुवो नाम ताभ्यः स्वाहा"। **इदं मरीचिभ्योऽप्सरोभ्य आयुभ्यो न मम ॥ ३ ॥**

"ॐ स ꣳ हितो व्विश्वसामा सूर्य्यो गन्धर्वः स न ऽइदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा व्वाट्"। **इदं स ꣳ हिताय विश्वसाम्ने सूर्याय गन्धर्वाय न मम ॥ ४ ॥**

"ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः स नऽ इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा व्वाट्"। **इदं सुषुम्णाय सूर्यरश्मये चन्द्रमसे गन्धर्वाय न मम ॥ ५ ॥**

"ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम ताभ्यः स्वाहा"। **इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्यो भेकुरिभ्यो न मम ॥ ६ ॥**

"ॐ इषिरो व्विश्वव्यचा व्वातो गन्धर्वः स नऽइदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा व्वाट्"। **इदमिषिराय विश्वव्यचसे वाताय गन्धर्वाय न मम ॥ ७ ॥**

"ॐ इषिरो व्विश्वव्यचा व्वातो गधर्वस्तस्यापो ऽअप्सरसऽऊर्जो नाम ताभ्यः स्वाहा"। **इदमद्भ्योऽप्सरोभ्य ऊर्ग्भ्यो न मम ॥ ८ ॥**

"ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः स न ऽ इइं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा व्वाट्"। **इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गन्धर्वाय न मम ॥ ९ ॥**

"ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वस्तस्य दक्षिणा ऽअप्सरसस्तावा नाम ताभ्यः स्वाहा"। **इदं दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्यस्तावाभ्यो न मम ॥ १० ॥**

"ॐ प्रजापतिर्व्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः स नऽइदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा व्वाट्"। **इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गन्धर्वाय न मम ॥ ११ ॥**

"ॐ प्रजापतिर्व्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वस्तस्यऽऋक्सामान्यप्सरस-ऽएष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा"। **इदमृक्सामेभ्योऽप्सरोभ्य एष्टिभ्यो न मम ॥ १२ ॥**

इति राष्ट्रभृद्धोमः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जयहोमः[1]

"ॐ चित्तं च स्वाहा" । **इदं चित्ताय न मम ॥ १ ॥**

"ॐ चित्तिश्च स्वाहा" । **इदं चित्त्यै न मम ॥ २ ॥**

"ॐ आकूतं च स्वाहा" । **इदमाकूताय न मम ॥ ३ ॥**

"ॐ आकूतिश्च स्वाहा" । **इदमाकूत्यै न मम ॥ ४ ॥**

"ॐ विज्ञातं च स्वाहा" । **इदं विज्ञाताय न मम ॥ ५ ॥**

"ॐ विज्ञातिश्च स्वाहा" । **इदं विज्ञात्यै न मम ॥ ६ ॥**

"ॐ मनश्च स्वाहा" । **इदं मनसे न मम ॥ ७ ॥**

"ॐ शक्वरीश्च स्वाहा" । **इदं शक्वरीभ्यो न मम ॥ ८ ॥**

"ॐ दर्शश्च स्वाहा" । **इदं दर्शाय न मम ॥ ९ ॥**

"ॐ पौर्णमासं च स्वाहा" । **इदं पौर्णमासाय न मम ॥ १० ॥**

"ॐ बृहच्च स्वाहा" । **इदं बृहते न मम ॥ ११ ॥**

"ॐ रथन्तरं च स्वाहा" । **इदं रथंतराय न मम ॥ १२ ॥**

"ॐ प्रजापतिर्जयानिन्द्राय व्वृष्णे प्रायच्छदुग्रः पृतनाजयेषु । तस्मै विशः समनमन्त सर्वाः सऽउग्रः स इ हव्योबभूव स्वाहा" । **इदं प्रजापतये न मम ॥ १३ ॥**

इति जय होमः ।

अथाभ्यातान[2] होमः

"ॐ अग्निर्भूतानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहुत्या ॐ स्वाहा" । **इदमग्नये भूतानामधितपये न मम ॥ १ ॥**

"ॐ इन्द्रो ज्येष्ठानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ

---

१ तथा च रेणुः—"चित्तं चित्तमथाकूतमाकूतिं तदनन्तरम् । विज्ञातं च ततो विज्ञातिं मनः शक्वरीस्तथा ॥

दर्शं च पौर्णमासं च वृहतं च रथन्तरम् । प्रजापतिं घृतेनैता जयाख्यास्तु त्रयोदश" ॥

२ अग्निर्भूतानामित्याद्यष्टादशमन्त्राः अभ्यातान संज्ञकाः अत्र श्रुतिप्रमाणमाह—'यद्देवा अभ्यातानैर्मन्त्रैरसुरानभ्यातन्वन्" इति ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वाहा" । **इदमिन्द्राय ज्येष्ठानामधिपतये न मम ।। २ ।।**

दक्षिण[1] दिशामें एक पात्र रखकर उसमें त्याग करे—

"ॐ यमः पृथिव्याऽअधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या १ॐ स्वाहा" । **इदं यमाय पृथिव्या अधिपतये न मम ।। ३ ।।**

पुरोहित—वर और कन्याके [2]प्रणीताके जलसे छींटा देता हुआ यह मन्त्र पढ़े—

"ॐ यथा वाणप्रहाराणां कवचं भवति वारणम् । तद्वद्दैवोपघातानां शान्तिर्भवतु वारणम्" ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

"ॐ वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या १ॐ स्वाहा" । **इदं वायवेऽअन्तरिक्षस्याधिपतये न मम ।। ४ ।।**

"ॐ सूर्यो दिवोऽधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या १ॐ स्वाहा" । **इदं सूर्याय दिवोऽधिपतये न मम ।। ५ ।।**

"ॐ चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या १ॐ स्वाहा" । **इदं चन्द्रमसे नक्षत्राणामधिपतये न मम ।। ६ ।।**

"ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः स मा ऽ वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या १ॐ स्वाहा" । **इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये न मम ।। ७ ।।**

---

१ **स्मृतिचन्द्रिकायाम्**– "यमाय दक्षिणे त्याग ऐशान्यां रौद्रएव च । दक्षिणाग्नेययोर्मध्ये पितृत्यागो विधीयते । एष त्यागोऽन्यपात्रे स्यात् प्रोक्षणीष्वन्य एव हि" ।।

२ **कर्मकौमुद्याम्**–"यमरुद्रपितॄणां च मृत्योश्चापि तथैव च । आहुत्यन्ते च कर्तव्यो जलस्पर्शः सदा बुधैः" ।।

"यमरुद्रपितृकालाः क्रूरा मृत्युश्च पञ्चमः ।
होमे तच्छान्ति सिद्ध्यर्थं प्रणीतोदकेन स्पृशेत्" ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"ॐ मित्रः सत्यानामधिपतिः स मा ऽ वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रे ऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ॐ स्वाहा"। **इदं मित्राय सत्यानामधिपतये न मम ॥ ८ ॥**

"ॐ व्वरुणोऽपामधिपतिः स मा ऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽ स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ॐ स्वाहा"। **इदं वरुणायापामधिपतये न मम ॥ ९ ॥**

"ॐ समुद्रः स्रोत्यानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ॐ स्वाहा"। **इदं समुद्राय स्रोत्यानामधिपतये न मम ॥ १० ॥**

"ॐ अन्नर्ठं० साम्राज्यानामधिपति तन्माऽत्ववस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यां ७ॐ स्वाहा"। **इदमन्नाय साम्राज्यानामधिपतये न मम ॥ ११ ॥**

"ॐ सोमऽओषधीनामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ॐ स्वाहा"। **इदं सोमायऔषधीनांपतये न मम ॥ १२ ॥**

"ॐ सविता प्रसवानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽ स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यां देवहूत्या ७ॐ स्वाहा"। **इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये न मम ॥ १३ ॥**

ईशान दिशामें एक पात्र रख कर उसमें त्याग करे—"ॐ रुद्रः पशूनामधिपतिः स माऽ वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽ स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ॐ स्वाहा"। **इदं रुद्राय पशूनामधिपतये न मम ॥ १४ ॥**

पुरोहित –वर और कन्याके प्रणीताके जल का छींटा देवे – "ॐ यथा वाण प्रहाराणामित्यादि" बोले।

"ॐ त्वष्टारूपाणामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽ स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ॐ स्वाहा"। **इदं त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये न मम ॥ १५ ॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"ॐ विष्णु पर्वतानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या १ॐ स्वाहा"। **इदं विष्णवे पर्वतानामधिपतये न मम ।। १६ ।।**

"ॐ मरुतो गणानामधिपतयस्ते माऽवन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रे स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या १ॐ स्वाहा"। **इदं मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्यो न मम ।। १७ ।।**

दक्षिण और अग्नि कोणके बीचमें एक पात्र रखकर उसमें त्याग करे---

"ॐ पितरः पितामहाः परेऽवरे ततास्ततामहाः। इह माऽवन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या १ॐ स्वाहा"। **इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्योऽवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यश्च न मम ।। १८ ।।**

पुरोहित –वर कन्याके प्रणीताके जलका छींटा देवे।

"ॐ यथा वाण प्रहाराणामित्यादि" बोले।

इत्यभ्यातान होमः।

पञ्चाहुतयः[1]

"ॐ अग्निरै तु प्रथमो देवताना १ॐ सोऽस्यै प्रजां मुञ्चतु मृत्युपाशात्। तदय ठं० राजा व्वरुणोऽनुमन्यतां यथेय १ॐ स्त्री पौत्रमघं न रोदात् स्वाहा"। **इदमग्नये न मम ।। १ ।।**

"ॐ इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः। अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानन्दमभिविबुद्धयतामिय १ॐ स्वाहा"। **इदमग्नये न मम ।। २ ।।**

"ॐ स्वस्ति नोऽअग्ने दिवऽआ पृथिव्या व्विश्वानि धेह्य यथा यजत्र। यदस्यां महि दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्र १ॐ स्वाहा"। **इदमग्नये न मम ।। ३ ।।**

---

१ "आहुति त्रितयं दद्याद्विवाहे साक्षिकाग्नये। साक्षिदानादि पूज्योऽतोऽग्निं साक्षिणमाहुनेत्" ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"ॐ सुगन्नु पन्थां प्रदिशन्नऽएहि ज्योतिष्मद्धेह्यजरन्नऽ आयुः। अपैतु मृत्युरमृतंमऽआगाद्वैवस्वतो नोऽ अभयं कृणोतु स्वाहा"। इदं वैवस्वताय न मम ॥ ४ ॥

पुरोहित—वर कन्या और अग्निके बीचमें अन्तः[1] पट (वस्त्र) देकर चुपचाप अग्निमें "परं मृत्यो" इस मन्त्र से आहुति देवे।

तत्र मन्त्रः—"ॐ परं मृत्योऽअनु परेहि पन्थां यस्तेऽअन्यऽइतरो देवयानात्। चक्षुष्मते श्रृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजा ᳪ रीरिषो मोत व्वीरान्त्स्वाहा"। इदं मृत्यवे न मम ॥ ५ ॥

पुरोहित —अन्तः पट दूर करके वर कन्याके प्रणीताके जलका छींटा देवे।

(इसी समय वर पक्षीय और कन्या पक्षीय पुरोहित क्रमसे मङ्गलाष्टक या शाखोच्चारण करे।)

(यहाँ मरुदेशीय प्रथानुसार चँवरी रोपण करे।)

लाज होमः

वधूको आगे कर वधू और वर पूर्वाभिमुख[2] खड़े होवें (संस्कारदीपक तथा गोभिल गृह्यसूत्रमें लिखा है कि वर कन्याके

---

१ लाजहोमात्पूर्वम् "परं मृत्यो" इत्यनेन यो होमः क्रियते तस्य फलं मृत्युनिवारणम्।

कारिकायाम्—रौद्र्यां पैत्र्यामथो याम्यां मार्तव्यामाहुती तथा। दम्पत्योरल्पमायुः स्यादन्तर्धिरचना न चेत्" ॥

"मृत्योर्होमं तु यः कुर्याद्दन्तर्धानं विना नरः। अशुभं जायते तस्य दम्पत्योरल्पजीवनम्" ॥ इति वचनात्।

२ राजमार्तण्डे—"वधूवरौ तु प्राक् स्थित्वा संहृत्य स्वकराञ्जलीन्। त्रिभिर्मन्त्रैर्हुनेत् लाजान् भ्रातृदत्तान् यथाविधि ॥ घृताभिघारितांश्चैव मिश्रितांश्च शमीदलैः। साङ्गुष्ठहस्तं गृह्णीयाद्वरो वध्वा यदा पुनः। अश्मन्यारोहयेत् गाथोद्गानं कुर्याद्वरस्तथा। वरोऽग्रे च वधूं कृत्वा वह्निं ब्रह्मादिसंयुतम् ॥ परिक्रमेद्धि प्रयतो द्विवारं तु पुनस्तथा। विपर्यायासनं स्वं स्वमुपविश्य वधूवरौ। पुनरुत्थाय च स्थित्वा पूर्ववद्धोमहेतवे। भ्रातृदत्ताञ्छिलालाजान शूर्पकोणेन वाञ्जलौ ॥ भगाय स्वाहेत्युक्त्वा तांस्तु वह्नौ हुनेतवधूः। वरोऽग्रेच ततो भूत्वा वध्वा तूष्णीं परिक्रमेत्। प्राजापत्यं ततो हुत्वा उदीच्यां क्रमयेत्तु ताम्" ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पृष्ठकी ओर से आकर वधूके दक्षिण की ओर [1]उत्तराभिमुख स्थित होकर दक्षिण हाथ से वधूकी अञ्जलिको ग्रहण कर)

हथलेवा खोलकर वरकी अञ्जलिमें कन्याकी अञ्जलिको रखावे। फिर कन्याका भाई घृतलगे शमीपत्र (जांटीके पत्ते) और लाजा (खील) को शूर्पमें घाल दे फिर उन खीलोंके चार भाग करे और फिर उनमें से एक एक भागको अलग अलग अपनी अञ्जलिसे कन्याकी अञ्जलिमें गेरे और कन्या [2]मन्त्र पढ़ती हुई उस लाजा को अग्निमें तीन बार आहुति देवे।

(अर्य्यमणमिति मन्त्रस्य अथर्वण ऋषिरग्निर्देवताऽनुष्टुप्छन्दो लाजहोमे विनियोगः)

तत्र मन्त्रः—"ॐ अर्य्यमणं देवं कन्याऽअग्निमयक्षत। स नोऽअर्य्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः स्वाहा"। इदमर्य्यम्णे न मम ॥ १ ॥

"ॐ इयं नार्युपब्रूते लाजानावपन्तिका। आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा'। इदमग्नये न मम ॥ २ ॥

"ॐ इमाँल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव। मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामियꣳ स्वाहा"। इदमग्नये न मम ॥ ३ ॥ इति अञ्जलिस्थान् सर्वान् लाजान् जुहोति।

वर कन्याके दाहिने हाथको अंगूठे[3] सहित पकड़े और ये मन्त्र पढ़े। हथलेवा फिर बन्धवा देवे।

"ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथाऽऽसः। भगोऽअर्य्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वा दुर्गार्हपत्याय देवाः। अमोऽहमस्मि सा त्व ꣳ सा त्वमस्यमोऽअहम्। सामाहमस्मि ऋक् त्वं द्यौरहं

---

१ "अनुपृष्ठं पतिः परिक्रम्य दक्षिणत उद्ङमुखोऽवतिष्ठते वध्वञ्जलिं गृहीत्वा"॥ (गो० गृह्यसूत्रे।)

२ वधूपठनीया मंत्राः—कारिकायाम्—"लाजहोमे मन्त्रत्रयं सूर्यस्यावेक्षणं सकृत्। भगाय चैकमंत्रं च कन्या पठति पञ्चमम्। ध्रुवदर्शनकाले च षष्ठश्चैव उदाहृतः॥"

३ रेणुः—"साङ्गुष्ठं हस्तमुतानं गृह्णात्यस्याः पतिस्ततः। गृभ्णामि ते सौभगत्वायेति मन्त्रेण दक्षिणम्"॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पृथिवी त्वम् । तावेहि विवाहवहै सह रेतो दधावहै । प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान् विन्द्यावहै बहून् । ते सन्तु जरदष्टयः सम्प्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ठं० शृणुयाम शरदः शतमिति" ।

फिर वर अग्निके उत्तर रक्खे हुये [1]पत्थर पर वधूका दाहिना चरण धरे । ([2]वायां चरण भूलकर भी न धरे)

वर यह मन्त्र पढ़े—"ॐ आरोहे ममश्मानमश्मेव त्व ७ं स्थिरा भव । अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः" ।

पत्थर पर स्थित हुई कन्याके वर गाथा गान करे—

"ॐ सरस्वति प्रेदमव सुभगे व्वाजिनीवति । यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः । यस्यां भूत ठं० समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत्। तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः" ।

फिर वधू आगे[3] और वर पीछे हो प्रणीता [4]ब्रह्मसहित अग्नि की प्रदक्षिणा करें । गणपत्यादि देवता और कलश अन्यत्र रख कर प्रदक्षिणा करे ।

वर मन्त्र पढ़े—"ॐ तुभ्यमग्रे पर्यवहन्त्सूर्यां वहतु ना सह । पुनः पतिभ्यो जायां दाऽग्ने प्रजया सह" ।

इसके बाद अग्निके पश्चिमकी ओर ठहर कर लाजहोम, पाणिग्रहण, अश्मारोहण, गाथागान, अग्निप्रदक्षिणा, ये सब कर्म दो बार

---

१ **गृह्यकारिकायाम्**—"गत्वोभावुत्तरेणाग्निं तस्याः सव्येतरं करम् । सव्येनादाय हस्तेन वधूपादन्तु दक्षिणम् । शिलामारोहयेत्प्रागायता दक्षिणपाणिना" ।।

२ **स्मृतौ**—"वरस्तु सव्यहस्तेन वधूपादं च दक्षिणम् । शिलामारोहयेत्प्राज्ञो मन्त्रोच्चारणपूर्वकम् ।। शक्तिरूपा शिला प्रोक्ता शिवरूपः शिलापतिः । तत्राङ्गुष्ठद्वयस्पर्शात् कन्या तु विधवा भवेत्" ।।

३ **सं० भास्करे**—"अग्रेतु शुभदा पत्नी माङ्गल्ये सर्वकर्मणि । पदेपदेऽश्वमेधंच धनायुः पुत्रवर्धनम् ।।"

"कामस्त्वमोघबाणौघैः प्रहरेदतिदारुणैः । तस्मादग्रे भवेत्कन्या सर्वदोषोपशान्तये ।। कन्यकाऽग्रे वरं कृत्वा ब्राह्मणो ज्ञानदुर्बलः । विधवा जायते नारी निषेधस्तत्र कारणम्" ।।

४ **गदाधरस्तुः** प्रणितासहितमेव अग्निं प्रदक्षिणं कुर्याताम्, इति अभिमन्यते युक्तिप्रमाणं चापि दर्शयति ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और पुरोहित करावे । तीन बार परिक्रमण (फेरा) करने के बाद कन्याका भाई शूर्प (छाज) के कोण से कन्या की अञ्जलिमें खील डाले और कन्या उन लाजाओंको मन्त्र पढ़ती हुई [1]अञ्जलिसे अग्नि में डाले । तत्र मन्त्रः–"ॐ भगाय स्वाहा" इदं भगाय न मम ।।

फिर [2]आगे वर पीछे वधू होय [3]चुपचाप चौथा परिक्रमण करें । गणपत्यादि देवता कलश यथास्थान स्थापन करके प्रदक्षिणा करें । वर यथास्थान बैठ ब्रह्मासे अन्वारब्ध कर घृतकी आहुति देवे । हुतशेष घृत का प्रोक्षणीपात्रमें प्रक्षेप करे ।

"ॐ प्रजापतये स्वाहा" । इदं प्रजापतये न मम ।।

अत्र प्रोक्षणी पात्रे हुतशेषाज्यप्रक्षेपणं ।

लोक[4] व्यवहारसे मामा सेवरा देवे ।

–तथा च तद्भाष्यं—"वधूवरौ अग्नेः प्रदक्षिणं कुर्वन्तौ अन्तरं गत्वा तन्मध्य एव गच्छेतामिति" । तथा च कारिकायाम् —

"दम्पत्योर्गच्छतोस्तत्र ब्रह्माग्नी अन्तरा गतिः" इति ।

परे तु ब्रह्मसहिताग्नेः प्रदक्षिणायामपि—"वरोऽग्रे च वधूं कृत्वा वह्निं ब्रह्मादिसंयुतम् । परिक्रमेद्धि प्रयतो द्विवारं तु पुनस्तथा" ।।

इति राजमार्तण्डीय वचनस्य प्रमाणत्वादुभावपि पन्थानौ शास्त्रसम्मतौ । अतश्च स्व स्वदेशाचारानुकूलमनुष्ठेयन् ।

१ शौनकः–"हुतावशिष्टांल्लाजांस्तु वधूः स्वाभिमुखं ततः । शूर्पाग्रेणैव जुहुयात्तूष्णीं निरवशेषतः" ।।

सं० ग०— "अग्रेच विधवा नारी कोणेचैव विपत्तयः । न चाग्रेण न कोणेन जुहुयाच्छूर्पकुष्ठयोः" ।। शूर्पकुष्ठया अञ्जलावाबपेदित्यर्थः । तान् कुमारी —"भगाय स्वाहा" इत्यनेन मन्त्रेण जुहोति ।।

२ "वरोऽग्रे च ततो भूत्वा वध्वास्तूष्णीं परिक्रमेत् । प्राजापत्यं ततो हुत्वा उदीच्यां क्रमयेत्तु ताम्" ।।

३ कारिकायाम्–"हस्तग्रहणतस्तूष्णीं भवेदत्र परिक्रमः ।"

४ देवलः–"यस्मिन्देशे पुरे ग्रामे त्रैविद्यनगरेऽपि वा । यो यत्र विहितो धर्मस्तं धर्मं न विचारयेत्" ।।

"यस्मिन् देशे य आचारो न्यायदृष्टस्तु कल्पितः । तस्मिन्नेव स कर्तव्यो देशाचारः स्मृतो भृगो" ।।

यदाहापस्तम्बः–"येषां परम्पराप्राप्ताः
पूर्वजैरप्यनुष्ठिताः । त एव तैर्न दुष्येयुराचारैर्नेतरैः पुनः" ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चँवरी उठाकर यथास्थान रखवादें।

यहाँ लोकाचारसे अन्तः पट देवे—

"स्थानं प्रधानं न बलं प्रधानं स्थाने स्थितः कापुरुषोऽपि धीरः। जानामि नागेन्द्र ! तव प्रभावं कण्ठं विना गर्जसि शंकरस्य ।। १ ।।

गर्जेर्यदा तृणवच्छेदनीयो दृष्ट्वा ब्रह्मा देवतानां च मुख्यः। वैरं मध्ये वैनतेयाहिराजं तयोरन्तः पट्टमादत्त नूनम्" ।। २ ।।

इति गौरी शंकरयोर्विवाहे गरुडनागयोः कलहं दृष्ट्वा ब्रह्मा तयोरन्तः पटं कारितवान्।

"मण्डपे [1]मधुपर्के च लाजहोमे तथैव च। यावत्कन्या न वामाङ्गे तावत्कन्या कुमारिका" ।। १ ।।

पुरोहित वधूवरका हस्तविमोचन (हथलेवा छुटाकर) कराकर कन्यापिता स्वदक्षिण हाथमें हिरण्यादि दक्षिणा लेकर संकल्प करे—

—"अद्य विवाहकर्मणि हस्त विमोचन साङ्गतासिद्ध्यर्थमिदं सुवर्णाङ्गुलीयकं (तन्मूल्योपकल्पितं द्रव्यं वा) अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे वराय. दक्षिणात्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे"।

वरके हाथमें दक्षिणा देवे।

वर कहे—"ॐ स्वस्ति"।

उत्तरसे उत्तरकी ओर सात जगह मेंहदी धरे और उनमें वधूका दाहिना[2] पैर अनुक्रमसे वर धरावे। वधू उत्तराभिमुख हो सात पैर चले और वर एक एक पद पर ये मन्त्र पढ़े —

---

१ "मण्डपे मधुपर्के च लाजहोमे तथा कृते। पूर्णापञ्चदशैवांशा न तु सर्वे नखोन्मिताः ।। यतो यावद्वधूर्नैव वामपार्श्वे वरस्य सा। तावत्कन्यैव सम्प्रोक्ता गुरुभिस्तत्त्वदर्शिभिः" ।।

२ "वध्वा दक्षिणपादानि सप्तानि प्रक्रमेत्तु सा।
याम्यादुदग्दिक् संस्थाप्य प्रक्रमेदुत्तरोत्तरम्" ।।

तथा च यमः—"नोदकेन न वाचा वा कन्यायाः पतिरुच्यते। पाणिग्रहणसंस्कारात्पतित्वं सप्तमे पदे" ।। अत्र वरः कन्याया दक्षिणपादं गृहीत्वा सप्तसु स्थानेषु निक्षिपेत्, इत्येव सूत्रकाराशयः ज्ञायते। एवमेवाश्मारोहणेऽपि। अत्र वध्वा पादस्पर्शे दोषो ना शंकनीयः। शास्त्रविहिते कर्मणि दोषसंभावनाया अनौचित्यात्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सप्तपदी

"ॐ एकमिषे विष्णुस्त्वा नयतु" ।। १ ।। **भाषार्थ**–विष्णुरूप जो मैं वर हूँ अन्नादिकों की रक्षा के लिये तुझ वधू को प्रथम मण्डल में प्रथम पैर धराता हूँ। तब प्रसन्न हो वधू वर से यह कहे कि–"धनं धान्यं च मिष्टान्नं व्यञ्जनाद्यं च यद्गृहे। मदधीनं च कर्त्तव्यं वधूराद्ये पदेऽब्रवीत्" ।। १ ।।

भाषार्थ–धन, धान्य, अन्नादि मीठाव्यंजन आदि जो तुम्हारे घर में हैं, वे सब आप मेरे अधीन करदें ताकि मैं उन पदार्थों से सास ननद श्वसुर आदि कुटुम्ब की यथार्थ सेवा कर सकूं।

फिर वर कहता है कि—

"ॐ द्वे ऊर्ज्जे विष्णुस्त्वा नयतु" । २ ।।

भाषार्थ–विष्णुरूप जो मैं वर हूँ **(ऊर्ज्जे)** बल के लिये **(द्वे)** दूसरे मण्डल में दूसरा पैर चलने को प्राप्त करता हूँ।

फिर वधू वर से दूसरी प्रार्थना यह करती है कि—

"कुटुम्बं प्रथयिष्यामि ते सदा मञ्जुभाषिणी। दुःखे धीरा सुखे हृष्टा द्वितीये साऽब्रवीद्वरम्" ।। २ ।।

भाषार्थ–मैं तुम्हारे कुटुम्ब को पुष्ट करती हुई पालन करूँगी, सदा मीठे वचन बोलने वाली रहूँगी, कभी कटु वचन नहीं बोलूंगी यदि कोई दुःख आन पड़े तो उसमें धीरज धारण करके रहूँगी अर्थात् आपके सुख में सुखी दुःख में दुःखी रहूँगी, **यह सुन के वर फिर कहता है–**

"ॐ त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वा नयतु" ।। ३ ।।

भाषार्थ–विष्णुरूप जो मैं वर हूँ **(रायस्पोषाय)** धनकी बढोतरी के लिए तीसरे मण्डल में तीसरा पैर धरा कर प्राप्त करता हूँ।

फिर वधू वर से तीसरी प्रार्थना करती है कि—

"ऋतौ काले शुचिः स्नाता क्रीडयामि त्वया सह। नाऽहं परपतिं यायां तृतीयं साऽब्रवीद्वरम्" ।। ३ ।।

भाषार्थ–ऋतु **(रजस्वला)** हो लेने के बाद शुद्ध स्नान करके मैं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आपके ही साथ में आनन्द क्रीडा करूँगी पराये पति को मनसे भी नहीं ग्रहण करूँगी । **वर फिर कहता है कि–**

"ॐ चत्वारि मायोभवाय विष्णुस्त्वा नयतु" । ४ ।।

भाषार्थ–विष्णुरूप मैं जो वर हूँ **(मायोभवाय)** सुखकी उत्पत्ति के लिए चौथे मण्डल में चौथे पैर के चलने में तुझको प्राप्त करता हूँ । **फिर वधू वर से चौथी प्रार्थना यह करती है कि—**

"लालयामि च केशान्तं गन्धमाल्यानुलेपनैः । काञ्चनैर्भूषणैस्तुभ्यं तुरीये साऽब्रवीद्वरम् ।। ४ ।।

भाषार्थ–चौथे मण्डल में पैर रखते ही वधू वर से कहती है कि जो सिन्दूर, रोली, फूलों आदि से सोलह श्रृङ्गार या इतर चन्दनादिकों से सुवासित होकर कपड़े सोने के भूषणों से जो मेरे अंग की सुन्दरता होगी, वह आपके ही प्रसन्न करने या लाड़ लड़ाने को होगी, वधू की इस चौथी प्रार्थना को सुन के **वर फिर कहता है कि–**

"ॐ पञ्च पशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु" ।। ५ ।।

भाषार्थ–विष्णुरूप मैं जो वर हूँ पशुओं के सुख के लिए पांचवें मंडल में पांचवें पैर के चलने में तुझको प्राप्त करता हूँ । **भाव यह** है कि मेरे सम्पूर्ण पशुओं की मालिकनी भी तू ही रही । इस तरह अपने आनंद को प्रकट करती हुई **वधू वर से पाँचवीं प्रार्थना करती है –**

"सखीपरिवृता नित्यं गौर्याराधनतत्परा । त्वयि भक्ता भविष्यामि पञ्चमे साऽब्रवीद्वरम्" ।। ५ ।।

भाषार्थ–पाँचवें पैर के धरने में आनन्दित होकर वधू यह प्रार्थना करती है कि मैं आपकी मङ्गल कामना के लिए अपनी सखियों के सहित गौरी की आराधना में तत्पर रहती हुई आप में ही भक्ति भाव करती रहूँगी । **यह सुनके वर फिर कहता है—**

"ॐ षड् ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु" ।। ६ ।।

भाषार्थ–विष्णुरूप मैं जो वर हूँ [1]छहों ऋतुओं के सुख के लिए

---

१ "हिमशिशिरवसन्त ग्रीष्मवर्षाशरत्सु च । स्तनतपनवनाम्भोहर्म्यगोक्षीरपानैः । सुखमनुभव राजन् ! शत्रवो यान्तु नाशं दिवसकमल लज्जाशर्वरी रेणुपंकैः" ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऋतु-ऋतु के अनुसार जुदे-जुदे सुखों के लिए तेरे को छठे मण्डल में पैर धरने को प्राप्त करता हूँ। **फिर वधू वर से प्रार्थना करती है–**

"यज्ञे होमे च दानादौ भवेयं तव वामतः। यत्र त्वं तत्र तिष्ठामि पदे षष्ठेऽब्रवीद्वरम्" ।। ६ ।।

भाषार्थ–यज्ञ, होम, दानादिकों के देने में आप जहाँ रहोगे वहीं मैं आपकी सेवा में स्थित होऊँगी। **छठे पैर के धरने पर वर वधू से यह कहता है कि–**

"ॐ सखे सप्तपदा भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु" ।। ७ ।।

भाषार्थ–हे सखे ! विष्णुरूप मैं जो वर हूँ आपसे यह कहता हूँ कि यहाँ (**भूर्भुवः स्वः महःजनःतपःसत्यः**) इन सात लोकों में मेरे साथ मेरी आज्ञा में होकर पतिव्रता धर्म शीलसे सुन्दर कीर्ति वाली हो और मेरे अनुकूल हो एवं पातिव्रत शील से उत्पन्न हुए धर्मके अनुकूल रहती हुई तू सात लोकों में विख्यात होगी। **इस प्रकार वर से आनन्दित हुई वधू वर से सातवाँ वचन यह कहती है कि–**

"सर्वेऽत्र साक्षिणस्त्वं हि मम भर्तृत्वमागतः। कृतेन ब्रह्मणा पूर्व विधानेन कुलोत्तम !" ।। ७ ।।

भाषार्थ – हे कुलोत्तम ! यहाँ सम्पूर्ण सभ्यजनों की साक्षी के होते हुए पहली ब्रह्मा की बनाई वेद विधि से आप मेरे भर्त्ता यानी पति हो चुके, अब मेरे आनन्द की कोई सीमा नहीं है।

दक्षिणमें स्थित दृढ़पुरुषके कन्धेसे जलका लोटा लेकर आमके पत्ते से या दुर्वा की प्रोक्षणी से जल लेकर वर वधू के शिर पर [1]अभिषेचन

---

१ "गत्वा पादानि सप्ताथ संयोज्य शिरसी च ते। कुम्भस्य सलिलं सिञ्चेदुभयोः शिरसोः स्वयम्। सौभाग्यजननीं देवीं स्मृत्वा दाक्षायणीं शिवाम्" ।।

इत्याश्वलायनाचार्येण चोभयोः शिरस्यभिषेकस्य विधानाद्वरः स्वयं कलशस्थ सलिलेन स्वमपि सिञ्चेत्।

न चात्र— **"अभिषेके पत्नी वामतः"** इति शास्त्रतः पत्न्या वामे अवस्थानं शक्यम्। पत्न्याः संस्कार्यत्वात्, **"अभिषेके पत्नी वामतः"** इति सामान्यशास्त्रस्य–"दक्षिणतः पति भार्यो-पविशति" इति विशेष शास्त्रेण बाधात् सामान्य शास्त्रस्य चतुर्थीकर्मानन्तरं भार्यात्वसिद्धौ, अन्यत्र अभिषेककर्मणि **"अभिषेके पत्नी वामतः"** इति सामान्यशास्त्रस्य चारितार्थात।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(छींटे) करे।

उसी प्रकार अपनी आत्माका भी वर अभिषेचन करे।

वर ये मन्त्र पढ़े —

"ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ॥ १ ॥

"ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे ॥ २ ॥

"ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः ॥ ३ ॥

ॐ तस्माऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः" ॥ ४ ॥

दिवाविवाहपक्षे

वर वधू से कहे कि सूर्य को देख और वधू सूर्य को देखती हुई मन्त्र पढ़े—

"ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ठं० शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात्" ॥

यदि सूर्यास्त हो जाये तो ध्रुव देखने के लिये वर वधू से कहे— "ध्रुवमुदीक्षस्व"[1] ध्रुव का दर्शन कर। तदनन्तर वधू ध्रुव का दर्शन करे और वर मन्त्र पाठ करे—

"ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पोष्ये मयि। मह्यं त्वाऽऽदाद् बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती सञ्जीव शरदः शतम्"।

यदि उस समय ध्रुव न दीखे तो भी कहे—"पश्यामि"[2]

वर वधू के दाहिने कन्धे पर हाथ रख वधू के हृदय को स्पर्श करता

---

१ स्मृतिसंग्रहे— "सूर्य्यावलोकनादायुरभिवृद्धिर्भवेद् ध्रुवा" ॥
तथा च रेणुः—"ध्रुवं पश्येति तां ब्रूयादित्यवो च त्रिविक्रमः"।

२ "सा यदि न पश्येत्पश्यामीत्येव ब्रूयात्" इति सूत्रम्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुआ यह कहे–

"ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचितं तेऽअस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्"।

अत्र समाचारात्कन्या सप्ताभीष्टानि वाक्यानि निवेदयति।

कन्या भाषते

"तीर्थव्रतोद्यापनदानयज्ञान् मया सह त्वं यदि कान्त कुर्याः। वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं भाषेत वाक्यं प्रथमं कुमारी" ॥ १ ॥

भाषार्थ–कन्या कहती है कि मेरे साथ यदि आप तीर्थ, व्रत, उद्यापन,दान, यज्ञ आदि करो तो मैं आपके वामाङ्ग में आऊं; यह प्रथम वाक्य कुमारी बोले।

"हव्यप्रदानैरमरान् पितॄंश्च कव्यप्रदानैर्यदि पूजयेथाः। वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं भाषेत कन्या वचनं द्वितीयम्" ॥ २ ॥

भाषार्थ–आप यदि हव्य प्रदान (**हवनीय द्रव्य**) कर देवताओंको, कव्य प्रदान (**श्राद्धीय द्रव्य**) कर पितरों को पूजन कर प्रसन्न करो तो मैं आपके वामाङ्ग में आऊं, यह कन्या द्वितीय वाक्य बोले।

"कुटुम्बरक्षाभरणे यदि त्वं कुर्याः पशूनां परिपालनं च। वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं भाषेत कन्या वचनं तृतीयम्" ॥ ३ ॥

भाषार्थ–आप यदि कुटुम्ब की रक्षा पालन करें और पशुओं का पालन करें तो मैं आपके वामाङ्ग में आऊं, यह कन्या तीसरा वाक्य बोले।

"आयव्ययौ धान्यधनादिकानां दृष्ट्वा गृहे चेदुचितं निदध्याः। वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं भाषेत कन्या वचनं चतुर्थम्" ॥ ४ ॥

भाषार्थ–आप धान्यधनादिकों का आय व्यय देख कर घर में उचित व्यवस्था करो तो मैं आपके वामाङ्गमें आऊं, यह कन्या चतुर्थ वाक्य बोले।

"देवालयारामतडागकूपवापीर्विदध्या अथ पूजयेथाः। वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं भाषेत कन्या वचनं च पञ्चमम्" ॥ ५ ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भाषार्थ–आप यदि मन्दिर, बगीचा, तालाब, कूप (कूआ), बावड़ी बनाओ और उनकी प्रतिष्ठा कराओ तो मैं आपके वामाङ्ग में आऊं, यह कन्या पांचवां वाक्य बोले ।

"देशान्तरे वा स्वपुरान्तरे वा यदि प्रकुर्याः क्रयविक्रयौ त्वम् ।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं भाषेत कन्या वचनं च षष्ठम्" ।। ६ ।।

भाषार्थ–परदेशमें या स्वदेश में आप क्रय-विक्रय करें तो मैं आपके वामाङ्गमें आऊं, यह कन्या छठा वचन बोले–

" न सेवनीया परपूर्विका स्यात् काले त्वया भाविनि भामिनीति ।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं भाषेत कन्या वचनं च सप्तमम्" ।। ७ ।।

भाषार्थ–आप भविष्यमें अत्यन्त प्रबल कामना होने पर भी दूसरे की स्त्रीका सेवन न करें और एक पत्नीव्रत धारण करें तो मैं आपके वामाङ्गमें आऊं, यह कन्या सप्तम वचन बोले ।

वरो ब्रूते

"उद्याने [1]मद्यपस्थाने परगेहे गमनं तथा ।
परपुंसारतिर्गीतं हास्यं वर्ज्यं त्वया सदा ।। १ ।।
अन्तर्गेहे स्थितानित्यं सुखदुःखानुभोगिनी ।
यदा तिष्ठसि भद्रे ! त्वं पालनीया सदा मम" ।। २ ।।

भाषार्थ–आप बगीचे में तथा शराबियोंके स्थानमें अकेली न जाना तथा पर पुरुषके साथ क्रीड़ा करना, गाना, बजाना और हंसना

---

१. "पानं दुर्जनसंसर्गः पत्या च विरहोटनम् ।
स्वप्नश्चान्यगृहे वासो नारीणां दूषणानि षट्" ।।
"द्वारोपवेशनं नित्यं गवाक्षेण निरीक्षणम् ।
असत्प्रलापो हास्यं च दूषणं कुलयोषिताम्" ।।
"असत्यं साहसं माया मात्सर्यं चलचित्तता ।। निर्गुणत्वमशौचत्वं स्त्रीणां दोषाः स्वभावजाः ।।
"स्त्रीभिर्भर्तृवचः कार्यमेष धर्मः परः स्त्रियाः ।।"
"गुरुरग्निर्द्विजातीनां वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः । पतिरेको गुरु स्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतो गुरुः ।।"
"पिता रक्षति कौमारे भर्त्ता रक्षति यौवने ।
पुत्रश्च स्थाविरे भावे न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति" ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आदि तुझे सर्वदा छोड़ देना चाहिये । घरके भीतर रहती सुख तथा दु:खको भोगती हुई स्थित होगी तो मैं अवश्य तुम्हारा पालन करूंगा ।

"उद्याने सोमपाने च पितुर्गृहगमेऽपिच ।
मदाज्ञां लंघयित्वा तु न गच्छेर्यदि सुन्दरि" ।। ३ ।।

भाषार्थ--आप बगीचे तथा शराब पीनेके स्थानमें और अपने पिताके घरमें भी मेरी आज्ञाका उल्लंघन करके यदि न जाओ तो मैं तुम्हारा पालन करूंगा ।

"सदैव सेवां कुरु मे गुरूणां मदीयचित्तानुगताच भूयाः ।
पतिव्रताधर्मपरायणात्वं--गृहस्थकार्यं सकलं कुरुष्व" ।। ४ ।।

भाषार्थ--सदैव मेरे माता पिताकी सेवा करती हुई मेरे मनके अनुसार तुम चलना । पतिव्रता धर्मका पालन करती हुई सारे ही गृहस्थ कार्योंको सुचारु रूपसे तुम करती रहो तो मैं तुम्हें वामाङ्गमें ले सकता हूं ।

"मदीय चित्तानुगतं च चित्तं सदा मदाज्ञापरिपालनं च । पतिव्रताधर्मपरायणा त्वं कुर्याः सदा सर्वमिमं प्रयत्नम्" ।। ५ ।।

भाषार्थ--मेरे चित्तके अनुगत आपका चित्त हो सदा मेरी आज्ञाका परिपालन करो । पतिव्रत धर्म्म में परायण हो यह सब प्रयत्न तुम सदा करो ।

यहाँ शिष्टाचारसे वधूको वरके [1]वाम भागमें बैठावे। अनामिकाग्र वधूके शिरपर रख वर अभिमंत्रण करे। पीछे वर अनामिकाग्रसे सिन्दूर[2] वधूके मस्तक पर डाले और मन्त्र पढ़े--

"ॐ सुमङ्गलीरियं वधूरिमा ७ समेत पश्यत । सौभाग्यमस्यै दत्वा याथाऽस्तं विपरेत न" ।

---

१ सं० गणपतौ--"वामे सिन्दूरदाने च वामे चैव द्विरागमे । वामेऽशनैकशय्यायां भवेज्जाया प्रियार्थिनी ।।"

२ तथा च रेणुः-- "पाणिभ्यां संहताभ्यां च स तामेवाभिमन्त्रयेत् । सुमङ्गली'-रियमिति मन्त्रेणार्थ वरस्त्रियः । पतिपुत्रान्विता भव्याश्चतस्रः सुभगा अपि । सौभाग्यमस्यै दद्युस्ता मङ्गलाचारपूर्वकम्" ।।

"आचारात्स्त्रियः सिन्दूरादीनि कुर्वन्ति ।" गदाधर भाष्ये तत्पदार्थक्रमेच ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वर ब्रह्माका अन्वारब्ध कर—

"ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा"। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

संस्रवप्राशन कर आचमन करे पूर्णपात्र दक्षिणा सहित ब्रह्माको देवे।

वर स्वदक्षिणहस्तमें पूर्णपात्र लेकर संकल्प करे—

"ॐ अद्य कृतस्य विवाह होमकर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थमिदंपूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतं सदक्षिणाकममुकगोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे"।

ब्रह्मा कहे—"ॐ स्वति"।

आचार्यको सुवर्णादि दक्षिणा देवे।

यजमान स्वदक्षिण हस्तमें यथाशक्ति दक्षिणा लेकर संकल्प करे—

"अद्य कृतैतद्विवाह होमकर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं [1]गोप्रत्याम्नायीभूतमिदं द्रव्यममुकगोत्राय अमुकशर्मणे आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे"।

आचार्य कहे —"ॐ स्वस्ति"।

ऐसे ही होता ऋत्विगादिकोंको भी यथाशक्ति दक्षिणा देवें।

ततो ब्रह्मग्रन्थि[2] विमोकः।

पुरोहित प्रणीताके जलसे वधूवर और दाताके शिर पर जलके छींटे देवे और पवित्रीको [3]अग्निमें छोड़ दे। यह मन्त्र पढ़े—

"ॐ सुमित्रियानऽआपऽओषधयः सन्तु"।

ईशान दिशामें प्रणीता उलटा देवे। यह मन्त्र पढ़े—

तत्रमन्त्रः—"ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः"।

आस्तरण क्रमसे कुशाओंको उठाकर घृतमें भिगोय कर हाथसे आहुति देवे।

---

१ "गौर्ब्राह्मणस्य वरो ग्रामो राजन्यस्याश्वो वैश्यस्य।" (पार० गृ० १—७—९)

२ ब्रह्मणोऽभावपक्षे कौशो ब्रह्मा कार्य इति हरिहर लेखनात् कुशसमुदाये ब्रह्मग्रन्थि कृत्वैव ब्रह्मस्थाने कुशा स्थापनीयाः। कर्मसमाप्तौ तस्यैव ग्रन्थेर्विमोकः कर्तव्य इत्याशयम्

३ बौ० गृ० —"विस्रंस्य पवित्रेऽद्भिः संस्पृश्याग्नावनु प्रहरति"।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तत्रमन्त्रः—"ॐ देवा गातु विदो गातुं वित्वा गातु मित। मनसस्पतऽइमं देव यज्ञ ६ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा"।

(नात्र[1]पूर्णाहुतिहोमः प्रमाणाभावात्।)

त्र्यायुष[2] करणम्

ईशान दिशासे स्रुवसे भस्मी लेकर दक्षिणहस्त की अनामिकाग्रभागसे लगावे—

"ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः" इति ललाटे।

"ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्" इति ग्रीवायाम्।

"ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्"। इति दक्षिणबाहुमूले।

"ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्" इति हृदि।

इसी क्रमसे वधूके भी त्र्यायुष करे।

भूयस्या[3] दक्षिणायाः सङ्कल्पः

वर और यजमान अपने-अपने दक्षिण हाथमें जलाक्षत द्रव्य लेकर संकल्प करें—

"अद्य कृतैतद्विवाहकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारपूर्वक शुभफलप्राप्त्यर्थमिमां भूयसीं दक्षिणां नानाना-

---

१ विवाहादिसंस्कारेषु पूर्णाहुतिं न दद्यात् पारस्करगृह्यसूत्रादावनुक्तत्वात्—"विवाहादि क्रियायां च शालायां वास्तुपूजने। नित्यहोमोपसर्गे च पूर्णाहुतिं न कारयेत्॥"

गो० गृ० सूत्रे च — "विवाहे व्रतबन्धे च शालायां चौरकर्मणि। गर्भाधानादिसंस्कारे पूर्णाहुतिं न कारयेत्।"

मात्स्येऽपि—"शतान्ते वा सहस्रान्ते सम्पूर्णाहुतिरिष्यते। उत्तिष्ठन्मनसा ध्यात्वा वह्निमाज्यफलेन च॥"

इतिवचनाच्छतसहस्रसंख्याऽऽहुतिविशिष्टेषु कर्मसु अन्ते पूर्णाहुतिर्लभ्यते न तु न्यनसंख्याहुतिविशिष्ट होमेष्विति।

२ प्रयोगदीपिकायां वशिष्ठः—"ऐशान्या आहरेद्भस्म स्रुचा वाऽथ स्रुवेण वा। अंकनं कारयेत्तेन शिरः कण्ठांसहृत्सु च। कश्यपस्येति मन्त्रेण यथाऽनुक्रम योगतः"॥

३ "वरोऽपि भूयसीं दद्याद् ब्राह्मणेभ्यो विशेषतः। ऋचां च पाठकेभ्यश्च द्विगुणां दक्षिणा भवेत्"॥

अत्र ब्राह्मणेभ्यो विशेषत इत्युक्त्या तदतिरिक्तानां दीनान्धकृपणानामपि भूयसी दक्षिणादानमव्याहतम्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दीनाथेभ्यो नटनर्तकगायकेभ्यश्च विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये" ।

यहाँ लोकाचारसे पुरोहित वधूवरके तिलककर [1]आरता करे और वरके पिता आदि गोद भरें ।

आचार्यादिकोंको दक्षिणा देकर भूयसी दक्षिणा ब्राह्मणोंको देवे ।

कन्यापिता स्वदक्षिणहस्तमें चावल लेकर आवाहित देवताओं का विसर्जन करे--

"ॐ यान्तु देवगणाः सर्वे विना लक्ष्मी विनायकौ ।

(पूजामादाय मामिकाम्)

इष्टकाम समृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ।

कर्मपूर्तिकामो[2] विष्णुंस्मरेत् ।

ॐ विष्णवे नमः" । तीन बार बोले ।

फिर वर वधू स्त्रियोंके समीप देवी देवताओं के (थाप) आगे जावें ।

---

१ "ग्रामवचनं च कुर्युर्विवाह श्मशानयो" रिति सूत्रम् । विवाहे श्मशाने च वृद्धानां स्त्रीणां वचनं वाक्यं कुर्युः । सूत्रे अनुपनिबद्धमपि वधूवरयोर्वस्त्रयोर्ग्रन्थिबन्धनम्, कन्याया हरिद्रया हस्तलेपनम्, वधूवरयोर्हस्तयोरलक्तकगुटिका धारणम्, चँवरी रोपणम्, वधूवरयो र्नीराजनं (आरतो) वध्वा गोदभरणमादि ताश्च यत्स्मरन्ति तदपि कर्तव्यम् । **च शब्दादेशाचारोऽपि –**

तथा चाश्वलायन :—"अथ खलूच्चावचा जनपदधर्मा ग्रामधर्माश्च तान्विवाहे प्रतीयात् यत्तु मानं तद्वक्ष्याम इति" ।

उच्चावच धर्मानाह शौनक :—"नानाविधा जनपदा ग्राम्याश्चोद्वाहकर्मणि क्रियन्ते लौकिका धर्मास्तेषु तत्कुलपूरुषैः । पूर्वैरनुष्ठितान् कृत्वा कुर्याद्दारपरिग्रहम्" ।।

ग्रामशब्देन स्वकुलवृद्धास्त्रियोऽभिधीयन्ते । ता हि पूर्वपूरुषैरनुष्ठीयमानंसदाचारं स्मरन्ति ।

ग्रामवचनं लोकवचनमिति भर्तृयज्ञः ।

वृद्धाणां स्त्रीणां वचनं कार्यम् –

—"ग्रामं प्राविशतादिति वचनात्तस्मात्तयोर्ग्रामः प्रमाणमिति श्रुतेः ।

विधान पारिजातेऽपि—"कारयन्ति स्त्रियो वृद्धा यत्कर्तव्यमिहैव तत् । प्रमाणवचनं तासां वचनाच्च श्रुतेरिह" ।।

२ "विष्णवर्पितानि कर्माणि सफलानि भवन्ति हि ।
अनर्पितानि कर्माणि भस्मनीव हुतं हविः" ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वरवध्वोस्त्रिरात्रनियमाः

विवाहके दिनसे लेकर तीन रात्री [1]क्षार तथा लवण पदार्थोंको नहीं भक्षण करना चाहिये और विवाहके दिनसे लेकर संवत्सर **(एक वर्ष)** अथवा **बारह रात्रि** अथवा **षट्** रात्रि अथवा **तीन** रात्रितक ब्रह्मचारी रहें। इन दिनोंमें भूमिपर कम्बलादि बिछाकर शयन करें।

इति विवाहकर्मपद्धतिः।

[2]चतुर्थीकर्म

विवाह दिनसे चौथे दिन की रात्रि के अन्तिम प्रहर में अपने घर

---

१ "गोक्षीरं गोघृतं चैव धान्यं मुद्गातिला यवाः।
अक्षारलवणा ह्येते क्षाराश्चान्ये प्रकीर्तिताः"॥
तथा च सत्यव्रतः—"विवाहे दम्पती स्यातां त्रिरात्रं ब्रह्मचारिणौ।
अधः शय्यासिनौ स्यातामक्षारलवणाशिनौ"॥

२ **चतुर्थीकर्मप्रयोजनमप्याह मार्कण्डेयः**—
"चतुरशीति दोषाणि कन्यादेहे तु यानि वै।
प्रायश्चित्तकरं तेषां चतुर्थी कर्म ह्याचरेत्"॥
तथा च हारीतः—रात्रौ चतुर्थी कुरुते सा कन्या सुखदा सदा।
धनधान्य वृद्धिकरी पुत्रपौत्रसमृद्धिदा"॥
चतुर्थी कर्माऽकरणे अनिष्टमपि स्मरन्ति—
"यदा न कुरुते कर्म चतुर्थीव्रतमादितः।
इह जन्मनि वन्ध्या स्यात् वैधव्यं जायते पुनः॥"

इति **शास्त्रप्रामाण्याच्चतुर्थीकर्मण आवश्यकत्वं प्रतीयते। अधुना च ये कर्मठा आलस्यवशादिदं कर्म न कारयन्ति, ते वधूवरयोर्महदनिष्टं सम्पादयन्तास्तथावध्वा भार्यासंज्ञा मनुत्पादयन्तः विवाह कर्मणोऽङ्गवैकल्यं जनयन्ति। चतुर्थीकर्मतः प्राक् तस्या भार्यात्वा भावाद्विवाहैकदेशत्वाच्चतुर्थीकर्मणः—तथा चोक्तं नित्यानुरागिण्याम्।**

"अप्रदानाद् भवेत्कन्या प्रदानानन्तरं वधूः।
पाणिग्रहे तु पत्नी स्याद् भार्य्या चातुर्थी कर्मणि"॥

इति सुधीभिराकलनीम्।

विवाह दिनाच्चतुर्थ्यामपररात्रौ इदं कर्म अवश्यमनुष्ठेयम्। तत्र करणाशक्तौ विवाहानन्तरं तस्मिन्नेवाऽग्नौ तस्यामेव रात्रौ चतुर्थी कर्म सम्पादनीयम्।

तथा चोक्तं संस्कार गणपतौ—"मुख्यकाले यदाऽवश्यंकर्म कर्तुं न शक्यते। गौणकालेऽपि कर्तव्यं गौणोऽप्यत्रेदृशो भवेत्। काललोपो यदि भवेत् कर्मलोपं न कारयेत्"॥

तथा चोक्तं—"तमेवाग्निमुपसमाधाय" इति सूत्राच्च प्राप्नोत्येवेति।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में वर वधू के साथ मङ्गलस्नान कर शुद्ध वस्त्र पहन कर अच्छे आसन पर बैठकर अपने दक्षिण में वधू को बैठाकर आचमन प्राणायाम करे और स्वदक्षिण हस्त में जलाक्षत द्रव्य लेकर **संकल्प करे**--

"ममास्या वध्वा: पत्न्या: सोमगन्धर्वाऽग्न्युपभुक्तत्वदोषपरिहार द्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं विवाहाङ्गभूतं चतुर्थीकर्माहं करिष्ये।"

गणेश-मातृका-नवग्रहादि पूजन कर, तुष, केश शर्करादि रहित वेदी में पञ्चभूसंस्कार करके [1]**"शिखिनामक"** अग्नि स्थापन कर दक्षिण में ब्रह्मास्थापन करके प्रणीतापात्र स्थापित कर स्थालीपाकचरु श्रपण कर पहले की तरह कुशकण्डिका करे। फिर दक्षिण जानु को नीचे कर कुशा से ब्रह्माका अन्वारब्ध कर वर प्रज्वलित अग्निमें स्रुवसे घी की आहुति देवे। हुतशेषाज्यको प्रोक्षणीपात्रमें छोड़े।

"ॐ प्रजापतये स्वाहा" **इदं प्रजापतये न मम १ इति मनसा।**

"ॐ इन्द्राय स्वाहा" **इदमिन्द्राय न मम २ इत्याघारौ**[2]।

"ॐ अग्नये स्वाहा"। **इदमग्नये न मम ॥ ३ ॥**

"ॐ सोमाय स्वाहा"। **इदं सोमाय न मम ॥ ४ ॥** [3]**इत्याज्य-भागौ जुहुयात्।**

वर अन्वारब्ध के विना घी की आहुति देवे--और जलपात्र में संस्रव प्रक्षेप करे--

---

१ "चतुर्थी कर्मणि शिखी धृतिरग्निस्तथा परे"।

२ "आघारौ नासिके ज्ञेयावाज्यभागौ च चक्षुषी। वक्त्रोदरं च कुक्षिश्च कटिर्व्याहृतय: स्मृता:। शिरो हस्तौ च पादौ च पञ्च वारुणकं स्मृतम्। प्राज्यापत्यं स्विष्टकृच्च श्रोत्रे द्वे च प्रकीर्तिते"॥

"पूर्वाघारौ नैर्ऋतात्तु कोणादीशानकोणग:।
होतव्यो वायुकोणात्तु वह्निकोणान्तमुत्तर:"॥

३ "आग्नेयमुत्तरपूर्वार्द्धे वह्निकोणान्तमुत्तर:"॥
आग्नेयमुत्तर पूर्वार्द्धे आग्नेयमाज्यभागकम्।
सौम्यं दक्षिणपूर्वार्द्धे सुसमिद्धेऽथवा पुन:"॥

---

*अत्र कुशकण्डिकां विनापि कर्मकर्तुं शक्यते--"पशु: समानतन्त्र: स्यादिति बौधायनोऽब्रवीत्"। इति बौधायनेन प्रायश्चित्त पशोरग्नीषोमीयपशु समानतन्त्र बोधनात् माध्यन्दिनादिभि: सर्वैरपि तत्पक्षस्य स्वीकारात्। अत्रापि कुशकण्डिकां विनैव विवाहे होमेन समानतन्त्रता स्वीकारात्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"ॐ अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि बाह्मणस्त्वा नाथकामऽउपधावामि याऽस्यै पतिघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा" ॥ १ ॥

इदमग्नये न मम। (जल पात्रमें संस्रव प्रक्षेप करे)

"ॐ वायो प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकामऽउपधावामि याऽस्यै प्रजाघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा" ॥ २ ॥

इदं वायवे न मम। (उदपात्रे संस्रवप्रक्षेपः।)

"ॐ सूर्य्य प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकामऽउपधावामि याऽस्यै पशुघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा" ॥ ३ ॥

इदं सूर्याय न मम। (उदपात्रे संस्रवप्रक्षेपः।)

"ॐ चन्द्र प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकामऽ उपधावामि याऽस्यै गृहघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा" ॥ ४ ॥ **इदं चन्द्राय न मम। (उदपात्रे संस्रव प्रक्षेपः।)**

"ॐ गन्धर्व प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकामऽउपधावामि याऽस्यै यशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा" ॥ ५ ॥ **इदं गन्धर्वाय न मम। (उदपात्रे संस्रव प्रक्षेपः।)**

वर स्थालीपाकमें घी मिला स्रुव से लेकर प्रजापतिका मनसे ध्यान कर आहुति देवे–

"ॐ प्रजापतये स्वाहा" **इदं प्रजापतये न मम। (उदपात्रे संस्रव प्रक्षेपः।)**

आज्य और चरु (खीर) एक साथ लेकर अन्वारब्ध करके स्विष्टकृत हवन करे––

"ॐ अग्नये [1]स्विष्टकृते स्वाहा" **इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।**

---

१ "आज्यभिन्नं यदा होम द्रव्यं स्याद्विधिबोधितम्।
महाव्याहृतिहोमात्प्राक् तदा स्विष्टकृदाचरेत्॥
ततो व्याहृति होमादि सर्वं होमं समापयेत्।
आज्यमेव यदा होमद्रव्यं स्याद्विधिबोधितम्।
तदा सकलहोमान्ते स्विष्टकृद्धोममाचरेत्"॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नवाज्याहुतय

"ॐ भूः स्वाहा" **इदमग्नये न मम ॥ १ ॥**

"ॐ भुवः स्वाहा" **इदं वायवे न मम ॥ २ ॥**

"ॐ स्वः स्वाहा" **इदं सूर्याय न मम ॥ ३ ॥**

"ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषा ७ँ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा" ॥ ४ ॥

इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।

"ॐ स त्वन्नोऽअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठोऽअस्याऽउषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो व्वरुण ठँ० रराणो व्वीहि मृडीक ठँ० सुहवोनऽएधि स्वाहा" ॥ ५ ॥

इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।

"ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयाऽअसि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज ७ँ स्वाहा" ॥ ६ ॥

इदमग्नये अयसे न मम ।

"ॐ ये ते शतं व्वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा व्वितता महान्तः। तेभिर्न्नोऽअद्य सवितोत व्विष्णुर्व्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा" ॥ ७ ॥

इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्य स्वर्क्केभ्यश्च न मम ।

"ॐ उदुत्तमं व्वरुणपाशमस्मदवाधमं व्विमध्यम ७ँ श्रथाय। अथा व्यवमादित्य व्व्रते तवा नागसोऽअदितये स्याम स्वाहा" ॥ ८ ॥

इदं वरुणायादित्यायादितये न मम ।

"ॐ प्रजापतये स्वाहा" ॥ ९ ॥ **इदं प्रजापतये न मम । ततः संस्रव प्राशनम् । पवित्राभ्यां मार्जनम् । अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः ।**

ब्रह्मा के लिये पूर्णपात्र देवे–

"अस्यां रात्रौ कृतस्यास्य चतुर्थीकर्माङ्ग होमकर्मणः साङ्गता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिद्ध्यर्थमिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकममुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे" ।।

"ॐ स्वस्ति ।" ब्रह्मग्रन्थिविमोकः ।

पुरोहित-प्रणीता के जल से वर वधू के शिर पर मार्जन कर अग्निमें पवित्री छोड़ दे–

"ॐ सुमित्रियानऽआपऽओषधयः सन्तु" । "ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः" ।

ईशान दिशामें प्रणीता उलट दें । तदा बर्हिर्होमः ।

वर आम के पत्रों से पूर्वस्थापित जलपात्र से जल लेकर वधू के मस्तक पर "यातेपतिघ्नी" इस मन्त्र से प्रोक्षण करे––

तत्रमन्त्रः– "ॐ या ते पतिघ्नी प्रजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निन्दितातनूर्जारघ्नीं ततऽएनांकरोमि सा जीर्य त्वं मया सह श्री अमुकिदेवि" ।

वर वधूको हुतशेष स्थालीपाक[1] (खीर) खिलावे और मन्त्र पढ़े–

"ॐ प्राणैस्ते प्राणान्त्सन्दधामि । अस्थिभिस्ते अस्थीनि सन्दधामि । मा ९ँ सैस्ते मा ९ँ सानि सन्दधामि । त्वचा ते त्वचं सन्दधामि ।" **इति मन्त्रेण ।**

वर वधू के दाहिने कन्धेपर हाथ रख उसके हृदय का स्पर्श करता हुआ मन्त्र पढ़े ––

"ॐ यत्ते सुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम् । वेदाहं तन्मां तद्विद्यात् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ० शृणुयाम शरदः शतमिति" । **ततस्त्र्यायुषकरणम् ।**

---

१ अत्र केचित् स्थालीपाकमालस्यान्न कुर्वन्ति, तेऽपि मोदकादीन् वधूं भोजयेयुः वधू संस्कारोऽयं न तु द्रव्यप्रतिपत्तिः, अतो द्रव्यस्य नाशदोषादावन्यद्रव्येण प्राशनं कार्यम्–

तथा च रेणुः––वधू संस्कार एवायं प्रतिपत्तिरियं न तु । ततो द्रव्यविनाशादौ द्रव्येणान्येन तद् भवेत् । शेषद्रव्यविनाशादौ लुप्यन्ते प्रतिपत्तयः" ।।

अतो द्रव्यस्य नाशदोषादौ अन्यत् मोदकलाजादिकं वरोवधूं भोजयेत् ।

ब्राह्मणभोजनसंख्यामाह यज्ञपार्श्वे –

––"गर्भाधानादि संस्कारे ब्राह्मणान् भोजयेद्दश । शतं विवाह संस्कारे पञ्चाशन्मेखलाविधौ । आवसथ्ये त्रयोविंशच्छ्रोताधाने शतात्परम् । अष्टकं भोजयेत् त्रीन्वातत्तत्संस्कारसिद्धये" इति ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आचार्यादिकों को दक्षिणा देकर ब्राह्मणोंको भी भूयसी दक्षिणा देवे और उनसे आशीर्वाद ग्रहण करे।

इति चतुर्थीकर्मप्रयोगः।

"इति श्रीराजस्थानराज्यान्तर्गत श्रीरत्नदुर्गनिवासिना, गौड़-वंशावतंसेन, वशिष्ठगोत्रोद्भवेन, शिवालोपाह्वेन, पण्डित श्रीकस्तूरी-चन्द्रपौत्रेण, श्रीचतुर्थीलालात्मजेन, श्रीगङ्गाधर शर्मणा तामड़ायतेन विरचिता विपुलटिप्पण्या भाषाटीकया सहिता विवाहपद्धतिः समाप्ता"।

साङ्कल्पिक[1] नान्दीश्राद्धम्

तत्रादौ कर्ता अपने आसन पर यज्ञोपवीती [2]उदङ्मुख बैठ, चार

---

१ **सांकल्पिक नान्दीश्राद्धस्वरूपमाह हेमाद्रौ सम्वर्त :—**

—"समग्रं यस्तु शक्नोति कर्तुं नैवेह पार्वणम्। अपि संकल्पविधिना तस्मिन्काले विधीयते॥ पात्रे भोज्यस्य चान्नस्य त्यागः संकल्प उच्यते। तत्प्रयुक्तो विधिर्यस्य स तेन व्यपदिश्यते। तावन्मात्रेण संबद्धं श्राद्धं संकल्पमुच्यते"॥

पिण्डहीनः श्राद्धशब्दः संकल्पश्राद्धपर्यायः। नान्दीश्राद्धं त्रिविधम्

—विवाहादि नित्यनैमित्तिकं, पुत्रजन्माद्यनियतनिमित्तमग्न्याधानादि निमित्तं चेति। तत्र विवाहादि निमित्तं प्रातः कार्यम्। **तदाह शातातपः**—"प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम्"।

अत्र प्रातः शब्दः सार्द्धप्रहरात्मककाल वचनः।

तदाह गार्ग्यः—"ललाट सम्मिते भानौ प्रथमः प्रहरः स्मृतः। स एव सार्द्धसंयुक्तः प्रातरित्यभिधीयते"॥

अग्न्याधाननिमित्तं त्वपराह्णे कार्यम्—

तदाह गालवः—"पार्वणं चापराऽह्णे तु वृद्धिश्राद्धं तथाग्निकम्" इति।

अग्न्याधाननिमित्तं वृद्धिश्राद्धमपराह्णे कुर्यादित्यर्थः। पुत्रजन्मादौ निमित्तानन्तरमेव तत्कार्यम्।

तथा च शातातपः—पूर्वाह्णे मातृकं श्राद्धं मध्याह्ने पैतृकं तथा। ततो मातामहानां-च वृद्धिश्राद्धं त्रयं स्मृतम्"॥

अस्याप्यसंभवे — आह वृद्धमनुः—"अलाभे श्राद्धकालानां नान्दीश्राद्धत्रयं बुधः। पूर्वेद्युरेव कुर्वीत पूर्वाह्णे मातृपूर्वकम्॥" **इदं च**

महत्सु कर्मसु। अल्पेषु तु कर्माह एव श्राद्धम्।

२ **अत्र कर्तुर्दिङ्नियमोऽभिहित आश्वलायन गृह्यपरिशिष्टे सं० गणपतौ च—"**

—"आभ्युदयिके युग्मा ब्राह्मणा अमूला दर्भाः प्राङ्मुखेभ्य उदङ्मुखो दद्या-"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पलाशके पत्तों पर दक्षिणोत्तरक्रमसे प्रागग्र चार [1]कुशबटु निर्माण कर स्थापित करे।

फिर कर्मसौकर्यार्थ कर्मपात्र जलसे पूर्णकर **दूर्वा, दधि, गन्ध, पुष्प, यव** गेरकर आचमन प्राणायाम कर विष्णुका स्मरण करे। "ॐ श्राद्धकाले गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्। मनसा च पितृन्ध्यात्वा नान्दी श्राद्धं समारभेत्" ॥

कर्मपात्रजल से श्राद्धीय द्रव्योंका प्रोक्षण करे–

"ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याऽभ्यन्तरः शुचिः" ॥ १ ॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ३। तीन बार बोले। कर्ता स्वदक्षिणहस्तमें दूर्वा, यव जल द्रव्यादि लेकर देशकालका संकीर्तन करे–

"मम स्वकीय पुत्रविवाहे **(स्वकीय कन्या विवाहे)** सम्भाव्यमान जननाशौचपातकादि निरसनपूर्वक विवाहकर्मणः साङ्गतासिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सांकल्पिकविधिना ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तान्न निष्क्रयीभूत यथाशक्ति हिरण्येन नान्दीश्राद्धं करिष्ये।"

तदङ्गत्वेनादौनिर्विघ्नतार्थं गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनं दिग्रक्षणं रक्षाबन्धनं च करिष्ये।"

इस प्रकार संकल्प कर गणपति [3]मातृका पूजनादि पहले की तरह कर नान्दी श्राद्ध करे।

---

* दुदङ्मुखेभ्यो वा प्राङ्मुखो द्वौ दर्भो पवित्रे।" अत्र प्राङ्मुखेभ्य उदङ्मुखो दद्यादित्युदङ्मुखता नियमः। उदङ्मुखेभ्यो वा प्राङ्मुख इत्यनेन प्राङ्मुखत्वोदङ्मुखत्वयोर्विकल्प उक्तः।

अतएव हेमाद्रौ मार्कण्डेय पुराणे— "उदङ्मुख प्राङ्मुखो वा यजमानः समाहितः। वृद्धिश्राद्धं प्रकुर्वीत नान्यवक्त्रः कदाचन" इति।

सं० दीपके—"प्राङ्मुखेषूदङ्मुखो दद्यादुदङ्मुखेभ्यः प्राङ्मुखो वा **इत्येव श्रुतिः।**

१ **यज्ञादौ क्रियमाणनान्दीश्राद्धे मङ्गलकर्मादौ क्रियमाणे कुशास्थाने दूर्वा एव**
—"कुशस्थाने तु दुर्वाःस्युर्मङ्गलस्याभिवृद्धये।" **इति संस्कार भास्करीय वचनात्।**
—"कुशबटूनां मुखकल्पना च अग्रेण कार्येति **रुद्रकल्पद्रुमे।**

२ "श्रीलक्ष्मीश्च धृतिर्मेधाः पुष्टिः श्रद्धा सरस्वती ॥
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः" ॥

३ **विष्णुपुराणे**—"अकृत्वा मातृयागं तु वैदिकं यः समाचरेत्। तस्य क्रोध समायुक्ता हिंसामिच्छन्ति मातरः। यत्र यत्र भवेच्छ्राद्धं तत्र तत्र च मातरः" ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पाद्यादिदानम्

कर्ता ताम्रपात्र में दूर्वा यव जल लेकर प्रथम चट पर पाद्य देवे–

"ॐ सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवा नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः" ॥ १ ॥ "अमुकगोत्रा° मातृपितामहीप्रपितामह्य नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पदावनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः"। **इति द्वितीय चटे पाद्यं दद्यात्।**

"अमुकगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहा नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः"। **इति तृतीयचटे पाद्यं दद्यात्।**

"**द्वितीयगोत्रा** मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीका नान्दीमुखाः–ॐ भूर्भुवः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहाः सम्पद्यतां वृद्धिः"। **इति चतुर्थचटे पाद्यं दद्यात्।**

अथासनदानम्

"सत्यवसुसंज्ञकानां विश्वेषां देवानां नान्दीमुखानां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः सम्पद्यतां वृद्धिः। नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम्। ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवावः" ॥ १ ॥

कुशत्रयरूप यव सहित आसन दक्षिण से आरंभ कर छोड़े। इसी प्रकार उत्तर से उत्तर की ओर–

"अमुकगोत्राणां मातृपितामहीप्रपितामहीनां नान्दीमुखीनां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः सम्पद्यतां वृद्धिः। नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुयावः" ॥ २ ॥

"अमुकगोत्राणां पितृपितामहप्रपितामहानां नान्दीमुखानां ॐ

---

१ अत्र संकल्पादौ विशेषः संग्रहेः— "शुभाय प्रथमान्तेन वृद्धौ संकल्पमाचरेत्। न षष्ठ्या यदि वा कुर्यान्महादोषोऽभिजायते"।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा[1] नमः सम्पद्यतां वृद्धिः नान्दी-श्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् । ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवावः" ।। ३ ।।

द्वितीयगोत्राणां मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नी-कानां नान्दीमुखानां "ॐ भूर्भुवः स्व इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः सम्पद्यतां वृद्धिः । नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् । ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवावः" ।। ४ ।।

गन्धादिदानम्

कर्ता गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, ताम्बूल, यज्ञोपवीत और वस्त्र (धोती गोच्छा) आसन पर धरे–

"ॐ सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्योदेवेभ्यो नान्दीमुखेभ्य इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः" ।। १ ।।

---

१ **परिशिष्टे ईश्वर** :—"कुर्यात्स्वाहा स्वधा स्थाने वाचने प्रीयतामिति । वृद्धिश्राद्धे सर्वत्र नमो मे वृद्धिरिष्यते" ।।

पुराणसमुच्चयेच —"न स्वधा शर्मबर्मेति पितृनाम न चोच्चरेत् । न कर्म पितृतीर्थेन न कुशा द्विगुणीकृताः ।। न तिलैर्नापसव्येन पित्र्यमन्त्रविवर्जितम् । अस्मच्छब्दं न कुर्वीत श्राद्धे नान्दीमुखे क्वचित् ।" **अत्र— "पितृनाम न चोच्चरेत्" "अस्मच्छब्दं न कुर्वीत ।" इति शाखान्तरं विषयं,** स्वशाखायां न स्वधां प्रयुञ्जीतेति स्वधा शब्दमात्र निषेधस्योपलम्भात् ।

मदनरत्ने–दानखंडे टोडरमिश्रपद्धतौ च आभ्युदयिकश्राद्धे सर्वत्र गोत्र शर्म शब्द-नाम्नामुच्चारणं लिखितम् । सम्बन्धाद्युच्चारणे क्रमनियमाह हेमाद्रौ भृगुः—

"गोत्रसम्बन्ध नामानि पितृकर्मणि कीर्तयेत् ।"

तत्रैव व्यास :—"गोत्रसंबंध नामानि पितॄणामनुकीर्तयन् । एकैकस्य तु विप्रस्य अर्घपात्रं विनिक्षिपेत् । **याज्ञवल्क्योऽपि**–"गोत्रनामस्वधाकारैस्तर्पयेदनुपूर्वशः ।

अन्यादृशक्रमः शाखान्तर विषयः । माध्यंदिनादीनां याज्ञवल्क्योक्तक्रमस्यैवो पादातु मुचितत्वात् तस्य च तेषां गुरुत्वादिति संस्कारदीपके ।

तथा च हेमाद्रौ शातातप :— "कर्तव्यं चाभ्युदयिकं श्राद्धमभ्युदयार्थिना । सव्येन चोपवीतेन ऋजुदर्भैश्च धीमता । पितृणां रूपमाख्याय देवाअन्नं समश्नुते ।। तस्मात्सव्येन दातव्यं वृद्धिश्राद्धे तु नित्यशः । यथैवोपचरेद्देवांस्तथा वृद्धौ पितॄनपि ।"

छन्दोगपरिशिष्टे कात्यायनोऽपि— दक्षिणं पातयेज्जानु देवान्परिचयेत्सदा । पातये-दितरज्जानु पितॄन्परिचरन्नपि ।। निपातो न हि सव्यस्य जानुनो विद्यते क्वचित् । सदा परिचरेद्भक्त्या पितॄनप्यत्र देववत्" ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"अमुकगोत्राभ्यो मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्य इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः" ।। २ ।।

अमुकगोत्रेभ्यः पितृपितामहप्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्य इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।। ३ ।।

"**द्वितीयगोत्रेभ्यो** मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्य इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः" ।। ४ ।।

ततो भोजननिष्क्रय द्रव्यदानम्

कर्ता दक्षिणहस्तमें हिरण्य जल लेकर—

"ॐ सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यो ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतं किञ्चिद्धिरण्यं दत्तममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः" ।। १ ।।

"अमुकगोत्राभ्यो [1]मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यो ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतं किञ्चिद्धिरण्यं दत्तममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः" ।। २ ।।

अमुकगोत्रेभ्यः पितृपितामहप्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्यो ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतं [2]किंचिद्धिरण्यं दत्तममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः" ।। ३ ।।

"**द्वितीयगोत्रेभ्यो** मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यो ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतं किंचिद्धिरण्यं दत्तममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः" ।। ४ ।।

ततः [3]सक्षीरमुदकदानम्

यजमान दुग्धमिश्रित जल दान देवे—

---

१ **छंदोगसूत्र** — "माता पितामहीचैव तथैव प्रपितामही । पित्रादयस्त्रयश्चैव मातुः पित्रादयस्त्रयः । एते नवार्चनीयाः स्युः पित्तरोऽभ्युदये द्विजैः इति ।

२ नान्दीश्राद्धे—अन्नाभावे आनम् । आमाभावे हिरण्यम् । हिरण्याभावे युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तान्ननिष्क्रयी भूतं यथाशक्ति किञ्चिद्द्रव्यमिति धर्मसिन्धौ ।

३ **ब्रह्मपुराणे** —"तथाऽक्षय्योदकस्थाने दद्यात्क्षीरयवोदकम् ।"

संस्कार गणपतौ मनुः—"होमकाले तथा दोहे पाके च परिवेषणे । सुरार्चनेऽभिषेके च ताम्रे गव्यं न दुष्यति ।"

षट्त्रिंशन्मते:—"स्नानतर्पण दानेषु ताम्रे गव्यं न दुष्यति । होमकार्ये तथा दोहे पाके च परिवेषणे" ।।*

सं० ग० "दोहे होमे च पाके च पूजने परिवेषणे । भोजनं वर्जयित्वा च ताम्रे गव्यं न दुष्यति"।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"ॐ सत्यवसुसंज्ञकाविश्वेदेवा नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्" ।। १ ।।

"अमुकगोत्रा मातृपितामहीप्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्" ।। २ ।।

"अमुकगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहा नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्" । ३ ।।

द्वितीयगोत्रा मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकानान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्" ।। ४ ।।

अथाऽऽशिषो ग्रहणम्

कर्ता साञ्जलि प्रार्थना करे--

यजमान कहे— "गोत्रं नो वर्द्धताम्" ।

ब्राह्मण कहे— "वर्द्धतां वो गोत्रम्"

यज०-- "दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्" ।

ब्राह्मण-- अभिवर्द्धन्तां वो दातारः ।

यज०-- "वेदाश्च नोऽभिवर्द्धन्ताम्" ।

ब्राह्मण--अभिवर्द्धन्तां वो वेदाः ।

यज०--"सन्ततिर्नोऽभिवर्द्धताम्" ।

ब्राह्मण०-- वर्द्धतां वः सन्ततिः ।

यज०-- "श्रद्धा च नो माव्यगमत्" ।

ब्राह्मण-- माव्यगमद्वः श्रद्धा ।

यज०-- "बहुदेयं च नोऽस्तु" ।

ब्राह्मण--अस्तु वो बहुदेयम् ।

यज०-- "अन्नं च नो बहु भवेत्" ।

ब्राह्मण-- भवतु वो बह्वन्नम्

यज०-- "अतिथिश्च लभेमहि" ।

ब्राह्मण-- लभन्तां वोऽतिथयः ।

यज०-- "याचितारश्च नः सन्तु" ।

ब्राह्मण --सन्तु वो याचितारः ।

---

* **ताम्रपात्र निषेधः संग्रहे आचारेन्दौ च** :-"हस्ते धृतानि पुष्पाणि ताम्रपात्रे च चन्दनम् । गङ्गोदकं चर्मपात्रे निषिद्धं सर्वकर्मसु" ।।

श्रीराम प२ले-- "ताम्रपात्रे पयः पानमुच्छिष्टे घृतभोजनम् । दुग्धे लवण संयुक्तमेते गोमांस भक्षणम्" ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यजमान कहे— "एता आशिषः सत्याः सन्तु।"

ब्राह्मण कहे—सन्त्वेताः सत्याशिषः।

दक्षिणादानम्

"ॐ सत्य[1]वसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्योदेवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्धयर्थं द्राक्षा[2]मलक[3]यवमूल निष्क्रयी दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये सम्पद्यतां वृद्धिः" ॥ १ ॥

"अमुकगोत्राभ्यो मातृपितामही प्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्धयर्थं द्राक्षामलकयवमूल निष्क्रयी दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये सम्पद्यतां वृद्धिः" ॥ २ ॥

"अमुकगोत्रेभ्यो पितपितामहप्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्धयर्थं द्राक्षामलक यवमूलनिष्क्रयी दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये सम्पद्यतां वृद्धिः" ॥ ३ ॥

"**द्वितीयगोत्रेभ्यो** मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्धयर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयी दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये सम्पद्यतां वृद्धिः" ॥ ४ ॥

यजमान कहे—"नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्"।

ब्राह्मण कहे—"सुसम्पन्नम्"।

विसर्जनम्

"ॐ व्वाजे व्वाजेवत व्वाजिनो नो धनेषु विप्राऽअमृताऽऋतज्ञाः। अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्तायात पथिभिर्देवयानैः" ॥ १ ॥

---

१ "इष्टिश्राद्धे क्रतुदक्षौ नान्दौ सत्यवसु तथा। पुरूरवार्द्रवौ चाऽब्दे तीर्थे तु धूरिलोचनौ ॥ कालकामौ सपिण्ड्यां च कुरुकुत्सौ महालये। तर्पणे चैव विज्ञेया विश्वेदेवास्त्रयोदश" ॥

२ **यथा—ब्रह्मपुराणे**—"द्राक्षामलकमूलानि यवांश्चापि निवेदयेत् ॥ तान्येव दक्षिणा चैव दद्याद्विप्रेषु सर्वदा" ॥

३ "मूलमार्द्रकम्" ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आमा व्वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावा पृथिवी व्विश्वरूपे। आमागन्ता पितरा मातरा चामा सोमोऽअमृतत्वेन गम्यात्" ।। २ ।।

कर्ता इन दोनों मन्त्रोंसे विसर्जन कर यह कहे--

"अस्मिन्नान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् नान्दीमुखप्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु"।

ब्राह्मण कहे–"अस्तु परिपूर्णः"।

इति नान्दीश्राद्धम्।

मङ्गलाष्टकम्

"श्रीमत्पङ्कजविष्टरो हरिहरौ वायुर्महेन्द्रोऽनलश्चन्द्रो भास्कर-वित्तपालवरुणाः प्रेताधिपादिग्रहाः। प्रद्युम्नो नलकूवरः सुरगजश्चिन्तामणिः कौस्तुभः स्वामी शक्तिधरश्च लाङ्गलधरः कुर्वन्तु नो मङ्गलम्" ।। १ ।।

"गङ्गा गोमतिगोपतिर्गणपतिर्गोविन्द गोवर्द्धनो गीतागोमय गौरिजो गिरिसुता गङ्गाधरो गौतमः। गायत्री गरुडो गदाधर गया. गम्भीर गोदावरी गन्धर्वग्रहगोपगोकुलगणाः कुर्वन्तु नो मङ्गलम्" ।। २ ।।

"नेत्राणां त्रितयं शिवं पशुपतेरग्नित्रयं पावनं पुण्यं विष्णुपदत्रयं त्रिभुवनं ख्यातं च रामत्रयम्। गङ्गावाहपथत्रयं सुविमलं देवत्रयं ब्राह्मणं सन्ध्यानां त्रितयं द्विजैः सुविहितं कुर्वन्तु नो मङ्गलम्" ।।३।।

"गौरी श्रीः कुलदेवता च सुभगा भूमिः प्रपूर्णा शुभा सावित्री च सरस्वती सुरनदी सत्यव्रतारुन्धती। सत्या जाम्बवती च रुक्मभगिनी दुःस्वप्नविध्वंसिनी वेला चाम्बुनिधेः सुमीनमकराः कुर्वन्तु नो मङ्गलम्" ।। ४ ।।

"अश्वत्थो वटवृक्षचन्दनतरुर्मन्दारकल्पद्रुमौ जम्बूनिम्बकदम्बचूत-

---

१ "विवाहे निष्क्रमे काम्ये द्वयौ पूर्तौ समागमे। उत्सवेषु च सर्वेषु प्रशस्तं मङ्गलाष्टकम"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सरला वृक्षाश्च ये क्षीरिणः। सर्वे ते फलसंयुताः प्रतिदिनं विभ्राजनं राजते रम्यं चैत्ररथं च नन्दनवनं कुर्वन्तु नो मङ्गलम्" ॥ ५ ॥

"वाल्मीकिः सनकः सनन्दनतरुर्व्यासो वशिष्ठो भृगुर्जावालिर्जमदग्निकच्छजनको गर्गाऽङ्गिरा गौतमः। मान्धाता भरतो नृपश्च सगरो धन्यो दिलीपो नलः पुण्यो धर्मसुतो ययातिनहुषौ कुर्वन्तु नो मङ्गलम्" ॥ ६ ॥

"लक्ष्मीः कौस्तुभपारिजातकसुरा धन्वतरिश्चन्द्रमा गावः कामदुघाः सुरेश्वरगजो रम्भादिदेवाङ्गनाः। अश्वः सप्तमुखः सुधा हरिधनुः शंखो विषं चाम्बुधे रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मङ्गलम्" ॥ ७ ॥

"गङ्गा-सिन्धु-सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा कावेरी सरयू महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका। क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी रव्याता गया गण्डकी पूर्णाः पूर्णजलैः समुद्रसहिता कुर्वन्तु नो मङ्गलम्" ॥ ८ ॥

"इत्येवं वरमङ्गलाष्टकमिदं पापौघविध्वंसनं पुण्यं सन्मति कालिदास कविना प्रातः प्रबोधे कृतम्। यः प्रातः श्रृणुयात्समाहितमना दत्वा महादक्षिणां गङ्गासागर सङ्गमोद्भवफलं प्राप्नोति पुण्यं महत्" ॥ ९ ॥

इति मङ्गलाष्टकं समाप्तम्।

भाषाशाखोच्चारः

"श्रीगणनायक सुमर कर मनमें बारंबार।
सीता राम विवाह का वरणूं शाखोच्चार ॥ १ ॥
पुरा जनक मिथिलेश नें यह प्रण किया कठोर।
सीता वरणूं मैं उसे जो शिव धनु दे तोर ॥ २ ॥
यह प्रण कर भूपालने रचा स्वयंवर फेर।
भूपोंको न्यौता दिया तनिक करी ना देर ॥ ३ ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विश्वामित्र के साथ फिर आये श्रीरघुनाथ।
जिनके लक्ष्मणलालजी अनुजभ्रात थे साथ ।। ४ ।।
और भी आये बहुतसे मिलकर भूप अनेक।
खातिर कीनि जनकने कमी रखी ना तेक ।। ५ ।।
क्षत्री धनुष उठावते मिलकर बारंबार।
पर वह हिलता तक नहीं गये भूप सब हार ।। ६ ।।
देख नृपोंकी यह दशा क्रुद्ध भए मिथिलेश।
बोले जाना क्षत्री अब रहे न भूपर शेष ।। ७ ।।
प्रण करता मैं ना कभी जो यह लेता जान।
भूपर भूप रहा नहीं कोई भी बलवान् ।। ८ ।।
रामचन्द्र ऊठे तभी सुन यह वचन कठोर।
उठा धनुष टंकोर कर भू पर गेरा तोर ।। ९ ।।
धनुके टूटत ही भई तहँ पर जयजयकार ।
तभी सिया ने राम के जयमाला दी डार ।। १० ।।
दशरथ नृपको फिर तभी नौता दिया भिजाय।
पुनः सजाकर जान को वे भी पहुँचे आय ।। ११ ।।
पुरमें पहुँची जब सुनी शुभ बरात भूपाल।
खातिर कीनी बहुतसी सभी हुये खुशहाल ।। १२ ।।
घोड़े पर चढ़ कर चले दूल्हा बन रघुनाथ।
पीछे जान सुहावनी चारों भाई साथ ।। १३ ।।
बहुविधि बाजा बज रहे भेरी ढोल मृदंग।
नृत्य करत तहँ अप्सरा सब के चित्त उमंग ।। १४ ।।
तोरण चटकी रामने किया आरता फेर।
विप्रों को दी दक्षिणा कीनी बहुत बखेर ।। १५ ।।
शतानन्द आये तभी वेदी रची अनूप।
नारी मंगल गावतीं बैठे सजकर भूप ।। १६ ।।
मण्डप रत्नों से जड़ा सुन्दर बन्दनवार।
कनक कलश पूरति धरे महिमा वड़ी अपार ।। १७ ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विप्र वेद तहं पढ़त हैं शुद्ध ध्यानके साथ।
विष्टर आर्दिक दे रहे जनक रामके हाथ ।। १८ ।।
कियो फेर मिथिलेशने सादर कन्या दान।
लियो राम हर्षायके सुनियो चतुर सुजान ।। १९ ।।
दान घनेरा फिर दिया धेनू रत्न अपार।
विप्रों को दी दक्षिणा कीनी जय जयकार ।। २० ।।
हुआ रामका जिस तरह मिथिला मांहि विवाह।
उसी तरह होवे यहाँ सब के मन उत्साह ।। २१ ।।
विश्वम्भर को सुमिर कर कीना शाखोच्चार।
भूल चूक कवियो मेरी लेना आप सुधार" ।। २२ ।।

इति नारनौल निवासी हरनारायणकृत भाषा-शाखोच्चार समाप्तः ।

द्वितीय शाखोच्चारः

"गजमुख प्रथम मनायके, गुरु पद पंकज ध्याय। सकल सभा चितदे सुनो, भाषा रची बनाय ।। १ ।। रामचन्द्र सीतापति, राधा नन्दकुँवार। सावित्री ब्रह्मापति, रच्यो सकल संसार ।। २ ।। कौशल्या दशरथ पति, इन्द्राणी इन्द्राज। ईश्वर परणी गौरज्या, दमयन्ती नलराज ।। ३ ।। वसिष्ठ ब्याहि अरुन्धती, अर्जुन द्रौपदि साथ। चन्द्रभार्या रोहिणी, ऋद्धिसिद्धि गणनाथ ।। ४ ।। शंभू पारवती पति, लक्ष्मीपति भगवान्। जिन ध्याये आनन्दघणा, सुमिरो सबइ सुजान ।। ५ ।। नांव जो इतना पत्नीको, सुन्दर पुरुष सुजान। सुन्दर देखत सकल मिल, अपने अपने स्थान ।। ६ ।। गावत मंगलाचार मिल, ध्यावत श्रीगोपाल। जिन ध्याये सुख पाइये, वर कन्या रिछ-पाल ।। ७ ।। पीछे वरणुं विवाहको, रुक्मण भये आनन्द। आये कृष्ण वरात ले, बाजैं भेरी मृदङ्ग ।। ८ ।। घुरत नगारा ढोल सब, मधुर गीत औ चंग। रंग ढोल अति शब्द से, बजे शंख उपशंख ।। ९ ।। गजमाथे श्रीरजत की, नोशत अम्बर झूल। अम्बाड़ी मोतियन जड़ी,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रही फूलसी फूल ।। १० ।। तापै दुलहौ अति सुघड़ पहने उज्ज्वल चीर। शीश मुकुट हीरे जड़े, भले बने यदुवीर ।। ११ ।। सज्जन के द्वारे खड़े, मोतियन चौक पुराय। कियो आरतो शुभ घड़ी, तोरण लियो छुवाय ।। १२ ।। सिंहासन बैठे सांवरे, राधा नन्द-कुँवार। मानु ऊगतो शरद चन्द, सोला कला सँवार ।। १३ ।। गणपति की पूजा करी, ब्रह्मा वेद पढन्त। कीन्ही आज्ञा निजनकूं, ज्ञानवन्त धनवन्त ।। १४ ।। तिलक जो कियो ललाट पर, अक्षत धरे बनाय। दयी दक्षिणा द्विजनकूं, लयी सबी मन भाय ।। १५ ।। दे अशीश ब्राह्मण चले, सुखी रहो यजमान। इहँ विधि कन्यादान दे, भोत कियो सनमान ।। १६ ।। करी कृपा हरनाथजी, जादू रची बनाय। या जोड़ी अविचल सदा, दुलहिन दूलोराय ।। १७ ।। इतीक मेरी उक्ति है, शाखा कही बनाय। ब्रजनन्द सुतकी बीनती, सुन लीज्यो रघुराय" ।। १८ ।। इति।

तृतीय शाखोच्चारः

"गणपति गौरी पुत्र को, सुमरूँ बारंबार। देवी विष्णु शम्भु को सुमरूँ सृष्टिकर्तार ।। १ ।। पांच देव को ध्याय के, शाखा कहूँ बनाय। राधाकृष्णके व्याह की, सुनियो चित्त लगाय ।। २ ।। जो सुनके सुख होयगो, सबहीके मनमाहिं। दुःख मिटें संकट कटें, सकल पाप मिट जांय ।। ३ ।। एक समय वृषभानुजा, मनमें बहुत विचारि। वर ढूंढ़न नापित कहीं ढूंढ़े कृष्ण मुरारि ।। ४ ।। समय देखके व्याहका, शुभ दिन वार विचार। लग्न लिखायो शुभ घड़ी कीन्हों मंगल चार ।।५।। लग्न लेय नापित चल्यो, घर दीन्हो वसुदेव। झोरी डारो कृष्ण की, सब ही कीन्हो नेव ।।६।। व्याह दिवस आयो जभी, सज कर चली बरात। हस्ती घोड़े रथ सजे, मारग नहीं समात ।। ७ ।। नर नारी देखें सभी, मनमें हर्ष उठाय। सो छबि कृष्णबरातकी, हमसे कही न जाय ।। ८ ।। गिरिधारी चौरी चढ़े, पण्डित लिये बुलाय। बहुत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भाँति वेदी रची, मन्त्र पढ़े चित्त लाय ।। ९ ।। दुलहन रानी राधिका वर भये नन्दकुमार । नारी देवें सीठना, हो रहे मङ्गलचार ।। १० ।। नारी कहें कृष्ण से, अति अचरजकी बात । कैसे बारी उमरमें, गिरी उठायो हाथ ।। ११ ।। छन्द कहावें कामिनी, वारि वारि दें दान । कृष्णचन्द्र मुखसे कहें, नारी करें सन्मान ।। १२ ।। श्रीराधा परणायके, विनय करी वृषभान । नन्दराय तुम हो बड़े, मोहि दास कर मान ।। १३ ।। ऐसी विनती करि घनी, दीन्हें दान अघाय । हस्ती घोड़े रथ सभी, दीन्हें बहुत सजाय ।। १४ ।। बहुत दास दासी दिये, गहिने वस्त्र मन भाय । विरषभानके दान की, गिनती कही न जाय ।। १५ ।। होय विदा घरसे चले, बड़े खुशी नन्दराय । सब सुन्दर, बाजे, बजें, ध्वजा फिरकती जाय ।। १६ ।। शाखा कृष्णके व्याहकी, सुने जो चित्त लगाय । दुबध्या मन की बीसरे, सकल काम हो जाय ।। १७ ।। इतीक मेरी उक्ति है, शाखा कही बनाय । चिरंजीव यह वरवधू, सुनो गोत्र चित्तलाय" ।। १८ ।। इति ।

चतुर्थ शाखोच्चारः

जलज सुवन सुतरिपुजनक, तासुतको चित धार । अज सुत सुतके विवाहको, वरणो शाखोच्चार ।। १ ।। अवधपुरी अति पावनी, सरयू गंगा तीर । भक्तनके सुख देन कु, प्रगटे श्रीरघुवीर ।। २ ।। विश्वामित्र महामुनी, जाचे कौशलराज । रघुवर लक्ष्मण संग लिये, यज्ञ सुधारण काज ।। ३ ।। रचो स्वयम्बर जनकजी, करन धनुषको भंग । कौशिक मिथिला पुर गये, दोनों भाई संग ।। ४ ।। खबर भई तब जनक को, आये विश्वामित्र । बहू प्रकार सनमान करी आसन दिये विचित्र ।। ५ ।। बोले बन्दीजन तभी, सुनो भूप दे कान । सो सीताको परणसी, जो तोड़े धनुबान ।। ६ ।। तमक उठे तब मूढ़ जन, कुलके देव मनाय । धनुष टरो नहीं धरणि से, बैठे तेज गमाय ।। ७ ।। जनक वचन तीखे कहे, लक्ष्मण कीनो कोप । भरी सभा के बीचमें, प्रण कीनो पग रोप ।। ८ ।। गुरु की आज्ञा पायके, तब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उठे रघुबीर। धनुष तोड़ टुकड़ा किया, सूर्यवंश रणधीर ।। ९ ।। जनक सुता हरषित भईं, पुष्पमाल लेई हाथ। गल डाली रघुनाथके सब सखियोंके साथ ।। १० ।। परशुराम आये तभी, मनमें क्रोध अपार। विनय करी अवतार लखि, धनुष बाण दिये डार ।। ११ ।। खबर करी अवधेश को, आये जान बनाय। नाना वाहन पालकी, शोभा कही न जाय ।। १२ ।। सामेले जब आईया, जनक सहित परिवार। तोरण बेग छवाईयां, कामण गावे नार ।। १३ ।। गणपतिकी पूजा करी, मोतियन चौक पुराय वस्त्र ग्रंथी बन्धन कियो, सीताको बुलवाय ।। १४ ।। हाथलेवो जोड़ो जब, सुर मुनी वेद पढंत। ब्रह्मादिक अरु वसिष्ठजी, विधिसे हवन करन्त ।। १५ ।। कुलगुरु शाखा पढ़ रहे, हो रही जय जयकार। चारूं भाई परणीया, जनक राय के द्वार ।। १६ ।। हथलेवो छुट्यो जब, दीने रतन अपार। सीताजी के दान को, को कवि वरणे पार ।। १७ ।। दशरथ अति हर्षित भये, अवधपुरीमें आय। माता कीनो आरतो, सुवरण थाल सजाय ।। १८ ।। शहर राजगढ़ गौड़ द्विज, कौशिक गोत्र सुखखान। रूलीरामकी बिनती, सुनयों कृपा निधान ।। १९ ।।

इति रूलीराम कृत शाखोच्चारः।

वंशगोत्रोच्चारणम्

यह कन्यापक्ष का पुरोहित पढ़े–

"श्रीमन्त यशवन्त पुण्यं पवित्रं यजमानसा। रामप्रतापजी परपौत्रीं वांसलस्य गोत्रीम् ।। १ ।। श्रीमन्त यशवन्त पुण्यं पवित्रं यजमानसा। द्वारकाप्रसादजी परपौत्रीं वांसलस्य गोत्रीम् ।। २ ।। श्रीमन्त यशवन्त पुण्यं पवित्रं यजमानसा। चेतरामजी परपौत्री वांसलस्य गोत्रीम् ।। ३ ।। रामचन्द्रजी पौत्रीं सीतारामजी पुत्री। वरकन्या चिरंजीव जोड़ी अमर" ।। ४ ।।

यह वर पक्षका पुरोहित पढ़े –

"साहनपति श्री साहजी, साहन के शिर छत्र। सांवलरामजी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परपौत्र हैं, गर्ग है जिनका गोत्र ।। साहनपति श्री साहजी, साहनके शिर छत्र । श्रीकिसनजी परपौत्र हैं, गर्ग है जिनका गोत्र ।। साहनपति श्रीसाहजी, साहनके शिर छत्र । मथुरादासजी परपौत्र हैं, गर्ग है जिनका गोत्र ।। गोविन्दप्रसादजी पौत्र जगदीशप्रसादजी पुत्र । वरकन्या चिरंजीव जोड़ी अमर ।"

अथाऽऽमन्त्रण श्लोकाः

(१) वर पक्षे—"गुरुरेकः कविरेकः सदसि मघोनः कलाधरोऽप्येकः । अद्भुतमत्र सभायां गुरवः कवयः कलाधराः सर्वे" ।।१।।

(हे सम्बन्धिन् ! मघोनः इन्द्रस्य सदसि सभायां गुरुः एक एव कविः एक एव कलाधरोऽपि एक एव)

हे सम्बन्धीजी ! इन्द्र की सभा में एक ही गुरु बृहस्पतिजी हैं, और कवि शुक्राचार्य भी एक ही हैं और कलाधर चन्द्रमा भी एक ही हैं ।

(अत्र सभायां अद्भुतं यतः सर्वेऽपि सभासदः गुरुवः सन्ति कवयः सन्ति तथा सर्वेऽपि कलाधराः सन्ति)

यहाँ आपकी सभामें तो अत्यन्त ही आश्चर्य है क्योंकि सब गुरु ही गुरु और कवि ही कवि और कलाधर ही कलाधर हैं अर्थात् इन्द्र की सभा आपकी सभाके सन्मुख कुछ भी नहीं है यह अचरज है ।

(२) "अपटः कपटी हिमहीनरुचिः प्रथितः पशुरन्यकलत्ररतः । द्विजराज भवत्सदृशो न हरो न हरिर्न हरिर्न हरिर्न हरिः" ।। २ ।।

(हे द्विजराज ! भवत्सदृशः हरः शिवो न भवति यतः स अपटः)

हे द्विजश्रेष्ठ ! आपके समान शिवजी भी नहीं हैं क्योंकि वे अपट अर्थात् विना वस्त्र हैं आपके वस्त्र हैं ।

(एवं हरिर्विष्णुरपि भवत्सदृशो न यतः स कपटी)

और आपके समान विष्णु भी नहीं हैं क्योंकि वे असुरोंके नाशक हेतु छल कपट भी करते हैं आप तो निष्कपट हैं ।

(तथा हरिः चन्द्रोऽपि न यतः स हिमहीनरुचिः)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और चन्द्रमा भी आपके तुल्य नहीं है क्योंकि अतिशीतलता से उनका तेज हीन है आप तो तेजस्वी हैं।

(हरिः सिंहोऽपि न यतः स पशुः प्रथितः)

और सिंह भी आपके समान नहीं क्योंकि वह पशु प्रसिद्ध है आप मनुष्य हैं।

(तथा हरिः इन्द्रोऽपि न यतः स अन्यकलत्ररतः अस्ति)

और इन्द्र भी आपके समान नहीं है क्योंकि वह पराई स्त्री में रत है आप केवल निज स्त्री में रत हैं, आपमें तो एक भी दोष नहीं है इस कारण आप इन सबों में श्रेष्ठ हैं।

उभयपक्षे—

(३) "ब्रह्माऽभूच्चतुराननस्तव गुणान् वक्तुं यदा नाशकद्रुद्रः पञ्चमुखो बभूव सततं स्तोतुं महोत्साहतः। स्कन्दश्चैवषडाननोऽभवदसौ शेषः सहस्राननो व्रीडामाप्य गतो भुवोऽधरतलं विप्रः कथं शक्नुयाम्" ॥ ३ ॥

(हे सम्बन्धिन्! चतुराननः ब्रह्मा तव गुणान् वक्तुं यदा न अशकत् तदा रुद्रः पञ्चमुखो बभूव, स्तुतिं सततं कुर्वन् न पारमगमत्)

हे सम्बन्धीजी! चार मुखवाला ब्रह्मा जब आपके गुणोंके कहने को समर्थ न हुआ तब रुद्र पांच मुख हो नित्य स्तुति करने लगे परन्तु वे भी पार को न प्राप्त हुए।

(स्कन्दः षडाननः अभूत् सोऽपि पारं न जगाम, शेषः सहस्राननः व्रीडामाप्य पातालं जगाम)

तब स्वामिकार्तिक छः मुख हो स्तुति करने लगे परन्तु पार को न प्राप्त हुए, तब शेष नागने सहस्रमुख हो स्तुति करने लगे परन्तु वे भी पार को न प्राप्त हुए तो लज्जित होकर पाताल को गये।

(तर्हि व्रीडाभारनतः अहं विप्रः कथं शक्नुयाम्)

तब लज्जाके भारसे झुका हुआ जो मैं एक मुखका ब्राह्मण आपकी स्तुति कैसे कर सकता हूँ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(४) "अब्धौ विधौ वधुमुखे फणिनां निवासे स्वर्गे सुधा वसति वै विबुधा वदन्ति। क्षारं क्षयं पतिमृतिर्गरलं निपातः कण्ठे सुधा वसति वै भगवज्जनानाम्" ॥ ४ ॥

(हे सम्बन्धिन् ! वै इति निश्चयेन अब्धौ विधौ वधुमुखे फणिनां निवासे स्वर्गे सुधा वसति इति विबुधा वदन्ति)

हे सम्बन्धीजी ! यह निश्चय है कि समुद्रमें और चन्द्रमामें और स्त्रियोंके मुखमें और सर्पोंके निवासमें अर्थात् पातालमें अमृत वसता है ऐसा पण्डितजन कहते हैं।

(क्षारं क्षयं पतिमृतिः गरलं निपातः, वै भगवज्जनानां कण्ठे सुधा वसति)

परन्तु समुद्र तो खारा है, और चन्द्रमामें क्षय है, और स्त्रीमें जो पतिका मरण है; सर्पोंके निवासमें विष है, और स्वर्गसे अमृत गिरता है। इस कारण मैं कहता हूँ कि आप भगवज्जनोंके ही कण्ठमें अमृत वसता है।

अथाऽऽशीर्वादात्मक पद्यानि

"लक्ष्मीस्ते पंकजाक्षीर्विलसतु भवने भारती कण्ठदेशे, वर्द्धन्तां बन्धुवर्गाः प्रबलरिपुगणा यान्तु पातालमूले। देशे देशे सुकीर्तिः प्रसरतु भवतां कुन्दपूर्णेन्दु शुभ्रा, जीवत्वं पुत्रपौत्रैः स्वजनपरिवृतो भोक्ष्यसे राज्यलक्ष्मीः" ॥ १ ॥

भावार्थ—हे राजन् ! कमल के पत्रके समान नेत्रों वाली लक्ष्मीजी आपके घरमें निवास करें। सरस्वती आपके कण्ठमें निवास करें तथा आपके बन्धुबान्धव बढ़ें। और आपके प्रबल शत्रु नाश को प्राप्त हों तथा आपकी कीर्ति जो कुन्द पुष्प और पूर्णचन्द्र के समान शुभ्र है वह देश देशान्तरमें फैल जावे। और आप स्वजनोंसे युक्त पुत्र पौत्रों के सहित राज्यलक्ष्मी को भोगते हुए चिरकाल तक जीते रहें।

"आयुष्मान् भव पुत्रवान् भव भव श्रीमान् यशस्वी भव, प्रज्ञावान् भव भूरिभूतिकरणे दानैकनिष्ठो भव। तेजस्वी भव वैरिदर्प-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दलने व्यापार दक्षो भव, श्रीशम्भोर्भव पादपूजनरतः सर्वोपकारी भव" ।। २ ।।

भावार्थ—आप चिरञ्जीवी हो, पुत्रवाला हो, श्रीवाला हो, यशवाला हो, कीर्तिवान् हो, तेजवाला हो, अति सम्पदाके निमित्त दान करने में प्रेमवाले हो, वैरियों के दर्पको चूर करने वाला हो, भगवान् शंकर के चरणों को पूजने वाला हो, सब पर उपकार करने-वाला हो।

"आयुर्बलं विपुलमस्तु सुखित्वमस्तु सौभाग्यमस्तु विशदा तव कीर्तिरस्तु। श्रेयोऽस्तु धर्ममतिरस्तु रिपुक्षयोऽस्तु सन्तानवृद्धिरभि-वांछित सिद्धिरस्तु" ।। ३ ।।

आयु, बल, सुखित्व, सौभाग्य, फैली हुई कीर्ति, कल्याण, धर्ममें मति, शत्रुओं का नाश, सन्तान की वृद्धि तथा अभीष्टसिद्धि ये सब तुमको प्राप्त हों।

"आयुर्द्रोणसुते श्रियो दशरथे शत्रुक्षयं राघवे, ऐश्वर्य्यं नहुषे गतिश्च पवने मानं च दुर्योधने। शौर्य्यं शान्तनवे बलं हलधरे सत्यं च कुन्ती सुते, विज्ञानं विदुरे भवन्तु भवतः कीर्तिश्च नारायणे" ।। ४।।

आयु–अश्वत्थामा में, लक्ष्मी–दशरथ में, शत्रुनाश–राममें, ऐश्वर्य–नहुष में, गति–वायु में, अभिमान–दुर्योधन में, शूरता–भीष्म में, बल–बलराम में, सत्य–युधिष्ठिर में, विज्ञान–विदुर में, कीर्ति–नारायण, में जैसे है वैसे ही आपमें हो।

कन्या पक्षका पुरोहित प्रस्थान के समय बोले—

"अश्वं गजं नैव हिरण्यदानं कौशेय वस्त्रं न च हेमरत्नम्। शुद्धां तु कन्यां प्रददामि तुभ्यं भक्ति प्रसादाद् द्विज (शिव) सम्प्रसीद" ।।

वर पक्षका पुरोहित बोले–

"लोके कीर्तिः कुले वृद्धिर्लक्ष्मीश्च गृहमागता। रत्नत्रयं मया लब्धं त्वत्प्रसादाद् **(हिमाचल)** द्विजोत्तम" ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संक्षेपतो [1] गोत्रप्रवरनिर्णयः

(१) **अतिथिगोत्रस्य**—आत्रेय–आर्चनानस–आतिथ्येति त्रयः प्रवराः ।

(२) **अघमर्षणगोत्रस्य**—वैश्वामित्राघमर्षण कौशिकेति त्रयः प्रवराः ।

(३) **अगस्तिगोत्रस्य**—आगस्त्य—दार्ढर्यच्युतेध्मवाहेति त्रयः प्रवराः ।

(४) **अत्रिगोत्रस्य**—अर्चन-अनस-श्यावाश्वेति त्रयः प्रवराः ।

(५) **अजगोत्रस्य**— वैश्वामित्र–माधुच्छन्दस रौहिणेति त्रयः प्रवराः ।

(६) **आङ्गिरसगोत्रस्य** — आङ्गिरसगौतमभारद्वाजेति त्रयः प्रवराः ।

(७) **आर्ष्टिषेणगोत्रस्य** — भार्गवच्यवनाप्नावानार्ष्टिषेणानूपाः पञ्च प्रवराः ।

(८) **आश्वलायनगोत्रस्य** — भार्गववार्ध्यश्वदैवोदासास्त्रयः प्रवराः ।

---

१ **सप्तानां ऋषीणामगस्त्याष्टमानां यदपत्यं तद् गोत्रम्; तथा च प्रवरमञ्जर्यां बौधायनः**—"गोत्राणान्तु सहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानि च । ऊनपञ्चाशदेवैषां प्रवरा ऋषिदर्शनात् ।। विश्वामित्रो जमदग्निर्भरद्वाजोऽथ गौतमः । अत्रिर्वशिष्ठकश्यप इत्येते सप्त ऋषयः ।।

गौड निबन्धे च–"मुख्यानि सप्तगोत्राणि शतानि प्रवराणि च । चत्वारिंशच्चतुर्युक्तं चतुर्दशशतानि च ।। उपनामानि गौडानामुक्तानि ग्राम वासतः । देवर्षि देशजातानां ब्राह्मणानां तथैव च ।।"

"वशिष्ठः कश्यपोऽत्रिश्च गौतमोऽगस्त्यकौशिकौ । जमदग्निर्भरद्वाजो वत्सपाराशरस्तथा ।। शाण्डिल्यो वासुकी चित्रः सावर्णि कुशिकस्तथा । कल्पिषश्चाग्निवेषश्च विश्वामित्रः सुकालिनः ।। कृष्णात्रेयः सुमित्रश्च शक्तिः सौपायनस्तथा । धृतकौशिक मोद्गल्यौ गर्गो विष्णु बृहस्पतिः ।। सांस्कृतिकचाङ्गिरसश्च कण्वः कात्ययानस्तथा । कौण्डिल्यः शुनकोऽव्यश्च वैयाघ्रपद्यकाञ्चनौ ।। जैमिन्यावृकबृद्धाश्च तथा ऽऽलम्पायनादयः । एतेषां यान्यपत्यानि तानि गोत्राणि मन्यते । वशिष्ठो गौतमोऽगस्त्यः कश्यपोत्रिश्च कौशिकः । जमदग्निर्भरद्वाजश्चैते गोत्रप्रवर्तकाः" ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(९) **आशालिगोत्रस्य**--आङ्गिरस–गौतम-शारद्वन्तेति त्रयः प्रवराः ।

(१०) **आरुणिगोत्रस्य**-- पुरुदसु–पुरुकुत्स–आङ्गिरसेति त्रयः प्रवराः ।

(११) **आष्टकिगोत्रस्य**--वैश्वामित्र-माधुच्छन्दस आष्टकेति त्रयः प्रवराः ।

(१२) **उपमन्युगोत्रस्य**--उपमन्यौतथ्याङ्गिरसास्त्रयः प्रवराः।

(१३) **उलूकगोत्रस्य**–वैश्वामित्र-दैवरात-उलूकेति त्रयः प्रवराः।

(१४) **उद्दालकगोत्रस्य**--भाषणेत्येक प्रवरः ।

(१५) **ऋचीकगोत्रस्य**--भार्गवार्ष्टिषेण ऋचीकास्त्रयः प्रवराः।

(१६) **औशनगौत्रस्य**--औशनस भरद्वाजशब्देन्द्रास्त्रयः प्रवराः।

(१७) **औतथ्यगोत्रस्य**--गौतमाङ्गिरसौतथ्यास्त्रयः प्रवराः ।

(१८) **औदलगोत्रस्य**--वैश्वामित्र-दैवरात औदलेति त्रयः प्रवराः ।

(१९) **कात्यायनगोत्रस्य**–कात्यायनविष्णवङ्गिरसस्त्रयः प्रवराः।

(२०) **काश्यपगोत्रस्य**--काश्यपावत्सारनैध्रुवास्त्रयः प्रवराः ।

(२१) **कौशिकगोत्रस्य**--कौशिकात्रिजमदग्न्यस्त्रयः प्रवराः ।

(२२) **कृष्णात्रिगोत्रस्य**--कृष्णात्रेयाप्नवान सारस्वतास्त्रयः प्रवराः ।

(२३) **कौण्डिन्यगोत्रस्य** -- कौण्डिन्यास्तीककौशिकास्त्रयः प्रवराः ।

(२४) **कापिष्ठलगोत्रस्य**--वशिष्ठेत्येकः प्रवरः ।

(२५) **कौण्डिन्यगोत्रस्य**--कौण्डिन्य–वशिष्ठ–मित्रावरुणास्त्रयः प्रवराः ।

(२६) **कौशल्यगोत्रस्य**--गरुपमाहेन्द्रमयोभुवस्त्रयः प्रवराः ।

(२७) **कौत्सगोत्रस्य**–आङ्गिरसकौत्ससांख्यायनास्त्रयः प्रवराः ।

(२८) **कौथुमगोत्रस्य**-- आङ्गिरसबार्हस्पत्यभरद्वाजवान्दनमातवचसेति पञ्च प्रवराः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(२९) **कौशिकगोत्रस्य** -- कौशिकाघमर्षण–विश्वामित्रास्त्रयः प्रवराः।

(३०) **क्षत्रिगोत्रस्य**--मानव-ऐल-पौरु-रवसस्त्रयः प्रवराः।

(३१) **कपिगोत्रस्य**–आङ्गिरसमहीयवौरुक्षमसेति त्रयः प्रवराः।

(३२) **कतगोत्रस्य**--वैश्वामित्रकात्यालीकेति त्रयः प्रवराः।

(३३) **कालबलगोत्रस्य**–दैवरातविश्वामित्रौदलेतित्रयः प्रवराः।

(३४) **कामकायनगोत्रस्य**--वैश्वामित्र–दैवश्रवस दैवतरसेति त्रयः प्रवराः।

(३५) **कपिलगोत्रस्य**--आङ्गिरसबार्हस्पत्यभरद्वाजेति त्रयः प्रवराः।

(३६) **कक्षीवद् गोत्रस्य**--आङ्गिरसौतथ्यदैर्घ्यतमसेति त्रयः प्रवराः।

(३७) **कण्वगोत्रस्य**--कण्वाङ्गिरसाजमीढेति त्रयः प्रवराः।

(३८) **कालगोत्रस्य**--वैश्वामित्रदैवरातौलेतेति त्रयः प्रवराः।

(३९) **गर्गगोत्रस्य**--आङ्गिरस-भारद्वाज-बार्हस्पत्यश्रवतगर्गेति पञ्च प्रवराः।

(४०) **गविष्ठिरगोत्रस्य**--आत्रेयगविष्ठिरपौर्वातिथेति त्रयः प्रवराः।

(४१) **गार्ग्यगोत्रस्य** -- गार्ग्यघृतकौशिकमाण्डव्याथर्ववैशम्पायनेति पञ्च प्रवराः।

(४२) **गालवगोत्रस्य**-- विश्वामित्रदेवरात – औदुम्बरास्त्रयः प्रवराः।

(४३) **गृत्समद्गोत्रस्य**--गार्त्समदेत्येकः प्रवरः।

(४४) **गोभिलगोत्रस्य**--गोभिलासितदेवलास्त्रयः प्रवराः।

(४५) **गौतमगोत्रस्य**--गौतमाङ्गिरसौतथ्येति त्रयः प्रवराः।

(४६) **घृतकौशिकगोत्रस्य**–घृतकौशिककौशिक विश्वामित्रास्त्रयः प्रवराः।

(४७) **चिकितगोत्रस्य**–वैश्वामित्र-दैवरात औदलास्त्रयः प्रवराः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(४८) **जमदग्निगोत्रस्य**—जामदग्न्यौर्ववशिष्ठास्त्रयः प्रवराः।

(४९) **जैमिनिगोत्रस्य**—जैमिन्यौतथ्यसांकृतयस्त्रयः प्रवरा :।

(५०) **जातूकर्ण्यगोत्रस्य**–वशिष्ठात्रेयजातूकर्ण्येति त्रयः प्रवराः।

(५१) **तण्डिगोत्रस्य**—आङ्गिरस गौरिवीत सांकृतेति त्रयः प्रवराः।

(५२) **दर्भगोत्रस्य**—आङ्गिरस–अम्बरीष–यौवनाश्वेति त्रयः प्रवराः।

(५३) **दाल्भ्यगोत्रस्य**—कश्यपावत्सारनैध्रुवास्त्रयः प्रवराः।

(५४) **दीर्घतमगोत्रस्य**—आङ्गिरस–औतथ्य दैर्घतमसेति त्रयः प्रवराः।

(५५) **देवलगोत्रस्य**—शाण्डिल्यासितदेवलास्त्रयः प्रवराः।

(५६) **देवरातगोत्रस्य**—वैश्वामित्र देवरातौदलास्त्रयः प्रवराः।

(५७) **दैवन्त्यायनगोत्रस्य**—भार्गव–वैतहव्यसावेतसेति त्रयः प्रवराः।

(५८) **द्व्यामुष्यायणगोत्रस्य**—आङ्गिरस–बार्हस्पत्यभारद्वाज–कात्याक्षीलाः पञ्च प्रवराः।

(५९) **धनञ्जयगोत्रस्य**—वैश्वामित्र–माधुच्छन्दस–धानञ्जयेति त्रयः प्रवराः।

(६०) **निरुकिगोत्रस्य**—पुरुदसु–पुरुकुत्स–आङ्गिरसेति त्रयः प्रवराः।

(६१) **नैध्रुवगोत्रस्य**—काश्यपावत्सार नैध्रुवास्त्रयः प्रवराः।

(६२) **पराशरगोत्रस्य**—शक्तिवशिष्ठ पराशरास्त्रयः प्रवराः।

(६३) **पृषदश्वगोत्रस्य**—आङ्गिरस–पार्षदश्व वैरूपास्त्रयः प्रवराः।

(६४) **पिङ्गगोत्रस्य**—आङ्गिरस–अम्बरीष यौवनाश्वेति त्रयः प्रवराः।

(६५) **पुरुकुत्सगोत्रस्य**—आङ्गिरस पौरुकुत्सत्रसदस्यवेति त्रयः प्रवराः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(६६) **पूतिमाषगोत्रस्य**—आङ्गिरस–गौरिवीत सांकृतेति त्रयः प्रवराः।

(६७) **पूरणगोत्रस्य**— वैश्वामित्र – दैवरात – पौरणेति त्रयः प्रवराः।

(६८) **पैप्पलाद गोत्रस्य**—वशिष्ठ–मैत्रावरुण पैप्पलादेति त्रयः प्रवराः।

(६९) **बृहदग्निगोत्रस्य**–वैश्वामित्र-दैवरातौदलेति त्रयः प्रवराः।

(७०) **बभ्रुगोत्रस्य**—वैश्वामित्र–दैवरातौदलेति त्रयः प्रवराः।

(७१) **बृहदश्वगोत्रस्य**—आङ्गिरस–बार्हदुक्थ्य गौतमेति त्रयः प्रवराः।

(७२) **बास (ल) गोत्रस्य**–भार्गव च्यावनाप्नवानौर्वजामदग्न्याः पञ्च प्रवराः।

(७३) **बैजवापगोत्रस्य**—अत्रिगविष्ठिरपूर्वार्धास्त्रयः प्रवराः।

(७४) **भद्रणगोत्रस्य**—पुरुदसु पुरुकुत्साङ्गिरसेति त्रयः प्रवराः।

(७५) **भारद्वाजगोत्रस्य** — भारद्वाजाङ्गिरसबार्हस्पत्यास्त्रयः प्रवराः।

(७६) **भार्गवगोत्रस्य**–भार्गवच्यवनाप्नवानौर्वजामदग्न्याः पञ्च प्रवराः।

(७७) **भालन्दनगोत्रस्य** — भालन्दनगविष्ठिरपूर्वातिथयस्त्रयः प्रवराः।

(७८) **मर्षणगोत्रस्य**—पुरुदसु-पुरुकुत्साङ्गिरसेति त्रयः प्रवराः।

(७९) **मन्द्रणगोत्रस्य**—पुरुदसु पुरुकुत्साङ्गिरसेति त्रयः प्रवराः।

(८०) **मरीचिगोत्रस्य**–भार्गव-वैतहव्य-सावयसेति त्रयः प्रवराः।

(८१) **मनुतन्तुगोत्रस्य**–वैश्वामित्र-दैवरातौदलेति त्रयः प्रवराः।

(८२) **मान्धातृगोत्रस्य**—मान्धातृ-अम्बरीष यौवनाश्वेति त्रयः प्रवराः।

(८३) **माध्यन्दिनगोत्रस्य**—वशिष्ठ–शाक्त्य–पराशरेति त्रय प्रवराः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(८४) **मार्कण्डेयगोत्रस्य**–जामदग्न्यौर्वाप्नवानेति त्रयः प्रवराः।

(८५) **मित्रयुगोत्रस्य**–भार्गव-दैवोदासवार्ध्र्यश्वेति त्रयःप्रवराः।

(८६) **मौद्गल्यगोत्रस्य**––मौद्गल्याङ्गिरस बार्हस्पत्येति त्रयः प्रवराः।

(८७) **मौनगोत्रस्य**––भार्गववैतहव्य सावेतसेति त्रयः प्रवराः।

(८८) **मौकगोत्रस्य**––भार्गववैतहव्य सावेतसेति त्रयः प्रवराः।

(८९) **माधुच्छन्दसगोत्रस्य**––वैश्वामित्र-माधुच्छन्दस-धानञ्जयेति त्रयः प्रवराः।

(९०) **याज्ञवल्क्यगोत्रस्य** — याज्ञवल्क्याङ्गिरसाजमीढास्त्रयः प्रवराः।

(९१) **यास्कगोत्रस्य**—यास्कमित्रयुववैन्यास्त्रयः प्रवराः।

(९२) **रथीतरगोत्रस्य**—आङ्गिरस–वैरूप्य–पार्षदश्वेति त्रयः प्रवराः।

(९३) **राहूगणगोत्रस्य**—आङ्गिरस–गौतम शारद्वन्तेति त्रयः प्रवराः।

(९४) **रैभगोत्रस्य**—काश्यपावत्साररैभास्त्रयः प्रवराः।

(९५) **रौक्षायणगोत्रस्य**–आङ्गिरस–बार्हस्पत्यभारद्वाजवान्दनमातवचसेति पञ्च प्रवराः।

(९६) **रौहिणगोत्रस्य**—वैश्वामित्र-माधुच्छन्दस रौहिणेति त्रयः प्रवराः।

(९७) **लोहिताक्षगोत्रस्य**—वैश्वामित्र–गाधिन वैणवेति त्रयः प्रवराः।

(९८) **लौगाक्षिगोत्रस्य**–आङ्गिरस-साङ्कृत्य गौरिवीतेति त्रयः प्रवराः।

(९९) **लौहितजह्नुगोत्रस्य**––वैश्वामित्र–गाधिन वैणवेति त्रयः प्रवराः।

(१००) **वत्सगोत्रस्य**—और्वच्यवन भार्गवजामदग्न्याप्नवानाः पञ्च प्रवराः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(१०१) **वशिष्ठगोत्रस्य**—वशिष्ठात्रिसांकृतयस्त्रयः प्रवराः।

(१०२) **वबगोत्रस्य**—वैश्वामित्र देवरातौदलेति त्रयः प्रवराः।

(१०३) **वास्कलगोत्रस्य**—वैश्वामित्र–देवरात पौरणेति त्रयः प्रवराः।

(१०४) **वात्स्यायनगोत्रस्य**—आङ्गिरस गौतम शारद्वन्तेति त्रयः प्रवराः।

(१०५) **वादरायणगोत्रस्य**—पुरुदसु – पुरुकुत्साङ्गिरसेति त्रयः प्रवराः।

(१०६) **वामरथ्यगोत्रस्य**— आत्रेयार्चनानसातिथ्येति त्रयः प्रवराः।

(१०७) **वासलगोत्रस्य**—भार्गवच्यावनाप्नवानौर्व जामदग्न्येति पञ्च प्रवराः।

(१०८) **वार्ध्यश्वगोत्रस्य**—वार्ध्यश्वेति एकः प्रवरः।

(१०९) **वारिधायनगोत्रस्य**—वैश्वामित्र–देवरात पौरणेति त्रयः प्रवराः।

(११०) **वाधूलगोत्रस्य**—भार्गव–वैतहव्य–साबेनसेति त्रयः प्रवराः।

(१११) **वामदेवगोत्रस्य**—आङ्गिरस–वामदेव–गौतमेति त्रयः प्रवराः।

(११२) **विष्णवृद्धिगोत्रस्य**—विष्णुवृद्धि – पौरुकुत्सत्रसदस्यवस्त्रयः प्रवराः।

(११३) **विदलगोत्रस्य**—वैश्वामित्र देवरातौदलेति त्रयः प्रवराः।

(११४) **विश्वामित्रगोत्रस्य**—विश्वामित्र बृहस्पति वृषगुणास्त्रयः प्रवराः।

(११५) **वीतहव्यगोत्रस्य**—यास्क—वाधूल—मौनमौकास्त्रयः प्रवराः।

(११६) **वैजवापगोत्रस्य**—अत्रि गविष्ठिर पूर्वार्द्धेति त्रयः प्रवराः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(११७) **वैशम्पायनगोत्रस्य**—वैशम्पायन–विश्वामित्र जमदग्न-यस्त्रयः प्रवराः।

(११८) **वैन्यगोत्रस्य**—भार्गव वैन्य पार्थेति त्रयः प्रवराः।

(११९) **वेणुगोत्रस्य**—वैश्वामित्र गाधिन वैणवेति त्रयः प्रवराः।

(१२०) **शठगोत्रस्य**–पुरुदसु–पुरुकुत्स–अंगिरसेति त्रयः प्रवराः।

(१२१) **शम्बुगोत्रस्य**—आंगरिस–गौरिवीत–सांकृतेति त्रयः प्रवराः।

(१२२) **शरद्वन्तगोत्रस्य**—आंगरिस—गौतम शारद्वन्तेति त्रयः प्रवराः।

(१२३) **शाण्डिल्यगोत्रस्य**–शाण्डिल्यासितदेवलेति त्रयः प्रवराः।

(१२४) **शालंकायनगोत्रस्य**— शालंकायनावत्सारनैध्रुवांगिरस बार्हस्पत्येति त्रयः प्रवराः।

(१२५) **शाक्यगोत्रस्य**—शाक्य—गौरिवीत सांकृत्येति त्रयः प्रवराः।

(१२६) **शालिनीगोत्रस्य**—वैश्वामित्र—देवरात औदलेति त्रयः प्रवराः।

(१२७) **शाक्यावतगोत्रस्य**—वैश्वामित्र—देवरात औदलेति त्रयः प्रवराः।

(१२८) **शार्करागोत्रस्य**—भार्गव—वैतहव्य—सावेतसेति त्रयः प्रवराः।

(१२९) **शालाक्षगोत्रस्य**—वैश्वामित्र गाधिन वैणवेति त्रयः प्रवराः।

(१३०) **श्यैतगोत्रस्य**—भार्गव—वैन्य—पार्थेति त्रयः प्रवराः।

(१३१) **शैवगोत्रस्य**—आंगिरस—गौरिवीत सांकृतेति त्रयः प्रवराः।

(१३२) **शौनकगोत्रस्य**—शौनकशौनहोत्र गृत्समदेति त्रयः प्रवराः।

(१३३) **श्रौमतगोत्रस्य**—वैश्वामित्र—दैवश्रवस दैवतरसेति त्रयः प्रवराः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(१३४) **सावर्ण्यगोत्रस्य**—सावर्ण्यौर्वच्यवनभार्गव जामदग्न्याप्नवानेति पञ्च प्रवराः।

(१३५) **साङ्कृतिगोत्रस्य**—सांकृत्याङ्गिरसगौरिवीतेति त्रयः प्रवराः।

(१३६) **सांख्यायनगोत्रस्य**—सांख्यायन वाचस्पत्याङ्गिरस श्रवतगर्गेति पञ्च प्रवराः।

(१३७) **साहुलगोत्रस्य**—वैश्वामित्र गाधिनवैणवेति त्रयः प्रवराः।

(१३८) **सात्यकिगोत्रस्य**—पुरुदसु—पुरुकुत्यस—अंगिरसेति त्रयः प्रवराः।

(१३९) **सात्यंकायनिगोत्रस्य**—पुरुदसु—पुरुकुत्स—अंगिरसेति त्रयः प्रवराः।

(१४०) **सोमवातगोत्रस्य**—आगस्त्य—दाढर्च्यच्युत सौमवाहेति त्रयः प्रवराः।

(१४१) **सुमङ्गलगोत्रस्य**—आत्रेय—आर्चनानस—आतिक्ष्येति त्रयः प्रवराः।

(१४२) **हारीतगोत्रस्य**—आंगिरसाम्बरीष यौवनाश्वास्त्रयः प्रवराः।

आदि गौड़[1] ब्राह्मणों के गोत्र व शासन

(१) **परवृद्ध वशिष्ठ गोत्रः**—तिगुणायत, झीमरिया, झर्मरिया, विजयचारण, गोठवाल, हलदोलिया, नूणीवाल, चौबेप्रधान, द्विवेदी प्रधान, नरवालिया, ब्रह्मपुरिया, झर्मरपुरिया, मंडोरिया, कुरुक्षेत्री, सिरोहीवाल, सर्पदमा, कुंडोलिया भद्वासिया, बासोतिया, चान्दौ-

---

१ **स्कन्दपुराणे गौडस्मृतौ च** —"देवर्षि गौडदेशाच्च ह्यादिगौडा समागताः। द्वापरान्ते महातीर्थे सर्पयज्ञे तपोधनः।। तेभ्यो राजा ददौ ग्रामान् सम संख्यात्मकान् मुदा। चत्वारिंशच्चतुर्युक्तं चतुर्दशशतानि च"।।

ब्राह्मणोत्पत्तिनिबन्धे गौडस्मृतौ च — "आदिगौडद्विजाः सर्वे ब्रह्मर्षि देशवासिनः। वेदशास्त्रपुराणज्ञाः श्रौतस्मार्तपरायणाः।। शाखामाध्यन्दिनी तेषां वेदः शुक्लयजुः स्मृतः। वशिष्ठादीनि गोत्राणि सुत्रं कात्यायनं परम्।। वेदाब्ध्यब्धीन्दु ग्रामाणां शासनाच्छासनाः स्मृताः। पूज्याः सर्वोत्तमा गौडा मद्य मांसविवर्जिताः"।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिया, मैनवाल, रामहदिया, थानेसरिया, गंगावासी, बड़ीवाल, पिंडारा, सफीद्मीवाला, ।

(२) **वशिष्ठ गोत्र** :—सिंवाल, बूंटोलिया, सुरोलिया, कंकरीट, नाथोलिया, चूलहट, खैरवाल, बलाचिया, बांकोलिया, कलानोरिया, धामाणी मिश्र, बबेरवाल, नारेला, उपाध्याय, घमूणिया, गौडवाल, खरवालिया, नारनोलिया, बिंढुरिया, चुलकाणिया गोस्वामी, सुनपातिया, द्विजाणिया, गौड़ ग्रामियां, शिवपुरिया, उग्रतपा, मिश्र, गोगाणी, आटोलिया, बिजणेट, नैचाणिया, गोधड़िया, पहाकतारी, सोरिया, फरमाणिया, चूरोलिया, ब्योंहाल, नालियारिया, बबरोलिया, बड़गामियां, बड़ीठवाल, सिलाणिया, दिवाचिया, विश्वम्भरा प्रधान, बियाला, बासोतिया, कथलिया, देवलिया, औढाका, सूठया, बरताड़, पतालीमा, सिमावत, लूणीवाल मता, कुलता जपरिया, तुन्दवाल, खारीवाल, खेड़ीवाल, सोरथिया, गील, गिलाण, रामायणिया, चानगान, बव्वरवाल, टिलावत, मार्जनी, गंगावत, अडिचवाल जोशी ।

(३) **गौतम गोत्र** :—इन्दौरिया, पटोदिया, दोरलिया, दूलोणिया, दोहलिया, ब्यौलिया, नौताणिया, ऋतम्भरा, बोघड़, गन्धर्ववाल, पाण्ड्याना, पांतिए, झूड़िया, कनोड़िया, मुहालवान, शाठिया, बाजरे सिम्मनवाल पाण्डे, बाड़ीवाल चौधरी, झाडोलिया परधान ।

(४) **काश्यप गोत्र** :—कुरुक्षेत्रिया, गुड़पुरिया, चुलकाणियां, थानेसरिया, मनचकी ।

(५) **आत्रेय (अत्रि) गोत्र** :—ढंढ, ढीगथलिया, झाड़ोलिया, झाड़ोलिया जोशी, त्रिपाठी, रतिवाल, रोहीतिया, सिरसोनिया, व्यास, कनखलिया, बलेणिया, गौड़पुरिया, घोरतपा, सर्पदमा, कारपूंडिया, तुसामरिया, डीडवानिया, पांड्याण, टंडपाडे, सागवाल, गनवारिया, जीन्दिया, केडेलिया, वुपणवाल, दिसावड़, कुन्धरा (**पंडा**), बड़ीवाल, फुलड़िये, बड़ीवाल मोटा, नागवाण, मंगलोरिया, कसमपरिया, धूंचोलिया, मारोलिया, नेधलिया, सांखोलिया, सिरसाणिया, मोटेका तुसाणिया, तुसामिया, भेड़ा, खाकस्या, कृकसा, मागस, मोगरा, मन्डोलिया, रामे, रावलमा, सिरसाणिया, मोटे ।

(६) **कृष्णात्रेय गोत्र**:—निर्मल, रेवलिया, बंबेरवाल, ब्रह्मवेदिया, चुनकटिया, काकर ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(७) **अगस्त्य गोत्रः**——महर्षि, बाझड़ा, तपोधरा, उञ्छला, शुल्कपुरिया, विद्याधरा, म्याणियां, सालोठिया, पीहूवाल, व्यास।

(८) **कौशिक गोत्रः**——दीक्षित, भरींडवाल पिलोद्या, लाटा, डोकवाल, झीमरिया, पँवालिया करीरहट, नगरवाल फटवाड़ियाव्यास, बिढाट, सिंहवाल, विषकरियां, दाना, चतुर्वेदी, ब्रजवाल, कंवरवाल, भूदोज, गांधरा बगरहटा बाहनदिया, बाघडोलिया, घांघसाणी, कोटिया, स्याणियां गोरखपुरिया, बृहदाणियां शिरोहीवाल गौगाणी, मंगलोरिया; मंडालवाल, मठवाल, महरवाल नाकड़े, पिंडाणे बरसिया चूल्हेठ, ऊँटलोदिया, कांकर, तिगडाणिया, बराड़,

---

ब्राह्मणोत्पत्तिनिबन्धे–नित्यकर्मप्रयोगमालायाञ्च–"आदौ ये ब्राह्मणा जाता ब्रह्मक्षेत्रे[1] तपोधनाः। सर्वे वेदधरा लोके सदाचार प्रवर्तकाः।। आदिगौडाश्च ते ज्ञेया ब्रह्मक्षेत्रनिवासिनः। तेभ्यो विनिर्गता भूम्यां प्रसिद्धा दश ब्राह्मणाः।। सारस्वताः कान्यकुब्जा गौडाश्चोत्कलमैथिलाः। पंचगौडा :–समाख्याता विंध्योत्तरनिवासिनः।। कर्णाटकाश्च तैलंगा द्राविडा गुर्जरास्तथा। महाराष्ट्राश्च पंचैते विंध्यदक्षिणवासिनः। तेभ्यो विनिर्गता भूम्यां चतुराशीति ज्ञातयः। अन्येऽपि बहवः संति प्रकीर्णाश्चोपब्राह्मणाः। गौडद्राविडभिन्नास्ते मिश्रिताः सर्वज्ञातयः। वसन्ति दैवयोगेन ब्राह्मणा यत्र तत्र वै।। परस्परं च ते विप्रा ह्यभवन् भिन्नपंक्तयः। खानपानसदाचारात्सम्बन्धोऽप्यभवत्पृथक्।। आदिगौडसमीपस्थाः पंचगौडाद्विनिर्गताः। पंचद्राविड संभूताः कथयामि यथाक्रमात्।। चतुर्दशशता ग्रामाश्चत्वारिंशच्चतुर्युताः। गौडानां तेषु वासाद्वैतायताः सासनाः स्मृताः।। जीवान्धर्मं च विद्यां च विप्रा रक्षन्ति सर्वदा। "गुडरक्षण" इत्यस्माद्धातोर्गौडपदं भवेत्।। गौडा विंशविधाज्ञेया आदिगौडाश्च निर्गताः। हीना हीनतराः केचिद्धीनकर्म्मनियोगिनः।। वाशिष्ठा मालवी गौडाः सनाढ्या वेदयागिनः। गंगातटस्था गौडाश्च हर्याणा गौड सौरभाः।। माधुराश्चैव श्रीगौडास्तथा सूर्यध्वजाह्वयाः। चौराशीयेतिनामायादालभ्याः सुखसेनकाः।। भट्टनागरगौडाश्च वाल्मीका गौडगुर्जराः। कौशिकाश्च महागौडा दशगौडा धराकराः।। हीना सप्तदशाः पूर्वा अपरा हीनतराश्रयाः। विद्याकर्मविहीनास्तु विप्राः शूद्रसमाः स्मृताः"।।

---

१ **गौडस्मृतौ**——"श्वेतवाराहकल्पेऽस्मिन् ब्राह्मणावेदपारगाः।
आदि गौड़ाः कुरुक्षेत्रे जाताः सर्वे तपोधनाः।।"

महाभारते–"ब्रह्मवेदिः कुरुक्षेत्रं पञ्च रामह्रदान्तरम्।
ब्रह्मधर्मकुरुक्षेत्रं द्वादशयोजनावधि।।"

ब्रह्मपुराणे च "आदौ जाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः। श्वेतबाराह कल्पेऽस्मिन्नादि गौडास्तपोधनाः।। **इति**।

ब्रह्मक्षेत्रे–कुरुक्षेत्रे इत्यर्थः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

काभिय फुटवा, कलानोरिया, कुराणवाल, कँकड़, विजयचारण बान्हाया, जैत्सरावत्त, वुरा, आष्टायण, सांखोलिया।

(९) **भारद्वाज गोत्रः**—चाकलाण, गारवाल, धर्ड, पचलंगिया, इन्दोरिया, सिंडोलिया, भाथरा, कालूंडिया, गोग्याण, सहल, नागवाण, नरेडा, तुनगरिया, बामणोलिया, ढांचोलिया, लूणीवाल, बियाला, महर्षिया, पाठक, गंगावत, कलावटिया, विवाल, पितरोत, खन्त्वाल, डोडवाडिया, खरींठ, सातोरिया, डोल्या, मलु, बबेर, गिल्याण, बिजेचाण, टिकणायत, पासलोटिया, चतेसरीया, रतेलवाल, रामपरिया, सुरोलिया दुबे, न्यायस्थानी, पँवालिया, बड़ीवाल, केड़ेवाल, चौबेलाल, गोधड़िया, विजणेट, टंडोलिया, भिवाल, बावेलिया, बलोचिया, अलवरिया, सींभला, पराशसिया, अंगूठिया, भरथलिया, भारतीया, चांदोलिया, मंढाणिया, चौराणी ब्योंरिया, विजयवाणी, निरथलिया, सीलोठिया, कांकणोधिया, सांवलोदिया; विश्वम्भरा, सांकलश, संपलवाल, मांडोठिया, शिवाहया, दुलीणहट, सागवाल, बरनैया, गीझवाल, डबोधिया, पीठवाल, सिरसौलिया, गोसरत, निगमबोधिया, तपोधना, सर्पदमा, दांतोलिया, नेतवालिया, अलसेलिया, भडचक्की, टंटप्रधान, पेटवाड़िया, सांतोरिया, जयवाल, डूँगरपुरिया, नातवाल, पीहूंवाल, गलियन, गिलाण, कटवाड़िया, बोहरिया भूंवाल, गाल्याण, बांकोलिया, नूणीवाल नाहरिया, गौड़िया, महता, उमरावतिया, गुड़गामिया, मामड़ोलिया, शाणौलिया, नरहेडवाल, निरालिया, रांईवाल विडाहट, ठिकरिया, पाधिया, चौबेप्रधान, सिन्दोलिया, पलड़िया, भाटुका, बडथलिया, कुंजवाल, बुंमरा, धूपला, पान्डीया, तालड़, पंचेली, थणकटा, चावण्डया, नाड़, पावटा, दामानील, कूठिला, सोरठचा, काठ, बड़वालिया, बागला, बीमा, बाक्षा, रहथला, धंरल, लाम्बा, डडवाडचा, रोलिवाल, डोरवाल, खरवाल, बटोले, गोधलिया कामड़ीवाल, सिन्दोलिया, कंकरीट, तोस्याण, मरोलिया, भींडा, झाडोदिया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(१०) **जमदग्नि गोत्र** : ––रतेलवाल, बसूंडवाल, मुदहहट ।

(११) **वत्स गोत्र**:––झीमरिया, बलमिया, मंजीठवाल, बहडोलिया, गोहरिया, नागरवाल, मरहटा, सिकारा, नागवाण, चौहनवाल, मंडावरिया, घाटसरिया, बोरा, झमन ।

(१२) **मुग्दल गोत्र** :––बावलिया, कसारिया, काक्याणी, चुरोलिया, भींडा जोशी, चुलकाणिया, काक्याण, रामूड़मा ।

(१३) **पाराशर गोत्र** :––बागडोलिया, खेड़वाल, हिंसारिया, गुजरका, रामगढ़िया, झडसैया, नरहड़ा, करनालिया, मूंधडत ।, लोकण्डा ।

(१४) **शाण्डिल्य गोत्र** :––हरितवाल, चूल्हीवाल, बसूंडवाल, वरुणवाल, नंगूरवाल, पंचोलिया, भप्यावलिया, पर्वती, कलीनूरा, रुलवाल, कण्डवाल । पाठक, चैतपुरिया,, मोनस, भट्टावलिया तिवाड़ी, सोजतमा ।

(१५) **हारित गोत्र** :–– चौमाल, सालवाल, साँभरिया, काणूवड़िया, चोहमेवाल, खोज, कण्डीरा ।

(१६) **अङ्गिरा गोत्र** :––बंबेरवाल, चौबेदीक्षित, गंगापुरिया, मिरचिया । छाजावत, गीलारया, गिलाण, नगरवाल ।

(१७) **जैमिनिगोत्र**––महतपा, जैमनिया, धर्मपुरिया,

(१८) **शौनक गोत्र** :––भादुपोता,

(१९) **ओसेश्वर गोत्र** :––फटवाडिया,

(२०) **सुपर्ण गोत्र** :––नगूवाल, निगरवाल, नगूरा ।

(२१) **भृगु गोत्र**:––डडवालिये, रामे प्रधान, अभीस्य प्रधान, कलसोता, मन्दोरमा ।

(२२) **हरितस गोत्र** :––चम्हाल ।

(२३) **पिप्पलायन गोत्र** :––आबैठया प्रधान, भोगराण प्रधान, चान्दोलिया प्रधान, बिसम्बरा प्रधान,

(२४) **व्योंग गोत्र** :––कल्याण,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(२५) साँकृत्य गोत्र :—त्रिवेदी–(तिवाड़ी)

तिवाड़ियों के भेद :—चूलीवाल—तिवाड़ी, तायगा—तिवाड़ी, घुड़चढ़िया—तिवाड़ी, भदंया—तिवाड़ी, परासरिया—तिवाड़ी, फलोड़िया—तिवाड़ी, भटावला—तिवाड़ी, रोड़ी—तिवाड़ी, कोरक—तिवाडी, बहरोड़िया—तिवाडी ।

(२६) चाँन्द्रायण गोत्र:—चन्दणिया ।

(२७) गालव गोत्र :—काठ ।

(२८) कौत्स गोत्र :—काकर ।

जिनके गोत्र की जानकारी नहीं हो सकी है–

लोहचवा, सिरसाणीया, कन्दवाल, वाणीवाल, भालोटिया, पंचोली, कलेड़िया, कुम्भेरी पांडे, वाड़ी कोरक तिवाड़ी, मसूणिया दुबे, भदुल्या दुबे, मोडरावत तिवाड़ी, निराण, अग्निहोतिया, याजका, कुशंधरा, कुधंधरा, रजोधरा, भजक्वड़ा, कंचनपुरिया, श्याम पाण्ड्या, मनोहरा, भूमियां, भुंवारिया, सीकरिया, ऋषि-पोता सेंथिया, आचार्या, ज्ञानपुरिया, मिग्नहवाल, भट्टपुरिया, लुहाणिया, चूहेट, तिलोडिया, खरीट, बरीवाल, दोराड़, पचोल, वड़वाल, भीरुका, सीमणिया, चालीण, सेवल, सरसोलिया, भीसवरा, फैवारिया, लावालिया, रींछावत, बासुबोरा, चाको-लिया, गूरावा बेडतिया, बेदी, श्रोत्रिय, महता गर्वाटी, स्वामी गोस्वामी, पुरोहित, अटिल, अरुदयाल, आमेरा, अखल्या, उड़ीच-वाल, करबाल , कोखतला, कंकरोलिया, कोहवाल, कालचड़ा, करौता, खजवाणिया, गोपीवाल, चेचावा, चूपल, चोईवाल, छिछो-लिया, छड़िया, भरोणीया, डोईवाल, परवाल पल्लीवाल, पुंचाल,

---

सूचना – मेरी इच्छा गोत्र व शासनोंकी विशद तालिका बनाने की है सो विद्वानों एवं भूदेवों तथा गौड़बन्धुओंसे प्रार्थना है कि वे उपर्युक्त तथा अन्य गोत्र व शासनों का विशेष विवरण भेजने की कृपा करें। जिन गौड़ बन्धुओं का इनमें अपना गोत्र व शासन नहीं आया है वे अपना गोत्र व शासन लिखकर भेज देवें। संग्रहीत गोत्र व शासनों के संकलन में पं० श्री जीवानन्दजी "आनन्द" विद्यावाचस्पति का जो प्रयास रहा है वह स्तुत्य है।

–गंगाधर गौड़

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पेड़ीवाल, पालड़िया, बेडीवाल, हरसोलिया, हर्षवाल, हंसवाल, लामड़ीवाल, लुंडीवाल, रोलीवाल, मोरवाल, मालूण्या, मांकड़, सीकरन्या, सामलीवाल। धमाणिया, थाणक, भगोरा, धमाणिया, नाणावाल, त्तोनगुरिया, बुचर, नशपाल, जंगहारा, जलेसरिया, खरेडवाल, घामर, घुमा, चोईवाल, झरवाल, मेरानिया, कसारिया बोतरिया, नोथरिया, निमाणिया, छेमीवाल, भगरवाल, निमाणिया, कट्रासणवाल।

विवाह-सम्बन्धी कुछ आवश्यक बातें

(१) विवाह में आशौचादि की सम्भावना हो तो १० दिन[1] प्रथम नान्दी श्राद्ध करना चाहिये। नान्दीश्राद्ध के बाद विवाह समाप्ति तक आशौच होने पर भी वर–वधू को और उनके माता-पिता को आशौच नहीं होता।

(२) नान्दीश्राद्ध के प्रथम भी विवाह के लिये सामग्री तैयार होने पर आशौच प्राप्ति हो तो प्रायश्चित करके विवाहकर्म होता है। [2]**"कूष्माण्ड सूक्त"** से।

हवन, गोदान और पञ्चगव्य प्राशन इसका प्राश्चित्त है।

(३) विवाह के समय हवन के पूर्व अथवा मध्यमें वा प्रारम्भ में कन्या यदि रजस्वला हो जाने पर कन्या को स्नानकरा कर **"युञ्जान"**[3] इस मन्त्र से हवन करके अवशिष्ट कर्म करना चाहिये।

---

१ सं० ग०–"एकविंशत्यहर्यज्ञे विवाहे दशवासराः। त्रिषट् चौलोपनयने नान्दी श्राद्धं विधीयते"॥

२ **प्रायश्चित्तं तु विष्णूक्तं बोध्यम्**–"अनारब्ध विशुद्धयर्थं कूष्माण्डैर्जुहुयाद्घृतम्। गां दद्यात्पञ्चगव्याशी ततः शुद्धयति सूतकी"॥

कूष्माण्ड हवन विधिस्तु अस्मत्पितृकृत शांतिप्रकाशे द्रष्टव्यः।

३ **मन्त्रस्वरूपम्**—"ॐ युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविताधियः। अग्नेर्ज्योति र्निचाय्यपृथिव्या ऽ अध्याभरत्"॥ **यज्ञपार्श्वे**–"विवाहे वितते तन्त्रे होमकाले उपस्थिते। कन्यामृतुमतीं दृष्ट्वा कथं कुर्वन्ति याज्ञिकाः॥ स्नापयित्वा तु तां कन्यामर्चयित्वा यथाविधि। युञ्जानामाहुतिं हुत्वा ततः कर्मणि योजयेत्"॥ **"युञ्जानः प्रथमम्" इति मन्त्रेणाहुतिं हुत्वेत्यर्थः।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(४) वधू और वरके माता को [1]रजोदर्शन की सम्भावना हो तो नान्दीश्राद्ध दश दिन प्रथम कर लेना चाहिये। नान्दीश्राद्ध के बाद रजोदर्शनजन्य दोष नहीं होता।

(५) नान्दीश्राद्ध के प्रथम रजोदर्शन होने पर **"श्रीशान्ति"** करके विवाह करना चाहिये।

(६) वर वधू की माता के [2]रजस्वला अथवा सन्तान होने पर **"श्रीशान्ति"** करके विवाह हो सकता है।

(७) विवाहमें [3]आशौच की सम्भावना हो,तो आशौच के प्रथम अन्न का संकल्प कर देना चाहिये। फिर उस संकल्पित अन्न का दोनों पक्ष के मनुष्य भोजन कर सकते हैं, उसमें कोई दोष नहीं हैं। परिवेषण असगोत्र के मनुष्यों को करना चाहिये।

(८) विवाह में वर-वधू का [4]ग्रन्थिबन्धन कन्यादान के पहले ही शास्त्र विहित है, कन्यादान के बाद नहीं। कन्यादाता का अपनी स्त्री के साथ ग्रन्थिबन्धन कन्यादान के प्रथम होना चाहिये।

---

१ **मनु**— "वधूवरान्यतरयोर्जननी चेद्रजस्वला। तस्याः शुद्धेः परं कार्यं माङ्गल्य मनुरब्रवीत्।"

माधवीये च — "प्रारम्भात्प्राग्विवाहस्य माता यदि रजस्वला। निवृत्तिस्तस्य कर्तव्या सहत्वश्रुति चोदनात्"॥ **प्रारम्भात्प्रागिति नान्दीश्राद्धात्प्रागिति ज्ञेयम्।**

२ **कर्पाद्दिकारिकासु**—"सूतिकोदक्ययोः शुद्धचै गां दद्याद्धोमपूर्वकम्। प्राप्ते कर्मणि शुद्धिः स्यादितरस्मिन्न शुद्धयति॥ अलाभे सुमुहूर्तस्य रजोदोषे च सङ्गते। श्रियं सम्पूज्य तत्कुर्यात्पाणिग्रहण मङ्गलम्॥ हैमीं माषपितां पद्मां श्रीसूक्तं विधिनाऽर्चयेत्। प्रत्यृचं पायसं हुत्वा अभिषेकः समाचरेत्"॥

३ **बृहस्पति** :—"विवाहोत्सवयज्ञेषु त्वन्तरामृतसूतके। पूर्वसंकल्पितार्थेषु न दोषपरिकीर्तितः"॥

षट्त्रिंशन्मते—"विवाहोत्सवयज्ञेषु त्वन्तरामृतसूतके। परैरन्नं प्रदातव्यं भोक्तव्यं च द्विजोत्तमैः॥ व्रतयज्ञविवाहे पु श्राद्धे होमेऽर्चने जपे। प्रारब्धे सूतकं न स्यादनारब्धे तु सूतकम्"॥

प्रारम्भश्च तेनैवोक्त :—"प्रारम्भो वरणं यज्ञे संकल्पो व्रतसत्रयोः। नान्दीमुखं विवाहादौ श्राद्धे पाक परिक्रिया" **इति॥ वरणमिति मधुपर्कपरम्।**

४ **तथा च योगियाज्ञवल्क्य** :— "कन्यकासुदशे पार्श्वे द्रव्यपुष्पाक्षतादिकम्। निक्षिप्य तञ्च सम्बध्य वरवस्त्रेण संयुजेत्॥ वस्त्रैः संयोज्य तौ पूर्वं कन्यादानं समाचरेत्। दानेन युक्तयोः पश्चाद्विदध्यात्पाणिपीडनम्"॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(९) दो कन्या का एक समय विवाह हो सकता है परन्तु एक साथ नहीं, किन्तु एक कन्या का वैवाहिक कृत्य समाप्त होने पर द्वार-भेद और आचार्य भेद से भी हो सकता है।

(१०) एक समय में दो शुभ-कर्म करना उत्तम नहीं है। उसमें भी कन्या के विवाह के अनन्तर पुत्र का विवाह हो सकता है और पुत्र-विवाह के अनन्तर पुत्री का विवाह छ मास तक नहीं हो सकता।

(११) एक वर्ष में सहोदर भाई अथवा बहनों का विवाह शुभ कारक नहीं। वर्ष भेद में और संकट में कर सकते हैं।

(१२) समान [1]गोत्र और समान प्रवर वाली कन्या के साथ विवाह निषिद्ध है।

(१३) विवाह के बाद एक [2]वर्ष तक पिण्डदान, मृत्तिका स्नान, तिलतर्पण, तीर्थयात्रा, मुण्डन, प्रेतानुगमन आदि नहीं करने चाहिये।

(१४) विवाह में [3]छिक्का (छींक) का दोष नहीं है।

(१५) विवाहादिक कार्यों में [4]स्पर्शास्पर्श का दोष नहीं होता।

---

१ **समानार्ष गोत्रजाविवाहे प्रायश्चित्तमाह शातातपस्मृतौ** – "परिणीय सगोत्रां तु समान-प्रवरां तथा। त्यागं कुर्याद् द्विजस्तस्यास्ततश्चान्द्रायणं चरेत्"॥

त्यागश्चोपभोगस्यैव न तु तस्याः, तथा च मनुः–"असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः। सा प्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्मणि मैथुने॥"

२ **हेमाद्रौ** – "विवाहे व्रतचूडासु वर्षमर्द्धं तदर्द्धकम्। पिण्डदानं मृदास्नानं न कुर्यात्तिलतर्पणम्"॥ **तिलतर्पणमृषितर्पणस्योपलक्षणम्**॥

३ "आसने शयने दाने भोजने वस्त्रसंग्रहे। विवादे च विवाहे च क्षुतं सप्तसु शोभनम्"॥

४ "तीर्थे विवाहे यात्रायां संग्रामे देशविप्लवे। नगरग्रामदाहे च स्पृष्टास्पृष्टिर्न दुष्यति"॥

"स्त्रियो वृद्धाश्च बालाश्च मक्षिका मशकादयः। मार्जारश्चैव दर्वीच मारुतश्च सदा-शुचिः"॥

"दीर्घकाष्ठे शिलापृष्ठे नौकायां शकटे तटे। विवाहे वहुसम्पर्के स्पर्शदोषो न विद्यते"॥

"लवणे मधुमांसे च पुष्पमूलफलेषु च। शाककाष्ठतृणेष्वप्सु दधिसर्पिपयः सु च॥ तिलौ-पधाजिने चैव पक्वापक्वेस्वयं ग्रहः। पण्येषु च सर्वेषु नाशौचं मृतसूतके"।

अत्रिस्मृतौ–"देवयात्राविवाहेषु यज्ञप्रकरणेषु च।
उत्सवेषु च सर्वेषु स्पृष्टास्पृष्टं न विद्यते"॥*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(१६) विवाहादि कार्यों में चतुर्थ[1], द्वादश[2] चन्द्रमा ग्राह्य है।

(१७) विवाह में छट, अष्टमी, दशमी, शुक्लपक्ष की प्रतिपदा रिक्ता[3] आदि तिथि निषिद्ध है।

विवाह–सामग्री

रोली	लालवस्त्र हाथ २	शंख १
मोली (नाल) ११	सर्वोषधी १० पै.	पर्वत फल (लोड़ी) १
पान ११	सिन्दूर ,, ,,	प्रोक्षणी पात्र १
सुपारी ११	गुलाल ,, ,,	प्रणीता पात्र १
गुड़ ऽ।।	सरसों, ,, ,,	स्रुवो १
चावल ऽ१	चावलों की खील.	हलदी (पिसी हुई)
केशर	जनेऊ जोड़ा ५	मेंहदी (पिसी हुई)
चन्दन चकलो	नारियल १	चंवरी का डोका ४
पुष्प	पातल	काचोसूत
दूब	पञ्चपल्लव	कलश १
पुष्पमाला	सप्तमृत्तिका	ढोवसो १
धूपवत्तिपूड़ो १	गंगाजल	सराई २५
रूई	आचार्यवरण वस्त्र	कुंडो १
दियासलाई (पेटी) १	ब्रह्मावरण वस्त्र	(कच्चा वारुन्दड़ा) ४
लाडू ऽ।।	वर वस्त्र द्वय	काठकी खूंटो ४
पेड़ा ऽ।।	कन्या वस्त्र द्वय	होम समिधा
लूंग	गेहूँ	शुद्ध बालुका (बेकरो)
इलायची	गेहूँ को चून	शमीपत्र (खेजड़ीका पत्ता)
पंचमेवो ऽ।	सोनेको टिकड़ी २	चौकी २
ऋतुफल ऽ१	पञ्चरत्न पुड़िया १	पाटियो १
दूध	सुवर्णाङ्गुलीय	आरते की थालो
दही	काँसीकी कचोली ४	सोड़ियो १ (गद्दी) २
शहद	काँसीको कचोलो १	गोदान
गोघृत ऽ।।।	पूर्णपात्र का टोपिया २	सुवर्णदान
चीणी	पीतल को लोटो १	रेजकी
गोमय	तामेकी लोटी १	रोकड़ी
सफेदवस्त्र–हाथ २	तामेको तामड़ी १	
	शूर्प (छाजलो)	

★

*व्याघ्रपाद स्मृतौ–"तीर्थयात्रा विवाहेषु संग्रामे देवतालये।
उपनीतोत्सर्जनेषु स्पृष्टास्पृष्टं न विद्यते"॥

आचार द०–"कुण्डे मञ्चे शिलापृष्ठे नौकायां गजवृक्षयोः।
संग्रामे संक्रमे चैव स्पर्श दोषो न विद्यते"॥

१ "विवाह चूडा व्रतबंध दीक्षा सीमंत कर्माणि वधू प्रवेशः। नवान्न भोजे च गृह प्रवेशश्चतुर्थ-चन्द्रः शुभकान्तिदः स्यात्"॥*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[1]सूर्यपूजादान सामग्री	[2]गुरुपूजादान सामग्री	[3]चन्द्रपूजादान सामग्री
लालवस्त्र हाथ २	अश्वका मूल्य	सफेद वस्त्र
गुड़	सुवर्णमासा २	शंख १
सुवर्णमासा २	मधु	मोती
तामेका कलश १	पीतवस्त्र	सुवर्णमासा २
लालमणी	चणां की दाल	चान्दीकी मूर्ति
गेहूं	सैन्धवनमक	दधि
रक्तपुष्प	पीतपुष्प	घृतकलश
रक्तचन्दन	मिश्री	चावल
मसूरकी दाल	हलदी	दान प्रतिष्ठा
धेनु मूल्य	दान प्रतिष्ठा	
दान प्रतिष्ठा		

सूर्यपूजादानसङ्कल्पः

वर हाथमें चावल लेकर संकल्प करे—

"मम अद्य करिष्यमाणविवाहसंस्कारकर्मणि जन्मराशेः सकाशान्नामराशेः सकाशाद्वा अमुकानिष्टस्थानस्थित श्रीसूर्यजनित दोषपरिहारपूर्वकशुभफलप्राप्त्यर्थमायुरारोग्यार्थं श्रीसूर्यनारायणप्रीत्यर्थं च इमानि यथाशक्ति दानोपकरणानि अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे"।

संकल्प कर ब्राह्मण के हाथमें देवे।

---

१ **संस्कारभास्करेः**—"कौसुंभवस्त्रं गुडहेमताम्रं माणिक्यगोधूमसुवर्णपद्मम्। सवत्स गोदानमिति प्रणीतं दुष्टाय सूर्याय मसूरिकाच" ॥ १ ॥

२ "अश्वं सुवर्णं मधुपीतवस्त्रं सपीतधान्यं लवणं सपुष्पम्। सशर्करं तद्रजनी प्रयुक्तं दुष्टोपशान्त्यै गुरवे प्रणीतम् ॥ २ ॥

३ "घृतकलशं सितवस्त्रं दधिशंखं मौक्तिकं सुवर्णं च। रजतं च प्रदध्याच्चन्द्रारिष्टोपशान्तये त्वरितम्" ॥३॥

---

* २ **द्वादश चन्द्रे विशेषः**— "उत्सवे चाभिषेके च जनने व्रतबंधने। पाणिग्रहे प्रयाणे च शशीद्वादशगः शुभः" ॥ ३ **रत्नकोशे**— "षष्ठी दशाष्टमी रिक्ता कृष्णपक्षान्त्य पञ्चके। शुक्ला च प्रतिपन्नेष्टास्तिथयोऽन्ये तु शोभना ॥ १ ॥ **रिक्तासु विशेषः**— "रिक्तासु विधवा कन्या दर्शेपि स्याद्विवाहिता। शनैश्चरदिने चैव यदा रिक्ता तिथिर्भवेत्। तस्मिन्विवाहिता कन्या पतिसन्तानवर्द्धिता" ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्राह्मण कहे—"ॐ स्वस्ति।"

दाता अपने दक्षिण हाथमें दानप्रतिष्ठा के लिये दक्षिणा लेकर—"अद्यकृतैतत्सूर्यदानप्रतिष्ठासिद्धयर्थमिदं रजतं चन्द्रदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज्ये।"

ब्राह्मण को देवे।

ब्राह्मण कहे —"ॐ स्वस्ति"

गुरुपूजादानसङ्कल्पः

यजमान दक्षिण हस्तमें जल अक्षत लेकर संकल्प करे—

"मम अस्या अमुकनाम्न्याः कन्यायाः करिष्यमाण विवाहसंस्कारकर्मणि जन्मराशेः सकाशान्नामराशेः सकाशाद्वा अमुकानिष्टस्थानस्थित श्रीगुरुजनितदोषनिवृत्तिपूर्वकशुभफलप्राप्त्यर्थं सौभाग्यायुरारोग्यार्थं श्रीगुरुप्रसन्नतार्थं इमानि यथाशक्ति दानोपकरणानि अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।"

ब्राह्मण के हाथमें देवे।

ब्राह्मण कहे—"ॐ स्वस्ति।"

फिर दानप्रतिष्ठा के लिये दक्षिणा लेकर—

"अद्य कृतैतत् श्रीगुरुदानप्रतिष्ठासिद्धयर्थमिदं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतममुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज्ये"।

"ॐ स्वस्ति"। ब्राह्मण कहे।

चन्द्रपूजादानसङ्कल्पः

यजमान और वर देशकालका संकीर्तन करे—

"मम अस्या अमुकनाम्न्याः कन्यायाः **(मम)** करिष्यमाण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विवाहकर्मणि जन्मराशेः सकाशाच्चतुर्थाद्यनिष्ट स्थानस्थित चन्द्रेण सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशार्थं सर्वदा तृतीयैकादश शुभस्थानस्थितवदुत्तमफलप्राप्त्यर्थमायुरारोग्यार्थं श्रीचन्द्रदेवप्रसन्नतार्थं इमानि यथाशक्ति दानोपकरणानि अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे"।

ब्राह्मण के हाथमें देवे।

ब्राह्मण कहे –"ॐ स्वस्ति"

फिर जलाक्षतदक्षिणा हाथमें लेकर—

"अद्य कृतैतत् श्रीचन्द्रदानप्रतिष्ठासिद्धयर्थमिदं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतममुकगोत्राय अमुकशर्मणेब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज्ये"।

ब्राह्मण कहे–"ॐ स्वस्ति"।

———

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ग्रन्थकारस्य सप्त पुरुषात्मकः

कल्पतरुरयम् ।

।

गजानन्द—गोविन्द, जगदीश, नरेन्द्र

महादेव—गंगाधर[1]

।

[2]चतुर्थीलाल—गुरुमुखराय

।

चतुर्भुज—[3]कस्तूरीचन्द्र—जेठमल

।

[4]रामकृष्ण—अमरचन्द्र—गुमानीराम—

। चनीराम—लालचन्द

[5]जीवराज—रामनारायण

।

[6]रामदत्त

।

[7]नाथूराम

श्रीशुक्लयजुर्वेद—माध्यन्दिनीयशाखा—

वशिष्ठशाक्त्यपाराशरास्त्रयः प्रवराः ।

केषाञ्चिन्मते—वशिष्ठात्रिसाङ्कृतयस्त्रयः प्रवराः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हमारे यहाँ से प्रकाशित होने वाले कर्मकाण्ड विषय के अन्य ग्रन्थ।

अन्त्येष्टिश्राद्धकर्मपद्धति- (मूलमात्र, संस्कृत में) -

उपाकर्मपद्धति- मूल संस्कृत में - (चातुर्थीलाली) सटिप्पणिका। गौडपण्डित श्रीगङ्गाधर चतुर्थीलालजी शर्मणां संकलिता।

(चातुर्थीलाली) उपनयनपद्धति- सटिप्पणिका। संस्कृत में। सङ्कलनकर्ता गौडपण्डित श्रीगङ्गाधर चतुर्थीलालजी शर्मा।

एकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोग- हिन्दी टीका सहित।

ग्रहशान्ति- (शुक्लयजुर्वेदोक्त) हिन्दी टीका सहित। इसमें मातृकास्थापन पूजन, आभ्युदयिक श्राद्ध पद्धति और ग्रहशान्ति है।

गौडीयश्राद्धप्रकाशमहानिबन्ध- स्व. पं. चतुर्थीलालजी कृत। (मूलमात्र संस्कृत में) श्राद्धस्वरूप, श्राद्ध में ब्राह्मणलक्षण, महालयादि निर्णय, श्राद्धप्रयोग, क्षयाहश्राद्ध, सङ्कल्पश्राद्ध, हेमश्राद्ध, एकादशाहादिश्राद्ध, मासिकश्राद्ध, मघादिश्राद्ध तथा नान्दीश्राद्धादि सब श्राद्ध, पितृकर्म सम्बन्धी वैष्णवादि पूजनादिकों का अपूर्व संग्रह।

जन्मदिनपूजापद्धति- (मूल-संस्कृत में) अर्थात् प्रति वर्ष के जन्मदिन में पूजनीय देवों की पूजन विधि।

तुलसीविवाहविधि-(पद्धति)- स्व. पं. चतुर्थीलालजी कृत, संस्कृत में।

तुलसीपूजापद्धति- संस्कृत में।

दशकर्मपद्धति- हिन्दी टीका सहित। गर्भाधानादि वैदिक संस्कारों के वेद मन्त्रों का अर्थ सरल व सुन्दर हिन्दी भाषा में।

नवग्रहकाण्डी- नित्य पूजन विधान पद्धति। वैदिक मन्त्रों की संस्कृत टीका व हिन्दी टीका सहित।

नवग्रहजपविधि- हिन्दी टीका सहित। नवग्रहशान्ति, नवग्रहध्यान, नवग्रहस्तोत्र और गणपति मन्त्र जपविधि सहित।

नारदपञ्चरात्र- (भारद्वाज संहिता) श्री. पं. बाबूलाल शुक्ल शास्त्री एम्. ए. साहित्याचार्य - कालिदास अकादमी शोध विभागाचार्य द्वारा सम्पादित तत्त्वप्रकाशिका अभिनव हिन्दी टीका सहित।

नारायणबलि- (मूलमात्र) संस्कृत में।

नित्यकर्मपद्धति- बहुत उपयोगी छोटासा ग्रन्थ। संस्कृत में।

नित्यकर्मप्रयोगमाला - स्व. पं. चतुर्थीलालजी कृत, नित्यनियम के ६२विषयों सहित। मूलमात्र संस्कृत में।

नित्यहवनपद्धति- सोहनलाल गोयलीय कृत। हिन्दी टीका सहित।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पार्वणश्राद्धप्रयोग– कन्यागत सूर्य के अपरपक्ष में महालयश्राद्धप्रयोग। हिन्दी टीका सहित

पूजापंकजभास्कर– केवल संस्कृत में। पाँचो देवताओं के वैदिकमन्त्रों से यथोपचार पूजा प्रकरण।

प्रेतमञ्जरी– हिन्दी टीका सहित। इसमें वैतरणीदान, प्रेतदाहविधि, दशाहादि श्राद्ध, एकादशाहश्राद्ध, वृषोत्सर्ग, शय्यादानादि सपिण्डीश्राद्ध, षोडसमासिकश्राद्ध प्रयोग, त्रयोदशाहपददानादि भली प्रकार दर्शाया है।

बृहत्कर्मकाण्डसमुच्चय– पं. दिवाकर संग्रहीत। केवल संस्कृत में। इसमें शान्तिपाठ, दीप, गणपति, वरुण, वसुधारा, मातृका, नवग्रहपूजन, वाग्दान, कन्यादान, गोदान, जन्मोत्सवविधि, पुण्याहवाचन, नीराजन, नान्दीश्राद्ध, षोड़ससंस्कार, चतुर्थीकर्म, घटपद्धति आदि विषय वर्णित है।

मंगलाष्टकशारवोच्चार– विवाह में नीतियुक्त बोलने की रीति। केवल संस्कृत में।

मूलशान्ति– मूलनक्षत्र में जन्म का शान्तिप्रयोग। केवल संस्कृत में।

यज्ञोपवीतपद्धति– हिन्दी टीका सहित। इसमें यज्ञोपवित का संपूर्ण संस्कार और वेदारम्भादि विषय है।

वरदगणेशपूजा– संस्कृत में। भाद्रपद शुक्लचतुर्थी का गणेशपूजन प्रयोग।

व्रतोद्यापनप्रकाश– (मूलमात्र संस्कृत में) स्व. पं. चातुर्थीलालजी कृत। इसमें चैत्रशुक्ल प्रतिपदा से लेकर वर्षभर के सम्पूर्ण व्रतों की अत्युत्तम पद्धति है।

वास्तुप्रतिष्ठासंग्रह– (केवल संस्कृत में) पं. श्रीरामचन्द्र कृत। वास्तुविषय में अद्वितीय ग्रन्थ। वास्तुप्रतिष्ठाप्रक्रिया, वास्तुशान्तिप्रयोग, भूम्यादि पूजन, विश्वकर्मपूजन, प्रधानमूर्तिस्थापनादि, कुशकण्डिकाहवन, प्रवेशविधि, दीप, चुली, उलूखल, मुशल, सन्धानभाण्ड, जलस्थानपूजन आदि उपयोगी सभी विषय।

वास्तुशान्तिप्रयोग– (केवल संस्कृत में) अर्थात् समस्त नूतन मकानों का वैदिक मन्त्रों से शान्तिप्रयोग।

वासिष्ठीहवनपद्धति– हिन्दी टीका सहित। इसमें कलशादि स्थापन, गणपतिपूजन, पुण्याहवाचन, मातृकापूजन, नान्दीश्राद्ध, ग्रहमखादि सुगम रीति से दिये गये है।

विष्णुपूजनविधि– हिन्दी टीका सहित। विष्णुपूजा की विधि बहुत उत्तम रीति से दी गयी है।

वैवाहपद्यावली– हिन्दी टीका सहित। अर्थात् कन्यापक्ष और वरपक्ष की उत्तमोत्तम काव्य से प्रशंसा विनती में वर्णन की है।

विवाहसोपांगविधि– ''बालबोधिनी'' नामक हिन्दी टीका सहित।

सुगमविवाहपद्धति– (गङ्गाधरी) हिन्दी टीका सहित।

शान्तिप्रकाश– (मूलमात्र, संस्कृत में) स्व. पं. चतुर्थीलालजी कृत। इसमें गणपत्यादि पूजन, पुण्याहवाचन, कलस्थापनादि और विनायकादि ३० शान्तिप्रयोग तथा वास्तुशान्ति प्रयोगादि समन्त्रक है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वदेवप्रतिष्ठाप्रकाश- (केवल संस्कृत में) स्व. पं. चतुर्थीलालजी कृत इस ग्रन्थ में सम्पूर्ण देवताओं की सर्वोत्तम प्रतिष्ठाविधि और प्रतिष्ठोपयोगी अनेक प्रकार के कुण्ड, मण्डल, यन्त्र आदि के चित्र बनाने तथा रङ्ग पूरने की विधि भी है।

सकामशिवपूजनविधान- वैदिक, तांत्रिकमन्त्रों से शिवपूजन। हिन्दी टीका सहित।

स्वस्तिवाचन- (पुण्याह्वाचन) संस्कृत में। प्रायः समस्त शुभकार्यों में पढ़ा जाता है

सस्कारप्रकाश- (मूलमात्र संस्कृत में) स्व. पं. चतुर्थीलालजी कृत इस ग्रन्थ में षोड़ससंस्कार, लुप्तसंस्कारप्रायश्चित्त, व्रात्यप्रायश्चित्तप्रयोग, पुनरुपनयनाधिकारी, अङ्गबङ्गादि देशगमन, लशुनादिभक्षण, सुरापानादिप्रायश्चित्त, समुद्रयात्रा प्रायश्चित्त, कलिवर्ज्यधर्म, पुनरुपनयन प्रकार इत्यादि सभी विषय है।

सन्ध्योपासना- भाषा टीका - देवर्षि पितृतर्पण सहित।

सन्ध्योपासना- (सामवेदीय) मूल। संस्कृत में।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh